मुलतान ११८१ ई० महम्मदगोरी ने हाकम मुलतान को।

लाहौर ११८६ ई० " ने खुसरोमलिक को

आपड़ी ११९१ ई० " पृथ्वीराज से हारा

थानेसर ११९३ ई० " " को।

चँदवाड़ा ११९४ ई० " जैचन्द कन्नौज को

बठिंडा १२३९ ई० राजकीय सेना ने रज़ीया बेगम को।

देवगिरी १२९१ ई० अलाउद्दीन ने रामदेव को

गुजरात १२९७ ई० " राजा गुजरात को

चित्तौड़ १३०३ ई० अलाउद्दीन ने राना मेवाड़ को।

बठनेर १३९८ ई० तैमूर ने हाकम बठनेर को।

देहली १३९८ ई० तैमूर ने महमूद तुग़लक को।

जौनपुर १४७८ ई० बहलोल लोधी ने हाकम जौनपुर

पानीपत१म,१५२६ई० बाबर ने इब्राहीम लोधी को।

तलीकोट १५६५ ई० बीजापुर और अहमदनगर ने रामर

मुलतान ११८५ ई० महम्मदग़ोरी ने हाकम मुलतान
लाहौर ११८६ ई० „ ने ख़ुसरोमलिक
आवड़ी ११९१ ई० „ पृथ्वीराज से हा
थानेसर ११९३ ई० „ „ को
चँदवाड़ा११९४ ई० „ जैचन्द कनौजी
बठिंडा १२३९ ई० राजकीय सेना ने रज़ीया बेगम
देवगिरी १२९१ ई० अलाउद्दीन ने रामदेव को
गुजरात १२९७ ई० „ राजा गुजरात
चित्तौड़ १३०३ ई० अलाउद्दीन ने राना मेवाड़ को।
भटनेर १३९८ ई० तैमूर ने हाकम भटनेर को।
देहली १३९८ ई० तैमूर ने महमूद तुग़लक़ को।
जौनपुर १४७४ ई० बहलौल लोधी ने हाकम जौनपुर
पानीपत१म,१५२६ई० बाबर ने इब्राहीम लोधी को।
तलीकोट १५६५ ई० बीजापुरऔर अहमदनगरने राम

पंद्यूप(पंद्पू)	१८१८	प्रहा का राजा और पेमहर्स्ट	
नागपुर	१८३१	अंग्रेज़ और रागोजी का पोता	
अमृतसर	१८३१	,,	रणजीतसिंह
लाहौर	१८३४	,,	,,
लाहौर	१८४८	,,	दलीपसिंह
कायल	१८८२	,,	अबदुर्रहमान
मिसर	१८८२	,,	ख़देव मिसर

शुद्धिपत्रम्

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ
पात्र	पौत्र	६०
यह	०	८१
ग्रुरु	गुरु	८५
मुकद्दमा	मुकाबला	१०२
अहमदनग	अहमद नगर	१०८
मर्दीन	मर्दान	११३
जागृति	जाग्रति	१३३
वीराङ्गनी	वीराङ्गना	१४२
पर	में	२३२
अरक्षितं	सुरक्षितं	२३३
दिता	दियं	२३३
यो	हो	२४६
तथा	०	२४७
धीन	अधीन	२५१
सतान	सताना	२५६
हाटली	हार्टली	२७२
बने	उस	२७६
रहे	रखे	३४१
हीवर	हीवर ने	३५०
था	थे	३५०
ठामस मुनरे	टामस मुनरो	३५१
पेडम्बरा	ऐलम्बरा	३६८
अकड़	अकबर	३८६

आर्य पुस्तकालय लाहौर

इस पुस्तकालय में आर्यसमाज तथा वैदधर्मस
न्धी पुस्तक बहुत सस्ते मिलते हैं। पुस्तकालय का उ
श्य धार्मिक पुस्तकों का दफ्तखाना है।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती का जीवनचरि
उर्दू में अभी सम्पूर्ण छपा है .... मूल्य ३

सत्यार्थप्रकाश का उर्दू अनुवाद ...	१≈
संक्षिप्त इतिहास (भारत) ...	१
अर्थशास्त्र	१॥)
भारत आर्य जन्त्री तथा दर्शपत्री उर्दू-हिन्दी	॥)
आर्य डायरी उर्दू या हिन्दी	।)
हनुमान् का जीवनचरित्र	१)
प्यारी माताए	॥)
नारी देवियाँ	।=)
ऐतिहासिक दृश्य	।=)
शिवाजी	॥=)

अन्य सर्व पुस्तक इस पते से मंगावें:—

आवश्यकता न होती यदि उस में एक महान पुरुष का जन्म ५७० ई० में न होता। इस शक्ति-शाली पुरुष का नाम मुहम्मद था जिसने कि संसार के इतिहास में घोर परिवर्तन कर दिये। देश की अवनत दशा को देखकर हज़रत मुहम्मद का हृदय अति दुःखित हुआ उन्होंने उन कुरीतियों को हटाने का शिर-तोड़ यत्न किया। उन की शिक्षा थी कि इस जगत का एक नियन्ता कर्त्ता हर्त्ता ईश्वर है, केवल उसी की पूजा करनी चाहिये मूर्त्तिपूजन करना पाप है; प्रार्थना उपासना व्रत, दान करने और मद्य के त्याग से उस ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। मूर्त्तिपूजक लोग उनके शत्रु होकर मारने की ताक में रहने लगे। ६२२ ईस्वी में हज़रत साहिब को मक्के से भागकर मदीने जाना पड़ा—इस वर्ष से मुसलमानों ने अपना हिजरी नामी सम्वत् माना है। तब से उन्होंने मदीना में जाकर तलवार के बल से अपने धर्म का प्रचार करना आरम्भ किया। ६३२ ई० में हज़रत साहिब की मृत्यु हुई किन्तु लगभग सारे अरब में उन के नवीन धर्म का प्रचार हो गया था। इस धर्म का नाम इसलाम रक्खा जिसके अर्थ "शान्त होना और परमात्मा की इच्छानुसार कार्य करना है"। उस के धर्मावलम्बियों का नाम अहले इसलाम मुसलिम या मुसलमान रक्खा जिसके अर्थ श्रेष्ठ महाशय के हैं॥

२—७१२ में मुहम्मद कासिम ने-जिसके समान वीरता, बुद्धिमत्ता, अध्यक्षता, नीतिज्ञता रखने वाले संसार में कम मनुष्य मिलेंगे—बृहद् सेना सहित सिन्ध पर आक्रमण किया। उस समय के राजा दाहर ने वीरता पूर्वक युद्ध किये किन्तु जैन और बौद्धधर्म उस समय सिन्ध में प्रचलित थे; स्थान २ पर बौद्ध श्रमणों ने शासकों को आज्ञाएं दीं कि मत लड़ो, युद्धों में हिंसा होती है यह हिंसा धर्मविरुद्ध है। जब शासकों ने यह आज्ञायें न मानीं तो मुसलमानों के लिये नगर के द्वार इन श्रमणों ने खोल दिये। बहुत से देशद्रोही भी कासिम के साथ जा मिले, इस लिये सारा सिन्ध, मुलतान तथा पञ्जाब के देश कासिम ने जीत लिये। आशा से भी अधिक धन दासियां मुसलमानों को मिलीं। कासिम भारत का एक अधिक भाग जीत लेता यदि वह खलीफा के क्रोध का शिकार न होता। कहते हैं कि राजा दाहर की दो अति सुन्दरी पुत्रियां खलीफा के पास भेजी गयीं, उन्हों ने कासिम से बदला निकालने के लिये कहा कि कासिम ने हमारे स्त्री धर्म का नाश करके आप के पास भेजा है इस कारण हम आपके योग्य नहीं। निर्दोषी कासिम को गोचर्म में सीकर खलीफा के पास भेजा गया। कासिम की इस अवस्था को देख कर वीराङ्गनाओं की आत्मा शान्त हुई। अपनी लाज बचाने तथा स्व-सम्बन्धियों की मृत्यु पर [illegible] बहाने से जीने की अपेक्षा

वृत्तान्त—अफ़गानिस्तान में (१०० ई०पू०) यूची और शक जातियों ने आकर निवास किया वहां रहते हुए यह बौद्ध हो गए और भारत के रहन सहन की विधियां भी सीखीं। उन के ६० राजाओं ने लगभग ८०० ई० तक राज्य किया। तब कल्हार नामी ब्राह्मण या भट्टी राजपूत ने राज्य प्राप्त कर लिया। उसके वंशमेंसमन्द, कमाल्ह,भीम, जयपाल आनन्दपाल,त्रिलोचनपाल, भीमपाल राजाओं के नाम ज्ञात हैं। काबुल से इन राजपूतों को मुसल्मानों ने ८७० ई० के लगभग निकाल दिया किन्तु फिर भी उनके पास पञ्जाब काश्मीर और सिन्धु नदी से पेशावर तक सारा देश रहा। निदान महमूद ने १०१८ ई० में काश्मीर को छोड कर शेष देश यवन राज्य में मिला लिया॥

७—अल्पतगीन—बगदाद के खलीफों की शक्ति के घटने पर प्रान्तिक सूबेदार स्वतन्त्र होगये, ८६२ में समानियों के वंश का संस्थापक इस्माईल, खुरासान,मावरुल नहर, काबुल, अफ़गानिस्तान,कन्धार, जाबलिस्तान में स्वतन्त्र होगया। उस की चौथी पीढ़ी में बालक मंसूर बादशाह बना किन्तु ग़ज़नी का सूबेदार अल्पतगीनउस से स्वतन्त्र होगया। उसका एक दास सुबक्तगीन होनहार, बुद्धिमान, वीर और दयालु था। इन

उसे मार कर छोटे भाई महमूद ने राज्य प्राप्त किया। यह वही महमूद है जिसने भारत पर १८ बार आक्रमण करके उसके राज्यों को मूल से घर घर कैंपा दिया, जिसने अकथनीय अत्याचार आर्य्यजाति पर किया, सैकड़ों नगरों को जलाया व समतल कर दिया, लाखों हिन्दुओं को बन्दी करके लेगया और भारत को सुवर्ण भूमि से दरिद्र भूमि बना दिया। यह महमूद साहस, धीरता, दृढ़ निश्चय, लोभ और क्रूरता की मूर्ति था और भारतवर्ष में खड्ग के बल से मुसलमानी धर्म प्रचलित करना चाहता था। उस के गाज़ीपन के उत्साह की वृद्धि के लिये खलीफा ने पारितोषक तथा उपाधियां दीं। कविवर फिर्दोसी ने जिसे महमूद ने ६०००० सुवर्ण मोहरों के स्थान पर चान्दी की मोहरें देकर क्रुद्ध किया महमूद का नाम अपने शाह नाम में अमर कर दिया है। क्या हुआ यदि इस ने अपनी विजय पताका फारस खाड़ी से आराल समुद्र तक और काफ पर्वत से सतलुज तक गाड़ दी जबकि १०३० में मृत्यु शय्या पर लेटे हुए महमूद ने एक टूटी कौड़ी तक दीनों को दान न दी। लूट का सम्पूर्ण सामान अपने सामने रखवाया, एक २ सुन्दर वस्तु को देख कर हज़ार २ आं धारा प्रवाह में बहते थे, तब इन वस्तुओं और माल दृगोचर हो रही थी। फिर हृदय न छोड़ा।

र अजमेर अर्थात सारे उत्तरीय भारत के राजा और ३००००
वसर युद्ध में सम्मिलित हुए। भारत के इतिहास में ऐसा
रोचक अन्य कोई युद्ध नहीं मिलता। यह प्रथम तथा अन्तिम
अवसर था जब उत्तरीय भारत के राजाओं ने मिलकर शत्रु
का सामना किया हो वा देश निवासियों ने भी शत्रु को शत्रु
समझ कर सहायता दी हो। क्या ही हर्ष की बात है कि
भारत को गारत करने वाले महमूद के साथ लड़ने के लिये
आर्य देवियों ने अपने २ भूषण बेचकर धन दिया, निर्धनियों
ने सूत कात कात कर वा कई प्रकार से श्रम करके युद्ध के
लिये दान दिया। किन्तु शोक है कि आर्य जाति के दौर्भाग्य ने
इस समय भी पराजय दिखाई। भाग्यशाली मुसलमानों ने भागते
हुए राजपूतों का पीछा किया उनके घोड़ों की टापों से सम्पूर्ण
पंजाब कम्पित होगया, वनाग्नि के समान सारे देश को भस्म
करते हुए नगरकोट को लूटने के लिये यवनी सेना जा पहुंची।
अरक्षित दुर्ग को जीतकर ७०००००० दिर्हम सिक्के, ७००४००
मन सोना चांदी २० मन अमूल्य मणि लेकर महमूद वापिस
हुआ। ग़ज़नी में इस लूट की प्रदर्शनी कीगई। द्रष्टाओं के
हृदय में भारत को लूटने का जोश लहरें मारने लगा। भारत
घर सोने की चिड़िया है यह बात लोगों ने अपनी आंखों से
देख ली। महमूद ने लूटका कुछ सामान बांट देने से सैनि
धनके जोश को अधिक बढ़ा दिय

दी। इस घातक तथा दाहक को जगदाहक की उपाधि दी गई। तब से गौरियों ने ग़ज़नी का राज्य प्राप्त कर लिया और लाहौर में भी महमूदी वंश के नाश करने की धुन में वे लगे। ११८६ में शहाबुद्दीन महम्मद गौरी ने कपट से खुसरोमलिक को पकड़ कर परिवार सहित मरवा डाला। इस प्रकार १२वीं शताब्दी के अन्त में मुसलमानों के एक वंश से दूसरे वंश में पञ्जाब का राज्य चला गया।

मुहम्मद ग़ौरी

१३—ग़ौरी के आक्रमण—शहाबुद्दीन मुहम्मद ग़ौरी ने आठ बार भारत पर आक्रमण किये जिन में से एक बार गुजरात के वीर राजा भोलाभीम ने गौरी को पराजित किया, दूसरी बार अजमेर और देहली के राजा पृथिवी राज ने तिरौड़ी के ११९१ ई०के युद्ध में घोर रूप से पराजित किया। अन्य आक्रमणों में ग़ौरी कृत कार्य होता रहा। जिन में वह ऐसा प्रबल तूफान लाया कि भारत के सब ... सिंहासनों से उड़ गये। पुरातन इन्द्रप्रस्थ ... कि १७५० तक देश का ... में काल में कई बार

२—दास वंश का नाम तथा काम—दास वंश के दस राजाओं ने ८४ वर्ष तक राज्य किया। इस वंश का नाम दास वंश इस कारण पड़ा कि कुतुबुद्दीन तथा अन्य बादशाह आरम्भ में स्वयम् दास थे या दासों के पुत्र थे परन्तु बदले २ बादशाह बन गये। इस वंश ने अन्य प्रान्तिक मुसलमानों को दबाए रखा, राजपूतों को सिर न उठाने दिया और मुगलों के आक्रमणों को रोका—इन तीन कारणों से मुसलमानी राज्य उत्तरीय भारत में स्थिर हो गया।

३—कुतुबुद्दीन लक्षप्रद—यह बड़ा चतुर और बुद्धिमान बादशाह था। उस की वीरता, दूरदर्शिता और नीतिज्ञता उस के काम से स्पष्ट है, राज्य प्राप्त करने के पश्चात् इस ने प्रजा से अच्छा बर्ताव किया और अपनी दान शीलता के लिये शताब्दियों तक प्रसिद्ध रहा, इस का नाम हातम सानी और लक्षप्रद प्रसिद्ध हुआ। पोलो (चौगान) खेलते हुए लाहौर में घोड़े से गिर कर मर गया।

४—वीर अल्तमश—आराम बादशाह मूर्ख और आराम पसन्द होने से अपने पिता के सरदारों और अमीरों का शासन नहीं कर सकता था। कुतुब का एक दास

(४) १२२९ में प्रथम बार मुसलमानी सिक्का भारत में चलाया गया।

(५) बगदाद के खलीफ़ा ने अल्तमश का स्वतन्त्र राज्य मान लिया और इस प्रकार उस के राज्य को अधिक स्थिर कर दिया।

1236 to 1240

(५) सुलतान रज़िया

—अल्तमश का पुत्र रुकनुद्दीन बादशाह बना परन्तु ऐशो इशरत, नाच रंग, खेल तमाशे में राज्य नाश करने से बेरुकन निकला। उसे मार कर कुछ अमीरों ने रज़िया को राज्य दिया।

यह रानी राज्य कार्य्य में बड़ी निपुण थी, इस का धार्मिक, दयावीर तथा नीति कुशल स्त्री होने में सन्देह नहीं, यह मरदाना वस्त्रों में दर्बार करती थी—इन कारणों से उसे सुलतान रज़िया कहते हैं। उस ने एक गल्ती की और उसी से रज़िया पर कष्टों का पर्वत टूट पड़ा—कि एक हबशी को सब अमीरों से उच्च कर दिया। अमीर पहिले ही रुष्ट थे क्योंकि:—

(क) एक स्त्री उन पर राज्य करती थी;

(ख) उन में से किसी के साथ विवाह न करती थी;

(ग) उन के अत्याचारों को दमन करती थी;

(घ) फिर एक हबशी विदेशी को सर्वोच्च कर दिया था।

अमीरों ने विद्रोह किया। इन के साथ कई बार रज़िया

(३) उच्च और सिन्ध के मुसलमान सरदारों को परास्त किया गया।

(४) चंगेज़खान के पोते हलाकू का दूत भारत में आया, उसे बड़ी शानोशौकत से दर्बार में लाया गया ताकि देहली के राजाओं की शक्ति मुग़लों को ज्ञात हो।

(७) हत्यारा बलवन—दास वंश का सर्वोत्कृष्ट बादशाह हुआ है। इस के शासन में दास वंश शिखर पर थी। यद्यपि बलवन गुणी बादशाह था तथापि संकुचित हृदय, स्वार्थी, अत्याचारी और हत्यारा भी था।

(१) अपने सहचारी ४० दासों को मरवा डाला ताकि वह बल न पकड़ जावें और उस की न्याईं उच्च पदों पर न पहुंच सकें।

(२) हिन्दुओं को दर्बार में बड़े पद देने बन्द कर दिये।

(३) बलबन के अत्याचारों से जब गङ्गा यमुना-द्वाब और मीवात के हिन्दुओं ने विद्रोह किये तो उन्हें बल पूर्वक परास्त किया, केवल मीवात में एक लाख हिन्दुओं का घात किया गया।

(४) मुग़लों के हमलों से भागे हुए १५ देशों के बादशाह ... कवि इस के दर्बार में शरणागत हुए। उन के

दयालु होने से जलालुद्दीन राज्य विद्रोहियों और मुग़ल आक्रान्ताओं को क्षमा कर देता था, इस कारण विद्रोह अधिक हो गए और लुटेरों और घातकों को सुवर्णावसर मिल गया। उस के भतीजे अलाउद्दीन ने इस दया और प्रेम से लाभ उठा कर उसे मरवा डाला॥

घटनाएं

(१) लाहौर पर मुग़लों के धावों को हटाया; कतिपय मुग़लों को मुसल्मान बना कर देहली के समीप मुग़लपुर में बसाया।

(२) मालवा राजपूतों से लिया और उज्जैन के मन्दिरों को गिराया, परन्तु रन्थम्बोर फ़तह न कर सका।

(३) अलाउद्दीन ने पहिले बुन्देलखण्ड और भीलसा को लूटा फिर केवल ८००० सवारों समेत दक्षिण में यादव राजपूतों की प्रसिद्ध राजधानी देवगिरि को लूटने के लिये ८०० मील का दीर्घ मार्च किया। जाते हुए अलाउद्दीन को राजपूतों ने कुछ न कहा क्योंकि उस ने यह सूचना फैला दी थी कि जलालुद्दीन के हाथों से जान बचा कर दक्षिण में सिपाहियों समेत देवगिरि के राजा के पास नौकरी करने चला है। अकस्मात् विद्युत की भांति देवगिरि पर कपटी अलाउद्दीन जा चढ़ा और भेट में ६ सौ मन मोती, दो मन मल्मास, लाल, ज़मुर्रद और याक़ूत, १००० मन चांदी, ४००० अमूल्य रेशमी वस्त्र तथा अन्य अमूल्य वस्तुएं लूट में लाया। 'जलाल' मानन्द

अतिरिक्त बाकी सब बातें 'भद्रा' को ज्ञात होती रहती थीं। सब को निर्धन करने के लिये सब पदार्थों का मूल्य और किराया निश्चित कर दिया और पान लगाने तथा मद्य पीने, बनाने और बेचने वालों को घोर दण्ड दिये जाते थे। जब कैदखानों में स्थान न होता था तो कैदियों को मार डाला जाता था, ताकि प्रजा पूर्णतया काबू में रहे। ४ लाख ७५ सहस्र केवल पयादे सेना में रखे हुए थे जिन के व्यय से प्रजा अति पीड़ित हो रही थी।

(५) मुग़लों से बर्ताव—मुग़लों ने पांच बार बड़े हमले किये-यह ग्रामों और नगरों को लूटते और बालकों और स्त्रियों को उठा ले जाते थे। अलाउद्दीन ने युद्ध में पकड़े हुए मुग़लों को हाथियों के पैरों तले कुचलवाया; उन के सिरों के मीनार बनवाए, बहुतों को मुसलमान बनाया परन्तु मुग़लाबाद के मुग़लों पर अविश्वास हो जाने से उन सब को मरवा डाला, बालकों और स्त्रियों को दासत्व में बेच दिया। इन क्रूर बर्तावों के कारण १०० वर्षों तक भारत पर मुग़लों ने हमले न किये॥

(६) विजय—(१) गुजरात के स्वतन्त्र राजपूत राजाओं को (१२९६-८) फ़तह किया। कमल नयनी संसार प्रसिद्ध अति सुन्दरी रानी कमलादेवी को अपनी रानी बनाया और उस से भी अधिक सुन्दरी वास्तविक सौन्दर्य मूर्ति

कमलादेवी की पुत्री देवलदेवी को अपने पुत्र खुसरो की पत्नी बनाया। इसी हमले में हज़ार दीनारी मालिक काफ़ूर भी 'अला' के हाथ आया॥

(२) (१३००) मालवा में रनथम्भोर के अजीत दुर्ग को फ़तह किया; यहां के सहस्रों राजपूत नर नारी देश और धर्म की वेदी पर क़ुर्बान हुए॥

(३) मेवाड़ की प्रसिद्ध राजधानी चित्तौड़ पर दो वार हमला कर के उसे १३०३ में फ़तह किया-सौन्दर्य्य मूर्ति रानी पद्मनी चित्तौड़ के इसी प्रथम शाका में चिता पर जल कर परलोक सिधारी॥

(४) जैसलमेर को अत्यन्त कठोर यत्न से १३०४ में जीत लिया॥

(५) उत्तरी भारत में जब सब बड़े २ हिन्दु रजवाड़े फ़तह कर लिये तो दक्षिण के विजय का निश्चय किया; बुद्धिमान महावीर काफ़ूर को सेनापति बना कर बहुत सेना समेत भेजा। उस ने चार हमलों में देवगिरि, तलंगाना, द्वार समुद्र और रामेश्वरम तक का देश जीत लिया। १३०६ में देवगिरि को जीत लिया-राम राजा क़ैद हो कर देहली लाया परन्तु कर देने का प्रण करने के राजा को छोड़ दिया गया। १३०९ में तलंगाना पर आक्रमण किया-वरंगल को फ़तह किया और वहां के राजा प्रताप रुद्र को कर देने पर बाधित किया।

१३१० में द्वार समुद्र के बलाल राजाओं को फ़तह किया गया, १३११ में रामेश्वरम तक के सारे देश को पादाक्रान्त किया, वहां मुसलमानी विजय की स्मारक मस्जिद बनाई और असीम धन दौलत ले कर काफूर वापस आया। यद्यपि थोड़े वर्षों में यह दक्षिण के राजपूत राजा स्वतन्त्र हो गये और मुसलमानी विजय का चिन्ह न रहा तथापि उस दिन से राजपूत राज्य की कीर्ति नष्ट होती गयी और थोड़े वर्षों में ही मुसलमानों के स्थिर राज्य की नींव पड़ गई। उपरोक्त विजयों के कारण 'अला' का नाम सिकन्दर सानी भी है॥

(७) चितौड़ का विजय—उपरोक्त विजयों में चितौड़ का हमला अद्वितीय है उस का संक्षिप्त वृत्तान्त यह है: चित्तौड़ के नाबालिग़ राजा का संरक्षक भीमसी था, उस की सौन्दर्य मूर्त्ति, संसार प्रसिद्ध, पतिव्रता, धर्म्म पत्नी पद्मिनी लंका की राजकुमारी थी, पापी और कामी अलाउद्दीन ने उसे अपने महल में प्रविष्ट करना चाहा। इस कारण चित्तौड़ पर हमला किया परन्तु धर्म और देश पर जान देने वाले शूरवीर राजपूतों ने उस का खूब मुकाबला किया अन्त में यह बात ठहरी कि बादशाह शीशे में से पद्मिनी की परछाईं देखे और फिर कभी चित्तौड़ पर धावा न करे। मुट्ठी भर सिपाहियों समेत बादशाह चित्तौड़ के दुर्ग में आया और बारह शीशों में से अलाउद्दीन ने पद्मिनी की मनोहर मूर्त्ति देखी। धार्मिक

... सेना का मुकाबला करना कठिन हो गया। तब चित्तौड़ की सहस्रों महा सुन्दरी देवियों ने यवनों के हाथों से बचने, अपने पतिव्रत धर्म स्थिर रखने और अपने सम्बन्धियों का साहस बढ़ाने के लिये जोहर की रसम की, अर्थात चिता जलाकर, पवित्र अग्नि की गोद में बैठ कर स्वर्गधाम को सिधार गईं। महारानी वीराङ्गना पद्मिनी भी उन्हीं में स्वर्ग लोक को सिधारीं, सब राजपूत केसरी वस्त्रधारण कर नंगी तलवारें हाथों में लिए अपनी जान, माल, देश, धर्म के शत्रु यवनों से युद्ध करने के लिये बाहर निकल आए। प्रत्येक ने यवनों को मारते हुए आनन्द पूर्वक जान दी, जब सब महावीर युद्ध क्षेत्र में काम आचुके तो 'अल्ला' चित्तौड़ में प्रविष्ट हुआ परन्तु सारा नगर और दुर्ग चिताओं के धूएं से आच्छादित था और जिस कोमलाङ्गी की प्राप्ति के लिये इतने घोर यत्न किये थे उस की परछाईं भी उस कामी बादशाह को दिखाई न दी। तब लज्जित हो कर बादशाह वापिस हुआ और चित्तौड़ राजपूतों के कब्ज़े में रहा।

(८) अल्लाउद्दीन का अन्त—बुरे का अन्त बुरा

होता है। अपने शासन के अन्त काल में 'अल्ला' का अविश्वास और अत्याचार अधिक होगया। उस के पुत्र मद्य पीते और भोगों में लम्पट रहते थे। दो पुत्रों को उस ने कैद भी कर दिया और सारा राज्य कार्य्य काफ़ूर के हाथ में सौंप दिया।

(९) काफ़ूर—जिन२ राजपूत राजाओं को बादशाह ने फतह किया था वह सारे स्वतन्त्र हो गये, राज्य के लोभ से काफ़ूर ने अलाउद्दीन को मार डाला और स्वयम बादशाह बन गया तब काफ़ूर ने 'अल्ला' के दो पुत्रों को अन्धा कर दिया परन्तु मुबारक उस के हाथ न आया था इस कारण मुबारक के पक्ष वालों ने ६ मास में ही काफ़ूर को मार डाला और मुबारक को राज्य दिया।

(१०) नामुबारक मुबारक—मुबारक का राज्य लेना ना मुबारक (अशुभ) हुआ क्योंकि उस ने अपने छोटे भाई तथा जिन अमीरों ने उसे सिंहासन पर बिठाया था उन्हें भी मरवा डाला और अति नीच मनुष्यों को उच्च पद दे कर स्वयम् भोगों में मग्न हो गया। स्त्री वेष में अमीरों के घरों में नाच करता था, जब राज्यलक्ष्मी बहुत अपमानित हो चुकी तो गुजराती परिया खुसरो जो बादशाह होने की आशा से मुसलमान हो गया था और बदले २ मुबारक का महामन्त्री बना था वह मुबारक और राजकुमारों को मार कर स्वयम राज्य करने लगा॥

(११) खुसरो खान अदूरदर्शी—खुसरो ने राज कोष का धन उदारता से बांट कर खिलजी वंश के राजपुत्रों को घात करने का अपराध प्रजा के दिल से दूर

हो जावे। यदि मुसलमानों पर अनगिणत अत्याचार न करता तो वह हिन्दुराज्य का पुनरुधार कर लेता। ६ मास ही राज्य कर सका था कि मुलतान के हाकिम ग़यासुद्दीन तुग़लक़ ने देहली पर आक्रमण कर के खुसरो को मार डाला। देहली निवासी हिन्दुओं ने भी खुसरो को सहायता न दी क्योंकि शूद्र खुसरो को राज्य प्राप्ति में हिन्दु क्यों सहायता देते? जात पात के धन्दों में पड़े, देशहितैषता से विमुख, धर्म के नाम मात्र के पुजारी हिन्दुओं ने मूर्खता से ऐसा सुवर्ण अवसर खो दिया और शताब्दियों तक यवनी अत्याचारों से तप्त रहे॥

४ अध्याय

तुग़लक वंश (१३२०—१४१२)

१—ग़यासुद्दीन	बलबन का तुर्कीदास	१३२०
२—मुहम्मदशाह	१—का पुत्र	१३२५
३—फ़िरोज़शाह	२—का भतीजा	१३५१
४—ग़यासुद्दीन	३—का पोता	१३८८
५—अब्बुवकर	३—का पोता	१३८९
६—मुहम्मदशाह	३—का कनिष्ठ पुत्र	१३९०
७—हमायूंखान	६—का पुत्र	१३९६
८—नसरतशाह	३—का पोता	१४००
९—महमूदशाह	६—का पुत्र	,,

(२) ग़यासुद्दीन—यह बादशाह बलबन के एक तुर्की दास और हिन्दु माता का पुत्र था, क्योंकि ख़िलजी वंश का नाम लेवा और पानी देवा कोई पुरुष न रहा था, इस कारण अमीरों ने ग़यासुद्दीन को राज्य दिया। इस ने दया पूर्वक बुद्धिमता से प्रबन्ध किया, वाणिज्य व्यापार को उन्नति दी, विद्वानों को दर्बार में सम्मान दिया और तंग प्रजा को शान्त करने का बहुत यत्न किया। देहली के हिन्दुओं के भय से देहली से ४ मील पर तुग़लक़ाबाद नामी नया नगर बसाया जो अब तक प्रसिद्ध है।

१-इस के पुत्र जूनाख़ान (मुहम्मदशाह) ने दक्षिण के एक शक्तिशाली राज्य-वरंगल पर हमला किया। किन्तु पराजित हो कर वापिस आया; दूसरी बार उस सारे देश का नाश किया। वहां के राजा रुद्रदेव को कैद कर देहली भेजा तथा रुपये बहुत सी लूट की सामग्री लाया।

२-फिर विदर्भ (बेदर) के राज्य को भी फ़तह किया।

३-बङ्गाल में बलबन के पुत्र बुग़राख़ान का एक वंशज स्वतन्त्र राज्य कर रहा था, उसे ग़यासुद्दीन ने फ़तह किया।

४-मुअबरीन (दाबल) और तिलिंगा (तिलंग) के राजाओं को परास्त किया, परन्तु जब इस विजय से बादशाह दक्षिण से आ रहा था, तब विजय की खुशी में पुत्र मुहम्मद ने इस के लिए एक

लकड़ी के भवन में दावत दी, दुर्भाग्य वशात् उसी में दब कर ग़यासुद्दीन मर गया।

(३) रक्तप्रिय मुहम्मदशाह—यह बादशाह परस्पर अत्यन्त विरोधी गुणों का समुद्र था, अपने समय का अति पठित बादशाह था; यूनानी दर्शन शास्त्र, वैद्यक तथा ज्योतिष में दक्ष था और उस के निर्भय वीर योद्धा होने में भी सन्देह नहीं। परन्तु साथ ही पागल, अन्ध-विश्वासी, अत्याचारी, क्रूर, हठी, अदृढ़-निश्चयी, गर्वी भी था। बादशाह के इन अवगुणों के कारण भारत भूमि पर जो २ आपत्तियां पड़ीं उन का वर्णन करना असम्भव है, तथापि उन के कतिपय उदाहरण यह हैं:—

१-मुग़लों ने हमला किया, युद्ध करने की अपेक्षा उन्हें असीम धन दे कर वापिस भेजा—इस पर मुग़लों का साहस बढ़ गया और वह बारम्बार आक्रमणों पर तुले।

२-कृषकों पर लगान बहुत बढ़ा दिया और जब यह बृहत् लगान किसान न दे सके तो उन्हें घोर दण्ड दिए, किसान हरी भरी भूमियां छोड़ कर वनों में भाग गये।

३-उन्हें वहाँ दण्ड देने के लिए सेना भेजी जिस ने उन मनुष्यों को पशुओं की भान्ति शिकार कर के मारा।

४-कन्नौज पर अकस्मात् आ पड़ा और एक लाख हिन्दुओं को मार डाला।

५–इन बातों से देश में अकाल पडा और कोष खाली हो गया।

६–देश रक्षा तो हो नहीं सकी थी, तथापि एक लाख सेना चीन को फतह करने तथा वहां से धन लाने के लिये भेजी। बहुत सी सेना तो हिमालय के पर्वतों में चीनियों ने मार डाली। बचे हुए जो सैनिक वापिस आए उन्हें इस खूनी बादशाह ने मरवा डाला।

७–जैसे कि यह पराजय पर्याप्त न थी एक लाख सेना ईरान को जीत कर धन लाने के लिए भेजी। उसे वेतन न मिलने के कारण वह पंजाब से आगे न बढ़ी और प्रजा को दिल खोल कर लूटने लगी।

-देश में सोना चान्दी न रहने से उस ने तांबे के सिक्के चला कर उन का मूल्य चान्दी के सिक्के के बराबर रक्खा। व्यापारियों ने इन्हें लेने से इन्कार किया, व्यापार बन्द होगया। देश में दरिद्रता ने खूब घर बसाया।

-देहली के निवासियों को देवगिरी में जा कर बसने की दो बार आज्ञा दी उस का नाम दौलताबाद रक्खा। इस नाम परिवर्तन से ही वह नगर धन का घर बन जाता था! वहां जाने के लिये न कोई सड़क, न खाने पीने की सामग्री, न सामान लादने के लिए पशु, न वहां रहने के लिये घर, रास्ता रेगिस्तान और ऊंचे पर्वतों का लम्बा—कम सड़कों

प्राणी रास्ते में मर गए बाकी जो बचे उन्हें देहली में वापिस जाने की आज्ञा दी। सिर पर भूत चढ़े तो ऐसा हो।
–पागलपन भी असीम था—दक्षिण की विजय में एक दांत टूट गया, उसे भीरनामी स्थान पर बड़े समारोह के साथ दफ़न कराया और उस के ऊपर आलीशान भवन बनवाया जो चिर काल तक उस की मूर्खता का स्मारक रहा। इस प्रकार यह बादशाह ज़ुहाक, नीरो, आलउद्दीन की क्रूरता में कोसों पीछे छोड़ता है और मूर्खता में नीरो से बढ़ कर है।

(४) विद्रोह।

प्रान्तों के हाकिमों और राजपूत राजाओं ने इस मूर्खता या अराजकता को देख कर स्वतन्त्रता धारण की।
–१३३६ में विजय नगर की रियासत वरंगल के राजवंश ने कायम की।
–१३४० में बंगाल का मुसलमान हाकिम स्वतन्त्र हो गया।
–१३४७ में हसन गंगू ने दक्षिण में बाह्मणी रियास्त की नीव डाली।
–१३५० में गुजरात का पठान हाकिम स्वतन्त्र हो गया।
–राजपूताना के राजे तो स्वतन्त्र थे ही॥

(५) शान्तिप्रिय फ़ीरोज़शाह।

जो हिन्दु मुसलमान होना अंस्वीकार करता था उसे घोर दण्ड दिया जाता था।

४-जब बादशाह को यह सूचना मिली कि दिल्ली में मुसलमानों को हिन्दु बनाया जाता है तो हिन्दु बनाने वाले ब्राह्मण को चिता पर जीवित जला दिया गया।

५-अशोक की दो लाटें मेरठ में तथा यमुना के मुख पर लगी थीं, हिन्दुओं का विश्वास था कि इन की नींव भूमि के गर्भ में है। उन्हें वहां से उखड़वा कर देहली में लाया।

-हिन्दुओं की बड़ी दुर्गति की-वह घन्टी शंख बजा कर और उच्च स्वर से मन्त्र उच्चारण कर के इष्ट देवों की पूजा नहीं कर सकते थे। आंग्ल राज्य का मुसलमानी राज्य से मुकाबला कर के देखो कि कैसे सुख हमें मिले हुए हैं॥

(७) दश वर्षीय अराजकता।

फ़िरोज़शाह के पश्चात् १० वर्षों तक राज्य लक्ष्मी पाद कन्दुक की भांति ठोकरें खाती फिरी। चार अयोग्य मूर्ख बादशाहों ने इस समय में दिल्ली के सिंहासन को अपवित्र किया। देहली के बाज़ारों और गली कूचों में इन बादशाहों के तरफ़दारों के युद्ध होते थे। ऐसी हीन अवस्था को देख कर जौनपुर, [illegible], काल्पी, बियाना, खानदेश, मालवा, मुल्तान, सिन्ध स्वतन्त्र हो गये और आंशिक

२
३–जो हिन्दु मुसलमान होना अस्वीकार करता था उसे घोर दण्ड दिया जाता था।
।–जब बादशाह को यह सूचना मिली कि दिल्ली में मुसलमानों को हिन्दु बनाया जाता है तो हिन्दु बनाने वाले ब्राह्मण को चिता पर जीवित जला दिया गया।
अशोक की दो लाटें मेरठ में तथा यमुना के मुरा पर लगी थीं, हिन्दुओं का विश्वास था कि इन की नीव भूमि के गर्भ में है। उन्हें वहां से उखड़वा कर देहली में लाया।
६–हिन्दुओं की बड़ी दुर्गति की–वह घन्टी शंख बजा कर और उच्च स्वर से मन्त्र उच्चारण कर के इष्ट देवों की पूजा नहीं कर सकते थे। आंगल राज्य का मुसलमानी राज्य से मुकाबला कर के देखो कि कैसे सुख हमें मिले हुए हैं॥

(७) दश वर्षीय अराजकता।

फ़िरोज़शाह के पश्चात् १० वर्षों तक राज्य लक्ष्मी प कन्दुक की न्याईं ठोकरें खाती फिरी। चार अयोग्य बादशाहों ने इस समय में दिल्ली के सिंहासन को अप किया। देहली के बाज़ारों और गली कूचों में इन बादशा पक्षपातियों के युद्ध होते थे। ऐसी क्षीण अवस्था कर जौनपुर, महोबा, काल्पी, बियाना, सामानह, ... ; और ख़ान्देश, मुलतान, सिन्ध

रक्त की नदियां यहा देता था, इस की सर्व भक्षक सेना ने लहलहाते खेतों का नाश कर दिया और जीते जागते हर्षयुक्त नगरों को श्मशान बना दिया। रक्त की धारा इस के कदमों के पीछे २ बहती गई जैसे पुरातन काल में महाराज भगीरथ शान्तिदायक, शीतल, पवित्र, रोगनाशक, भगवती भागीरथी को अपने पीछे २ ले गये थे, वैसे रक्त का प्रेमी, सभ्यता का द्वेषी, नरघातक तैमूर, तबाही, बरबादी, अराजकता, दरिद्रता, अत्याचार, दुराचार, घात की सेनायें साथ ले चला। रुद्र रूप धारण कर निरपराध आर्य नरनारी के जान, माल, लाज देश, धर्म की खातिर यहे पवित्र रक्त की नदी साथ ले गया। इस नदी का मार्ग मुलतान, तुलम्बा, भटनीर, देहली, मेरठ, हरिद्वार, कांगड़ा, नगरकोट, जम्मू और काश्मीर में से निकला। सारे भारत में हाहाकार मच गया और जो विपत्तियां उस समय भारत पर आईं उन को लिखने में लेखनी अशक्त है। देहली के समीप पहुंच कर युद्ध करने से पूर्व पकड़े हुवे १ लक्ष हिन्दुओं का घात कर दिया, फिर युद्ध जीतने पर यद्यपि देहली नगर निवासियों को जान बख्शी का प्रण दिया था तो भी उसने पांच दिन तक लूटा और यहां के निवासियों को बड़े आनन्द से घात कराता रहा। असीम धन दौलत लूटा और इस का एक २ सैनिक १५० हिन्दु दास तथा सैनिकों के पुत्र भी बीस २ दास अपने साथ ले गये ॥

(११) सैय्यद वंश १४१४–१४५०

१-खिज़र खान	प्रथम बादशाह	१४१४
२-मुबारक शाह	१-का पुत्र	१४२१
३-मुहम्मद शाह	१-के दूसरे पुत्र का पुत्र	१४३४
४-अल्लाउद्दीन	३-का पुत्र	१४४४

(१२) सैय्यद

सैयद उन मुसलमानों को कहते हैं जो मुहम्मद साहब की पुत्री बीबी फ़ातिमा की सन्तान में से हैं यह मुसलमानों के पुरोहित होते हैं। सैय्यदों का राज्य देहली के आस पास के इलाके में ही रहा-उन्हों ने राज्य विस्तार का यत्न किया परन्तु निष्फल गया। यह बादशाह, दयालु, कमज़ोर, केवल नाम मात्र के बादशाह थे इस कारण कोई विशेष बात उन के राज्य की नहीं। अन्तिम बादशाह अलाउद्दीन को मुलतान के हाकिम बहलोल लोधी ने राज्य से उतार कर स्वयं राज्य प्राप्त किया॥

(१३) लोधी वंश १४५०–१५२५।

बहलोल १४५०–८८। सिकन्दर १४८८–१५१७। इब्राहीम

-सहस्रों मूर्तियां तुड़वाईं और मन्दिरों के मसाले से मस्जिदें बनवाईं।

-श्रीकृष्ण के जन्म स्थान मथुरा से यमुना नदी के तट पर मस्जिद बनवाई। हिन्दुओं को यमुना स्नान से बन्द किया और वहां नापितों को क्षौर करने से रोका।

-बुधन नामी ब्राह्मण जो यह प्रचार करता था कि सब मतमतान्तर वाले जगत्पिता परमदयालु ईश्वर के समान पुत्र हैं उसे पकड़वा कर मुसलमान बनाना चाहा किन्तु वीर ने धर्म के लिये चिता पर सीस दे दिया, अपना धर्म न छोड़ा। इन अत्याचारों से हिन्दु भड़क उठे, राजपूत-शिरोमणि अति वीर राना **सांगा** ने हिन्दु राज्य विस्तार का यत्न किया॥

(१४) इब्राहिमशाह—यह अपने पिता की भान्ति बड़ा क्रूर, अविश्वासी राजा था। मन्त्रियों को एक २ कर के मरवा डाला नीच पुरुषों को ही मन्त्री पद दिये। प्रान्तिक हाकिम विद्रोही हुए। कोरा, बिहार, पंजाब स्वतन्त्र हो गये; पंजाब के लोधी हाकिम इब्राहीम के छोटे भ्राता दौलतखान और राना सांगा ने काबुल के मुगल हाकिम बाबर को भारत का विजय करने के लिये बुलाया, बाबर ने पांच बार आक्रमण किये प्रत्येक आक्रमण में भारत का कुछ भाग अपने शासनाधीन कर लिया। निदान १५२६ में पानीपत के युद्ध में इब्राहीम को पराजित कर के दिल्ली का बादशाह बना॥

२-सहस्रों मूर्तियां तुड़वाई और मन्दिरों के मसाले से मस्जिदें बनवाई।

३-श्रीकृष्ण के जन्म स्थान मथुरा में यमुना नदी के तट पर मस्जिद बनवाई। हिन्दुओं को यमुना स्नान से बन्द किया और वहां नापितों को क्षौर करने से रोका।

४-बुधन नामी ब्राह्मण जो यह प्रचार करता था कि सब मतमतान्तर वाले जगत्पिता परमदयालु ईश्वर के समान पुत्र हैं उसे पकड़वा कर मुसलमान बनाना चाहा किन्तु वीर ने धर्म के लिये चिता पर सीस दे दिया, अपना धर्म न छोड़ा। इन अत्याचारों से हिन्दु भड़क उठे, राजपूत-शिरोमणि अति वीर राना सांगा ने हिन्दु राज्य विस्तार का यत्न किया॥

(१४) इब्राहिमशाह—यह अपने पिता की भान्ति बड़ा क्रूर, अविश्वासी राजा था। मन्त्रियों को एक २ कर के मरवा डाला नीच पुरुषों को ही मन्त्री पद दिये। प्रान्तिक हाकिम विद्रोही हुए। कोरा, बिहार, पंजाब स्वतन्त्र हो गये; पंजाब के लोधी हाकिम इब्राहीम के छोटे भ्राता दौलतखान और राना सांगा ने काबुल के मुग़ल हाकिम बाबर

का विजय करने के लिये ...

किये प्रत्येक आक्रमण में

छीन कर लिया।

को परास्त कर के

महम्मद तुग़लक ने सिन्ध को जीतना चाहा परन्तु वह कृतकार्य्य नहीं हुआ।

(ख) १३५१ से १५२० तक साम्मह नामी देशी वंश राज्य करता रहा, जिन के सुलतानों का नाम जाम होता था, इन में कोई प्रसिद्ध बादशाह नहीं हुआ।

(ग) १५२० में चंगेज़ की १९ वीं पीढ़ी में उत्पन्न शाह बेग मुग़ल ने सिन्ध का राज्य प्राप्त किया जिस के पुत्र के पश्चात ईसाख़ान मुग़ल तर्खान ने शासन किया।

(घ) अन्त में इस तर्खान वंश को १५९२ में अकबर ने जीत कर अपने आधीन कर लिया।

(५) गुजरात (१३९४–१५७२)

गुजरात भारत का एक अधिकतम उपजाऊ प्रान्त है जिसे पहिली बार मूर्त्ति खण्डक महमूद ने जीता। किन्तु ११९६ तक यह देश निरन्तर राजपूतों के आधीन रहा ज[illegible] कि कुतुबुद्दीन ने इसे अपने आधीन किया। परन्तु अभी कु[illegible] काल तक ही यवनी राज्य दृढ़ हुआ था कि राजपूतों ने वि[illegible] बल पकड़ लिया। पुनः १२९८ में अलाउद्दीन ने इसे स्थाई[illegible] कर लिया और रूपवती रानी क[illegible]देवी को अपने [illegible]

हमला किया यह आक्रमण चित्तौड़ का दूसरा शाका कहलाता है। बहादुर शाह वस्तुतः बहादुर था। इस ने ख़ानदेश और बरार का आधिपत्य प्राप्त कर लिया था और राणा सांगा की सहायता से मालवा भी गुजरात के साथ मिला लिया था। इस आक्रमण के समय राणी कर्णावती ने रक्षा बन्धन भेज कर हिमायूं को अपना धर्म भाई बना कर सहायता मांगी परन्तु मुग़ल बादशाह देर से पहुंचा, बहादुर शाह की तोपों और बन्दूकों ने चित्तौड़ का काम तमाम कर दिया था। राणी सहित १३००० वीराङ्गनाओं ने अपने धर्म, देश तथा लाज के रक्षार्थ जीवितावस्था में ही चिता पर जलना स्वीकार किया और ३२००० वीरवर राजपूत परलोकवासी हुए। इस प्रकार राजपूत मुज़फ्फर शाह के वंशज बहादुर शाह ने राजपूतों के विरुद्ध अपनी बहादुरी दिखाई।

इसी बहादुर को हिमायूं ने स्थान २ से निकाल कर उस क मालवा तथा गुजरात देश स्वाधीन कर लिये (अ०५) परन्तु बहादुर ने पुनः राज्य प्राप्त कर लिया। ४० वर्षों तक उस की सन्तान परस्पर लड़ती रही और अन्त में अकबर ने १५७२ में गुजरात को आधीन कर लिया।

(६) मालवा (१३०५–१५३५)

(क) मुसल्मानों ने इस राज्य को राजपूतों से पूर्णतया

(घ) १५३१ में बहादुर शाह ने तथा १५३५ में हिमायूं ने मालवा स्वाधीन किया। फिर पठान सूबेदार मल्लू खान ने १० वर्ष तक स्वतन्त्र राज्य किया। शेर शाह ने उसे निकाल कर शुजायाल सूरी को सूबेदार बनाया, उस का पुत्र बाज़ बहादुर बहुत प्रसिद्ध है, रूपमती के साथ उस के प्रेम की कविताएं अब तक प्रसिद्ध हैं।

(७) राजपूताना।

(१) इस में मेवाड़, मारवाड़, अम्बर, बीकानेर, बून्दी, कोटह के रजवाड़े प्रसिद्ध रहे हैं, जिन में से प्रथम तीन और उन में से भी मेवाड़ सुविख्यात है। मेवाड़ के प्रसिद्ध राणा गुह, बप्पा रावल, खुमाण, समर सिंह, भीम सिंह, हमीर, लाखा, कुम्भ, सांगा, प्रताप और उदय सिंह हुए हैं। पहिले तीन राणाओं का वर्णन हो चुका है।

(२) शिशोदिया कुलोत्पन्न महा पराक्रमी समर सिंह पृथ्वी राज के साथ थानेश्वर के संग्राम में मारा गया। रूपवती पद्मिनी के पति भीमसिंह का वर्णन हो चुका है।

सम्मान के साथ छोड़ दिया गया। राजपूतों की उदारता तथा अदूरदर्शिता का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है। यह राणा तथा उस की भारत प्रसिद्ध धर्म पत्नी **मीरां बाई** दोनों ही कवित्व शक्ति में बड़े प्रवीण थे और कृष्णोपासिका मीरां बाई तो कविता करने में परम प्रवीण थी। अब तक उस के भजन राजपूताना में आनन्द से सुने जाते हैं॥

(८) मारवाड़ (जोधपुर)

को जयचन्द्र के पुत्र **शिवजी** ने बसाया था, उस मरुस्थल में रहते हुए राजपूतों को देहली के मुसलमान राजाओं ने तङ्ग न किया इस कारण **राठौर** वंश की स्थिति रह सकी। **राणा चौंद** ने १३८१ में मन्दोर नगर में अपनी राजधानी बसा कर राज्य की शक्ति बढ़ा दी। १४ वीं पीढ़ी (१४५५) में **जोधा** नामी राजा परम प्रताप शाली हुआ, उस ने आधुनिक **जोधपुर** को बसाया। इन राजाओं की सन्तानें बहुत होती थीं। जिसे पैत्रिक राज्य मिलता था उसे मातृभूमि में रहना ही पड़ता था। शेष भाई देश-देशान्तर को जीत कर स्वकुल के गौरव को बढ़ाते थे,

अकबर ने १५६१ में आक्रमण कर के इस रजवाड़े की प्रभुत्व शक्ति को कम कर दिया। इस का ज्येष्ठ पुत्र उदय सिंह "मोटा राजा" अकबर के दर्बार में अमीर बनाया गया। शोक है कि बूढ़े माल देव को प्रताप की सहायता न मिली। यदि यह दोनों राजा मिल कर अकबर का मुकाबला करते तो राजपूतों की अधोगति न होती। 'मोटा राजा' ने अपनी भगिनी का विवाह अकबर से कर दिया। इस के १४ पुत्र थे जिन्हों ने नवीन राज्यों के बसाने में बड़ा भाग लिया, अब से यद्यपि शाही बेड़ा के साथ सम्बन्ध हो जाने के कारण उन की शक्ति बढ़ गई तथापि मारवाड़ की स्वतन्त्रता नष्ट हो गई—यहां के राजा गुजरात और दक्षिण की सूबेदारियों पर नियत किये जाते रहे। औरङ्गज़ेब के समय इसी जोधपुर का प्रसिद्ध राजा यशवन्तसिंह था।

(९) अम्बर (जयपुर)

दुल्हाराय ने धून्दर का नया राज्य ८६७ में स्थापि किया। असभ्य मीनों को शनैः २ जीत कर राज्य वृद्धि क कुच्छ वर्षों के पश्चात् अम्बर का राज्य मिला लिया। पृथि राज ने स्वभगिनी का विवाह यहां के महावीर राना पुजन के साथ किया। शनैः २ इस राज्य की। जोधपुर के समान वृद्धि होती गई। बहारमल (विहारीमल १५४८-७४) अकबर की आधीनता स्वीकार की, उस के पुत्र भगवान दास तथा पात्र मानसिंह ने अकबर के समय में यश यश प्राप्त किया। भगवानदास की पुत्री के साथ कुमार सलीम का विवाह किया गया जिस से खुसरो उत्पन्न हुआ। औरङ्गज़ेब के समय में अति प्रसिद्ध मानसिंह का प्रपौत्र जयसिंह (मिरज़ा राजा) शिवाजी महरट्टा को देहली लाया और दारा के विरुद्ध औरङ्गज़ेब की बहुत सहायता देता रहा। महम्मदशाह के समय में सवाए जयसिंह जी अति प्रसिद्ध हुए-इन्हों ने प्रसिद्ध जयपुर का नगर बसाया और शिल्प तथा ज्योतिष में अपना नाम अमर कर दिया॥

तक १८ बादशाहों ने राज्य किया जब यह रियासत पांच भागों में विभक्त हो गई। बड़ी विचित्र घटना है कि उसी वर्ष ही उत्तरीय भारत में पठानी राज्य नष्ट होकर मुग़लों के स्वाधीन में चला गया।

ब्राह्मणी वंश में फ़ीरोज़शाह और अहमदशाह परम पराक्रमी सुल्तान हुए। उन के समय में रियासत का बड़ा विस्तार हुआ, विजय नगर के राजा को पराजित किया तथा तिलंगाना, अहमद नगर, बेदर (विदर्भ) के इलाके राज्य में मिलाये गये॥

१४३७-६१ तक के अन्तर में क्षीण सुल्तानों का राज्य होने से ब्राह्मणी रियासत का गौरव घट गया और यह शीघ्र नष्ट हो जाता यदि महमूद गावन जैसा अद्भुत बुद्धिमान् नीतिज्ञ और शक्तिशाली महा पुरुष राज्य मन्त्री न होता। इस ने तलंगाना को सम्पूर्णतया आधीन किया, कोङ्कण तथा उत्तरीय सरकार का देश मिला लिया। शक्तिशाली सरदारों की शक्ति को कम कर के बादशाह की शक्ति बढ़ाई और प्रजा को सुख तथा शान्ति दी, किन्तु स्वार्थी सरदारों ने उसे मरवा डाला। इस महा पुरुष की मृत्यु के साथ २ राज्य भी छिन्न भिन्न हो गया और पांच सरदारों ने स्वतन्त्र राज्यों की स्थापना इस प्रकार की :—

रियासत का नाम	राजधानी	प्रवर्त्तक का नाम
— आदिल शाही १४९०-१६८७	बीजापुर	यूसफ़ आदिल शाह
२— कुतुब शाही १५१२-१६८६	ईलचपुर	कुली कुतबुल मलिक
३— निज़ाम शाही १४९०-१६३७	अहमद नगर	निज़ामुल्मालिक बहरी एक ब्राह्मण महामन्त्री का पुत्र था जो मुसल्मान हो गया था।
४— इमाद शाही १४८४-१५७२	गोलकंडा	इमादुल मलिक हिन्दू राजकुमार से मुसल्मान हो गया था।
५— बरीद शाही १४९२-१६०९	बेदर (विदर्भ)	कासिम बरीद

(११) विजय नगर (१३३६–१५६५)

मलिक काफूर तथा महम्मद तुगलक के आक्रमणों से तंग आकर वरंगल के राज कुमार बुकाराय ने १३३६ में विजय नगर का राज्य तुंग भद्रा पर स्थापित किया। यह राज्य अति प्राचीन प्रतीत होता है। इस का पूर्व-नाम विद्या नगर था नवीन वंश की संस्थापना से विजय नगर नाम पड़ा। इसी प्रथम राज्य का महामन्त्री विशाल बुद्धि, पौराणिक धर्म्मोद्धारक, संसार प्रसिद्ध सायनाचार्य्य था जिस ने वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों का भाष्य किया है। महाराज हरि हर तथा कृष्णदेव राय के समय में इस राज्य का विस्तार तुंगभद्रा से कन्या कुमारी तक था और लङ्का तथा जावादि द्वीपों का भी आधिपत्य प्राप्त था। विजय नगर के महाराजों के ब्राह्मणी रियासत के साथ सदा युद्ध होते रहते थे, लक्षों हिन्दू और मुसल्मानों का घात होता था, एक वार तो महाराज देव राय को स्वपुत्री भी अल्लाउद्दीन ब्राह्मणी के साथ विवाहित करनी पड़ी। १५३० के लगभग से राजाओं के बालक होने के कारण राज्य क्षीण होने लगा। मूर्ख महाराज निरमल राव और मन्त्री राम राय में विरोध हो गया। सब सरदार भी महाराज से विमुख हो गये इस पर राम

अध्याय ६

मुग़लराज्य की वृद्धि

(१) बाबर कलन्दर (१५२५–३०)

भारत में मुग़ल राज्य के संस्थापक बाबर की रगों में एशिया के सर्व भक्षक दो विजेताओं–तैमूर और चंगेज़ का रक्त बह रहा था क्योंकि उस का पिता तैमूर वंशज और माता चंगेज़ वंशज थी। बाबर में मंगोलों की शक्ति और तुर्कों की बुद्धिमत्ता तथा साहस कूट २ कर भरे हुवे थे, बाबर का आचार बड़ा आनन्ददायक है; जहां वह अति शूरवीर, अद्भुत घुड़सवार, विचित्र तैराक, महाबली, युद्ध विद्या में कुशल और शत्रु से निर्दयता करने वाला था वहां फूलों और पत्तों से प्रेम, हरे भरे सुन्दर गीतों से आनन्द लेने की शक्ति रखने वाला और प्राकृतिक पदार्थों से हर्ष अनुभव करने वाला था। उस की मिलनसारी, उस का प्रेम तथा दया से पूरित हृदय, सदा आनन्द में रहना, आपत्ति के समय में धैर्य और [illegible] को न त्यागना, उदासीन न होना, कामचारों की पूर्ण आज्ञा करनी और मद्य में सब

में इब्राहीम के पास १००००० सैनिक और एक सौ हाथी थे। बाबर के पास केवल १२००० सैनिक परन्तु बहुत सी तोपें और बन्दूकें थीं। जहां इब्राहीम स्वयम् नवयुवक और युद्ध में अकुशल था और उस के सिपाही भोगी और कामी होने से क्षीण थे वहां दूसरी ओर बाबर उस समय का अपूर्व योद्धा और सेनापति था और उस के सैनिक भी वीर योद्धा थे, फिर उन्हें तोपों और बन्दूकों की सहायता थी जो पठानों के पास न थीं। युद्ध के समय इब्राहीम के सिपाही घबरा गये और जब बाबर की सेना ने पार्श्वों और आगे पीछे से हमला किया तो इब्राहीम और उस के ४०००० सिपाही मारे गए बाकी जान बचा कर भागते हुए। इस प्रकार पानीपत का युद्ध जीत कर बाबर ने देहली और आगरा पर अधिकार कर लिया। परन्तु भारत का राज्य मिलना सुगम न था। क्योंकि अफ़गानों के पास पूर्वीय भारत और राजपूतों के पास मध्य भारत था। बाबर के पुत्र हिमायूं ने जौनपुर और फिर बाबर ने १५२९ में बिहार [illegible] पर लिये और बंगाल के स्वतन्त्र राजा से संधि कर ली। इस पर छोटे २ पठान अमीरों ने भी अधीनता स्वीकार की। इस प्रकार पंजाब और मध्य भारत का देश बाबर के हाथ में

१५३० में वह परलोक सिधारा और इस का शरीर काबुल में एक उत्तम मक़बरा बना कर गाड़ा गया। अब तक लोग उस की यात्रा करने और उस के नाम को अमर रखने के लिये जाते हैं॥

हुमायूं (१५३०–१५५६)

(७) हुमायूं अभाग्यवान्।

बाबर के पश्चात् हुमायूं राजगद्दी पर बैठा। वह पिता की भान्ति बड़ा सुहृदय, दयालु, प्रेमी, हँस मुख था, वीरता और साहस में भी कम न था। बाबर की भान्ति इस ने सहस्रों दुःख उठाये; राज्य प्राप्त किये और खोये तथा सारा जीवन बे आरामी तथा भ्रमण में व्यतीत किया।

पराजय के कारण।

(१) पर बाबर के समान हुमायूं में फुर्ती और चालाकी न थी, स्वभाव में दृढ़ता का लेश मात्र न था। यह अवगुण अति भोग तथा अफ़ीम खाने से बढ़ गया था। शत्रुओं को दमन करने के लिये कभी पूरा यत्न न करता था। एक को विजय करते हुये छोड़ कर दूसरे को जीतने जाता था। आगे दौड़ और पीछे चौड़ होती रहती थी। आश्चर्य है कि ऐसी दशा में भी बाबर के समय के कुछ वीर, धीर सैनिक उस के पास रह गये थे।

(२) भाइयों के साथ इस ने उत्तम बर्ताव किया परन्तु इन्हों

ने भलाई के बदले हम से बुराई की। कामरान को काबुल और पञ्जाब का स्वतन्त्र राज्य मूर्खता, उदारता या चूर वीरता में दे दिया और इसी एक कर्म से वीर सिपाहियों की खान खो दी और अपने नवीन राज्य पर कुल्हाड़ी लगाई क्योंकि कामरान ने कोई नया सैनिक हुमायूं के पास न जाने दिया।

(३) बाबर के वीर अनुभवी सैनिक और सरदार बहुत से मर चुके थे जो बचे थे उन्हें नवीन राज्य के भोगों ने भोग कर लिया था। अतः वह हीन शक्ति हो गये थे। यही कारण हैं कि हुमायूं को बारंबार परास्त होना पड़ा॥

(८) हुमायूं के अफ़गानों से युद्ध।

महावीर बाबर अपने चार वर्ष के अल्प राज्य में अफ़गानों को न दबा सका था। उस की सूचना पाकर अफ़गान बादशाहों ने युद्ध की तैयारियां कीं।

गुजरात के बादशाह बहादुरशाह से हुमायूँ को प्रथम लड़ना पड़ा। सौभाग्य से उसे शीघ्र परास्त कर लिया और उस का ऐसा दृढ़ पीछा किया कि वह दीव बन्दर के पुर्तगालियों की शरण में गया। इस युद्ध में हुमायूँ ने अद्भुत वीरता का दृश्य दिखाया। गुजरात के अजीत पहाड़ी दुर्ग चम्पानीर की दीवारों पर ३०० अनुभवी तथा महावीर योधाओं के साथ एक रात्री लोहे की

मेखों की सीढ़ी बना कर चढ़ गया और उसे आन की आन में जीत लिया। यहां से मालवा पर धावा कर उस पर स्वाधिकार जमाया। यह दोनों विजय क्षणिक थे क्योंकि हुमायूँ के जाने पर इन दोनों देशों में अफ़ग़ानों ने फिर से देश अपने अधिकार में कर लिया।

हुमायूँ तथा शेर खां।

जब हुमायूँ गुजरात तथा मालवा के विजय में मग्न था एक वीर अफ़ग़ान शेर खां भारत के पूर्व में दिन दुगना रात चौगुना वैभव प्राप्त कर रहा था उस ने बिहार चुनार (रुहतस्) को जीत कर बङ्गाल पर हाथ मारा और उन्हें शीघ्र स्वाधीन कर लिया। इस बढ़ती शक्ति को रोकने के लिये हुमायूँ बङ्गाल की ओर गया चुनार का जीत लिया। फिर भाई हिन्दाल तथा अस्करी को साथ ले बहुत सेना समेत बङ्गाल पर हुमायूँ जा ही चढ़ा। परन्तु "शेर" अपनी शक्ति में मस्त था। वह शत्रु की निर्बलता को जानता था उस ने बिना रोक टोक हुमायूं को बङ्गाल में जाने दिया। हुमायूँ ने गौर राजधानी को जीत कर बड़े हर्ष मनाये और एक वर्ष तक वहां भोगों में मस्त रहा। हिन्दाल को आगरा में नयी सेना लाने को भेजा किन्तु वहां जाकर हिन्दाल ने अपने आप को बादशाह उद्घोषित किया। हुमायूं इस कुसूचना को सुन कर बहुत घबराया। उधर से वर्षा ऋतु ज़ोर पर थी, सड़कें सब दल दल हो गई थीं, रसद लेना भी कठिन हो गया था, ऋतु

शेर ने चाल का काम आरम्भ कर दिया था, इस समय विपत्तियों के समय "शेर ख़ां" के सैनिक छापे मार कर मुग़ली सेना को तंग कर रहे थे। और काशी पर अधिकार जमा कर बिहार तथा जौनपुर को 'शेर' ने आ घेरा था। ऐसी दुरवस्था में हुमायूं बङ्गाल से वापिस हुआ। बक्सर के युद्ध में बुरी प्रकार से हार कर बड़ी कठिनता से आगरे में पहुंचा, माता की प्रेरणा से हिन्दाल ने बादशाहत त्याग दी थी अतः हुमायूं वहां नवीन सेना एकत्रित कर सका। कन्नौज के समीप दूसरा संग्राम हुआ जिस में शेरख़ां की अफ़ग़ानी सेना के सामने मुग़ली सेना भाग निकली। १५३९ में विजेता शेरख़ां ने हुमायूं का पीछा कर के उसे आगरा तथा देहली से निकाल दिया। और कामरान ने "शेर" के भय से पञ्जाब स्वयम् छोड़ कर काबुल के राज्य पर सन्तोष किया। इस प्रकार "शेरख़ान" ने अफ़ग़ानों का राज्य पुनः भारत में स्थापित किया और अपना नाम शेरशाह रखा।

(९) शाही से गदाई।

हुमायूँ ने राजपूतों की शरण मांगी परन्तु दुर्भाग्य बादशाह को उन्हों ने भी सहायता न दी। अन्त में सिन्ध की ओर भागा और अमरकोट के राजा रामप्रसाद ने हुमायूँ को अपने पास रक्खा। सिन्ध के सुन सान बञ्जर बियाबान निर्जन जल

के लिये उसे भाइयों से लड़ना पड़ा क्योंकि कभी हुमायूँ की जीत होती थी और कभी अन्य भाइयों की। अन्त में हुमायूँ के सौभाग्य से हन्दाल युद्ध में मारा गया। अस्करी कैद हो कर मक्के भेजा गया और कामरान कैद कर के अन्धा किया गया॥

(१०) भारत का विजय।

भारत के विजय करने में बाबर ने जो संकट उठाये थे वह सब व्यर्थ मालूम होते थे। क्योंकि हुमायूँ के पास केवल काबुल ही रह गया था। पर हुमायूँ के खोटे दिन बीत गये थे और भारत को फिर से विजय करने का सुअवसर आपहुंचा था। १५५६ में वीर सैनिकों को साथ ले हुमायूँ भारत में आ गया, सरहद पर अफ़ग़ानों को पराजित करके लाहौर तथा देहली आधीन कर लिये परन्तु नवीन राज्य का भोग करना उस के भाग्य में थोड़े ही दिनों के लिये लिखा था। आजन्म कभी इस का सौभाग्य उदय न हुआ-एक दिन अपने पुस्तकालय से नीचे आरहा था कि बादशाही मसजिद में मुल्ला ने निमाज़ पढ़ने की बांग दी। बादशाह वहीं सीढ़ियों में निमाज़ पढ़ने बैठा परन्तु जब लाठी टेक कर उठने लगा तो संगमर्मर की सीढ़ी पर लाठी फिसल गई। हुमायूँ ठोकरें खाता नीचे गिरा और चार दिनों में नवीन राज्य को अरक्षित छोड़कर ५० वर्ष के वय में परलोक सिधारा। देहली में हुमायूँ का मकबरा संसार के मकबरों में अति

दिन मुग़लों को निकाल देगा और यह आशा पूर्ण हुई क्योंकि अपनी चतुरता तथा बल से बिहार, चुनार, रोहतस एक एक कर के जीत लिये फिर बंगाल पर भी ऐसा छापा मारा कि एक ही धावे में बंगाल उस के पञ्जे में आगया। जिस प्रकार उस ने हुमायूँ को परास्त कर के भारत का राज्य प्राप्त किया यह लिखा जा चुका है।

इस ने केवल ५ वर्ष ही राज्य किया परन्तु यह बड़े समारोह का राज्य था। पञ्जाब, ग्वालियार, और मालवा मुग़लों से तत्काल ही जीत लिये और चन्देरी, मारवाड़, चित्तौड़ भी राजपूतों से फ़तह किये।

(४) चन्देरी का राजा पूर्णमल मुसल्मानी स्त्रियों को दासी बना कर बुरा बर्ताव करता था। शेर शाह ने उसे दण्ड देना चाहा। छ मास तक चन्देरी का दुर्ग विजय न हो सका तब दिखावे की मित्रता कर के उसे कपट से मार डाला। उस घेरे जो अपूर्व वीरता राजपूतों ने दिखाई उस के विषय में फ़रिश्ता का कथन है कि "रुस्तम तथा अस्फ़न्दयार के काम उन राजपूतों के कारनामों के सम्मुख बालकों के खेल थे"।

(५) मारवाड़ के शक्ति शाली राजा मालदेव का राज्य पड़ौस में था। उस के विजय करने के लिये ८० सहस्र सेना ले गया राजपूत इस वीरता से लड़े कि शेर शाह का भारती राज्य मुट्ठीभर जौ के बदले जाने लगा जब

(३) टोडर मल की सहायता से भूमि का माप करा के कृषकों का दातव्य कर ठीक निश्चय कर दिया।

(४) पूर्ण न्याय करने के लिये दीवानी और फ़ौजदारी कानून बनाएँ।

(५) सेना को जागीरों के स्थान पर नकद वेतन देने की रीति इस ने पहिली वार मुसल्मान बादशाहों में से निकाली।

एक मुसल्मान औलिया **शेख़ अली** ने सूफ़ी मत का प्रचार किया-यह मत वेदान्त के अद्वैत सिद्धान्त तथा परमात्मा के प्रेम पर विशेष बल देता है। चूंकि यह तत्व मुसल्मानी धर्म में नहीं इस कारण उसे घोर दण्ड दे कर मरवा डाला गया।

(१३) सलीमशाह।

इस ने अपने पठान अमीर वज़ीरों को तंग किया। अपने ज्येष्ठ भ्राता को मरवा कर राज्य प्राप्त किया। इस कारण सलीम के विरुद्ध पार्टियां हो गईं। पठानों में ऐक्यता न रहने से मुग़लों के लिये भारत का जीतना सुगम हो गया। परन्तु सलीम राज्य कार्य में पिता की नीति पर चलता रहा और स्वयं बलिष्ट, सुन्दर और बुद्धिमान था। इस कारण इस के सप्तवर्षी राज्य में स्पष्टरूप से सूरी राज्य क्षीण न हुआ॥

(१४) हेमूं विक्रमादित्य

सलीम के पुत्र को मार कर शेरशाह के एक भतीजे मुहम्मद आदिल ने राज्य [illegible] और फिर ऐसी मूर्खता

पानीपत का द्वितीय युद्ध-१५५६

ज्यूं ही हेमूँ ने हुमायूँ की कामयाबी की सूचना सुनी कि वह मुग़ल अपनी विजयी सेनासमेत वापिस हुआ है और शीघ्र आगरा तथा देहली नगर जीत लिये हैं तो हेमूँ ने बंगाल से लौटकर आगरा और देहली शीघ्र जीत लिये तथा अपने मालिक-नाममात्र के बादशाह आदिलशाह को हेमूं ने हटा कर विक्रमादित्य की उपाधि से देहली में अपना राज्य तिलक करवाया। इस कर्म्म से उसके सब पठान सैनिक क्रुद्ध होगये और आगामी युद्ध में उन्हों ने उसका साथ न दिया। हिन्दुओं में जातपात के झगड़ों ने उन को पादाक्रान्त कराये रक्खा है—उन्हों ने हेमूं को तनिक मात्र भी सहायता न दी, बेचारा फिर भी अकबर के साथ लड़ने के लिये बढ़ा। ऐतिहासिक युद्धक्षेत्र पानीपत पर मुग़लों के साथ संग्राम हुआ। हेमूं वीरता पूर्वक लड़ता हुआ पकड़ा गया और चूंकि पठानों ने उसकी आज्ञाओं को न मानकर सेना में खिलबिली मचादी थी—इस कारण मुग़लों का विजय हुआ। हेमूं को उसी दिन अकबर के संरक्षक

और महा सेनापति बैरमखां ने स्वयम् मारडाला। इस के देहान्त के साथ पठानों तथा हिन्दुओं के हाथ से भारतराज्य निकल कर मुग़लों के हाथ में चला गया ।

सिकन्दर सूरी का पराजय

अकबर के लिये पंजाब तथा युक्तप्रान्त का राज्य करना भी सुगम न था क्योंकि सिकन्दर सूरी और आदिलशाह मौजूद थे । सिकन्दर ने मुग़ली सेना को परास्त करके पंजाब का राज्य पुनः प्राप्त कर लिया, परन्तु अकबर निर्भय होकर बैरम समेत पंजाब में गया-मानकोट के दुर्ग में सिकन्दर को स्वाधीन कर लिया, तब सिकन्दर तथा आदिलशाह बंगाल में चले गये और वहीं उनकी मृत्यु हुई-इस प्रकार अब पुनः मुग़लों का राज्य आरम्भ होता है ।

जलालुद्दीन अकबर "महान्"

(१५५६---१६०५ ई०)

१५. बैरमखान ख़ानख़ाना (१५५६-६०) यह सच्चा तुर्क हुमायूं का बड़ा प्रेमपात्र था क्योंकि इसने बड़ी

बहुत से राजे तथा नवाब इस के कृतज्ञ तथा वफ़ादार सेवक बन गये ।

(क) मुग़ल अमीरों की विमुखता के पश्चात् नवयुवक अकबर के विरुद्ध उस के महानुभवी मुग़ल सरदारों ने विद्रोह किया, क्योंकि वह भिन्न २ प्रांतों में अपना २ राज्य स्थापन करना चाहते थे। जौनपुर के विजेता खानज़मान, मालवा के विजेता आदम ख़ान, कोरा के हाकिम आसफ़ तथा काबुल के हाकि विद्रोही हुए, परन्तु बड़ी युक्ति तथा साहस से युव अकबर ने ७ वर्षों में एक २ करके सब को फ़तह क के अपना राज्य स्थिर किया ।

(ख) राजपूताना का विजय-देहलीके पठान राजा ओं को राजपूत सदा तंग करते रहते थे और कभ भी वीर पठान उन्हें चिरकाल तक क़ाबू रखने ! कामयाब न हुए थे। वीर धीर अकबर ने अपन नीति तथा सेनाशक्ति से राजपूतों को आधीन किया—अम्बर (जयपुर) और मारवाड़ (जोधपुर) के राजाओं ने शीघ्र ही अधीनता स्वीकार करके सर्वदा के लिये राजपूत नामको कलङ्कित कर दिया और साथ

ही अम्बराधीश विहारीमलने अपनी पुत्री का अकबर से विवाह कर दिया । जोधपुर के राजा ने अकबर के पुत्र सलीम से स्वपोती जोधाबाई का नाता किया इसी का पुत्र शाहजहाँ हुआ और जयपुर की पुत्री का पुत्र सलीम (जहाँगीर) था । इसी प्रकार बून्दी और बीकानेर स्वाधीन किये गये ।

चित्तौड़ का तीसरा शाका ।

वीर चित्तौड़ी राजपूतों ने अकबर की आधीनता तथा उसके वंश से सम्बन्ध करना स्वीकार न किया; अकबर ने चित्तौड़ पर चढ़ाई की । यह चित्तौड़का तीसरा शाका कहलाताहै । राजा उदयसिंह चित्तौड़ को त्यागकर पर्वतों पर भाग गये- उस की अनुपस्थिति में वीर राजपूतों ने अकबर का घोर सामना किया, विशेष करके जयमल और पत्ता के नाम इस साम्मुख्य में अमर होगये हैं । अकबर स्वयं उनकी वीरता पर ऐसा लट्टू हुआ कि उनकी मूर्तियें पत्थर के हाथियों पर सवार कराके देहली दुर्ग के फाटक पर लगवाई । अकबर की सेना के अधिक होने से चित्तौड़ फतह होगया। पर बीराङ्गना

राजपूत स्त्रियों ने जौहर करके अपनी लाज रक्खी और ८००० राजपूतों में से प्रत्येक ने बड़ी वीरता से जान देकर चित्तौड़ की लाज बचानी चाही परन्तु कामयाब न हुए। १५६७ में अकबर के हाथ चित्तौड़ आगया और तब से उसका अस्तित्व इतिहास से जाता रहा, क्योंकि पुनरपि इस नगर को राजधानी न बनाया गया, परञ्च उदयसिंह ने १५६७ में अरावली पर्वत के पास उदयपुर नामी नया नगर बसाया जो अब तक राजपूतों का पूज्य नगर है।

रानाप्रताप—यह राना उदयसिंह का ज्येष्ठपुत्र था, इस के अन्य २४ भाई थे- यह अत्यन्त वीर, धीर, आत्मत्यागी, हिन्दूधर्म की लाज रखने वाला महाराजा हुआ है—मेवाड़ को स्वतन्त्र रखने में इसने बड़ा यत्न किया, यद्यपि बहुत सी शक्तियां इस के विरुद्ध थीं जैसे (क) अन्य राजपूती रियासतों का अकबर के पक्ष में लड़ना (ख) उस के भाइयों का अकबर से मिलना (ग) भाई का प्रताप की जान लेने की ताक में रहना (घ) सदा दरिद्रता के होते हुए भी संग्राम करना। तथापि इन शक्तियों के विरुद्ध होते हुए निरन्तर २६ वर्षों तक प्रताप अकबरसे लड़ता

:हा और अपनी वंशज पुत्री का विवाह कभी भी ग़ाही वंश के साथ करना स्वीकार न किया और ग़ाही अकबर की आधीनता स्वीकार की। १५७६ में हल्दीघाट के स्थान पर एक घोर संग्राम हुआ जिस में प्रताप की हार हुई और फिर वह परिवार सहित जंगलों में अत्यन्त हृदयविदारक कष्टों को सहता हुआ बड़ी धीरता से वफ़ादार साथियों की सहायता से लड़ता रहा, कभी भी अकबर की प्रभुता स्वीकार न की, यद्यपि उससे प्रताप को असंख्य सांसारिक सुख मिलते थे जैसा कि मानसिंह तथा उस के पुत्र भगवानदास आदि हिन्दुओं को प्राप्त थे—परन्तु प्रताप देशभक्ति, धर्मसेवा, जातीयमर्यादा, आत्म-सम्मान, अद्भुतवीरता, विचित्र सहनशीलता, पूर्ण मनुष्यत्व का सच्चा आदर्श था, इस कारण उस ने जीवनपर्य्यंत राजपूत नाम को उज्ज्वल रक्खा।

[ग] गुजरात में अराजकता होने के कारण पठानों से गुजरात छीनना सुगम था, अकबर ने १५७२ में इस प्रान्त को स्वाधीन कर लिया।

(घ) बंगाल के पठान हाकिम दाऊद ख़ान ने अकबर के विरुद्ध खुल्लमखुल्ला विद्रोह किया परन्तु १५७५

में मुग़लमाड़ी स्थान पर उसे पराजित करके अकबर ने बंगाल में मुग़ल हाकिम नियत किया और 'दाऊद' को उड़ीसा का हाकिम बना दिया परन्तु एक ही वर्ष में मुग़ल भूमिपति तथा दाऊद विद्रोही हो गये, इस पर अकबर ने वीर टोडरमल को बंगाल विजय के लिये भेजा जिसमें वह खूब कामयाब हुआ, दाऊद अकमहल के युद्ध में मारा गया और इसकी रही सही सेना हुगलीपर पराजित हुई । तब से अकबरकी मृत्यु तक बंगाल के गवर्नर हिन्दू रहे और उन्होंने अकबर के विश्वास का पूरा बदला अपने अपने सु-शासन से दिया—आज कल की आंगल सरकार को भी ऐसे कार्य करने से बहुत लाभ होगा ।

[ङ] काश्मीर में १४वीं शताब्दि तक आर्य राज्य रहा, फिर एक सौ वर्षों तक वह देश पठानों के आधीन रहा । उन को तिब्बत वालों ने राज्य से च्युत करके स्वर्गभूमि काश्मीर को अपने अत्याचारों से नरकभूमि बना दिया-इस अराजकता से लाभ उठा कर अकबर ने उस देश को १५८६ में जयपुर के राजा के द्वारा फ़तह कर लिया ।

१७. अकबर का राज्यविस्तार—इस प्रकार कन्धार और काबुल से बंगाल उड़ीसा तक और हिमालय से अहमद नगर तक अकबर का राज्य फैला हुआ था—इस राज्य में निम्न लिखित सूबे थे। काबुल, काश्मीर, लाहौर, मुलतान, देहली आगरा, इलाहाबाद, बिहार, बंगाल, गुजरात मालवा, अजमेर, खानदेश, बरार और अहमदनगर

१८ करविधि—राजा टोडरमल की सहायता से करविधि बहुत सुधर गई:—

[क] भूमियां अपनी उपजाऊ शक्तियों के अनुसार आठ विभागों में विभक्त की गईं।

[ख] दशवर्षीय लगान की विधि स्थापित की गई।

[ग] राजकर्मचारियों को भूमियों के स्थान पर नक़द धन वेतन में दिया जाने लगा।

[घ] यह रीतियां शेरशाह ने भी चलाई थी

भेद किया कि जहां शेरशाह भौमिक उपज का $\frac{1}{4}$ भाग कर में लेता था वहां अकबर ने $\frac{1}{3}$ भाग लिया।

(ङ) उपज का भाग कर में लेने के स्थान पर अकबर ने नक़द रुपया किसानों से लेना किया।

[च) टोडरमल ने पहिले पहिल यह हिसाब किताब आर्यभाषा के स्थान पर फारसी में रखना आरम्भ कराया ताकि मुसलमानों के साथ हिन्दु राजपदों के ग्रहण करने में मुकाबिला करें।

१९. हिन्दुओं से वर्ताव–

जिस प्रकार का उत्तम वर्ताव हिन्दुओं से अकबर ने किया वह अब तक थोड़े विदेशी बादशाहों ने इस देश के निवासियों से किया है:—

[१] घृणित जज़िया और यात्रा कर हटा दिया।

[२] सती और बालविवाह की कुरीतियां बन्द कीं।

[३] अपने सारे राज्य में गोवध सर्वथा बन्द कर दिया।

[४] हिन्दुओं के साथ अपना और अपने पुत्र तथा सम्बन्धियों के विवाह किए तथा मुसलमानों और हिन्दुओं के परस्पर विवाह करा के हिंदु मुसलमान के भेद को हटा कर, एक भारतीय जाति बनाना चाहता था जो उसके दीन इलाही मत की अनुयायी हो।

[५] हिंदुओं को राज्य में बड़े २ पद दिए— मानसिंह—बंगाल विहार दक्षिण और काबुल कश्मीर का हाकिम रहा। इसी प्रकार भगवान्दास, टोडरमल, बीरबल तथा पृथिवीसिंह ने बड़े २ पद प्राप्त किये।

[६] हिन्दुओं की धार्मिक पुस्तकों का फारसी में अनुवाद फ़ैज़ी से करवाया। जिन में अथर्ववेद, रामायण तथा महाभारत विशेषतः प्रसिद्ध हैं।

(७) अपनी हिन्दु रानियों के लिये महलों में पृथक् २ मन्दिर बनवाए और इन्हें पूजा पाठ में पूर्ण स्वतन्त्रता दी। कभी २ स्वयम् यज्ञोपवीत और तिलक लगा कर पूजा में शामिल होता था।

२०—धार्मिक निष्पक्षपात

पहिले पहल अकबर मुसलमान था परन्तु फ़ैज़ी और अब्बुलफ़ज़ल के दरबार में आने तथा राजपूतों से सम्बन्ध हो जाने के कारण उसका उदार तथा सत्याभिलाषि हृदय मुसलमानी धर्म से सन्तुष्ट न हुआ। फ़तहपुर सीकरी में बृहस्पति के दिन प्रतिसप्ताह एक धार्मिक सभा होती थी जिसमें सब मतों और उपमतों के पण्डित, पादरी और मौलवी धर्मतत्वों पर परस्पर विवाद करते थे। इस सभा से अकबर के हृदय में उस समय के सब मतोंकी असत्यता अङ्कित हो गई-मुसलमानी धर्म में रुचि जाती रही और सब मतों के लोग अपनी पूजा पाठ में स्वतन्त्र किए गये।

अकबर ने महाराजा अशोक की भांति जहां निष्पक्षपात दिखाया वहां एक नया मत दीनइलाही चलाया—जिस में पारसियों और हिन्दुओं के धर्मों का अधिक भाग था। उन में अकबर पैग़म्बर था-धर्म के अनुयायी उसका सिजदा करते थे परन्तु

अकबर की मृत्यु के साथ इस नवीन धर्म की भी मृत्यु हो गई ।

२१--अकबर का आचार

सब मुसलमानी बादशाहों में अकबर महान् है- यह महत्ता अद्भुत गुणों का फल थी । अद्वितीय बुद्धि, सुन्दर आकृति, बलिष्ठ शरीर, चौड़ा माथा, तेजस्वी मुख, मिलनसार और आकर्षण करने वाला आचार था । प्रियता, वीरता, धीरता, क्षमा, उदारता, मन्युयुक्त न्यायशीलता, निष्पक्षपात यह गुण अकबर में कूट २ कर भरे हुए थे--इन्हीं के कारण उस ने राज्य का विस्तार किया । वीर साहसी राजपूतों को आधीन किया, राज्य के लिये हिन्दु प्रजा को हानिकारक के स्थान पर लाभकारी बना दिया ।

जीवन व्यतीत करने का ढंग--

(१) पैदल चलने, घोड़े पर सवार होने, मृगया तथा अन्य बलयुक्त खेलों का अकबर बड़ा प्रेमी था, परन्तु साथ ही राज्यकार्य्यों में आलस्य नहीं करता था ।

[२] राष्ट्र के सुधारार्थ बहुत से नए नियम बनाए।

[३] हिन्दुओं से अत्यन्त सुलभ बर्ताव किया।

[४] हिन्दू और मुसलमानों के मिलाप के कई साधन ढूंढे॥

अध्याय ७

मुग़ल राज्य का वैभव

नूरुद्दीन जहांगीर १६०५-२७

१—मद्यप्रिय जहांगीर का आचार—

अकबर के पश्चात युवराज सलीम 'जहांगीर' (संसारविजेता) की उपाधि से बादशाह बना, यद्यपि उसने अपने राज्य में कोई नया इलाका न मिलाया।

वह अत्यन्त शराबी, कामी, स्वच्छन्दवादी, मदिरा-भक्षी, स्वार्थी, मांसाहारी और क्रूर था परन्तु राज्य

कार्य्य में स्वभाव से दक्ष था और अपनी प्रजा पर न्यायपूर्वक शासन करना चाहता था । बाहर से अपने आप को कट्टर मुसलमान जतलाता था परन्तु रात्रि को मद्य पीने, अफ़ीम तथा मुसलमानों के लिये निषिद्ध मांस खाने से उसकी सारी मुसलमानी काफ़ूर होजाती थी । जहांगीरने विद्वानों और धार्मिकों को संगत कभी स्वप्न में भी नहीं देखी—एकबात अवश्य स्मरणीय है कि स्वयं ऐसा होते हुए मद्य, अफ़ीम और तम्बाकू के प्रयोग के विरुद्ध नियम बनाये—'सात चूहे खाकर बिल्ली हज को चली' वाली बात है । पिता की भांई सब धर्मावलम्बियों के साथ इसने निष्पक्षपात से बर्ताव किया ।

२ .ख़ुसरो—

जहाँगीर की राजपूतनी स्त्री जोधाबाई का पुत्र .ख़ुसरो था । पिता पुत्र में बहुत अनबन रहती थी । राज्यप्राप्ति के लिये .ख़ुसरो ने बहुत [illegible] किया—जहांगीर के बादशाह [illegible]
शाही सेना से पराजि[illegible]
.ख़ुसरो भाग रहा [illegible]

व उसने 'शेर अफ़गन' को मरवा कर लिया महरु-
निसा को अपने अन्तःपुर में नूरमहल के नाम से
विष्ट किया—पर यह बड़ी बुद्धिमती, चतुर, धीर,
न्मान की प्यारी, प्रबल साहस वाली नारी थी—
जहांगीर को अपने पति का घातक जान कर निरन्तर
६ वर्षों तक उस से विमुख रही, पर बादशाहने भी
दिलासे से आखिर परचा लिया, तिस पर नूरेमहल को
नूरेजहान का नाम देकर महारानी बनाया गया,
तब से उस के ऐश्वर्य और अधिकार की सीमा न
रही और भारत की किसी महारानी ने उस के
ऐश्वर्य की छाया भी प्राप्त न की। उसका नाम जहां-
गीर के साथ सिक्कों पर अङ्कित होता था—सनदों पर
उस के नाम की मुहर लगती थी। उस का पिता
महामन्त्री और भाई आसफ़ख़ाँ 'अमीरुल उमराव'
बनाया गया। पुत्री का विवाह राजपुत्र शहरयार से
कराया और भतीजी ताजमहल का शाहजहां से।
निस्सन्देह पहिले पहिल नूरजहां ने राज्योन्नति के
लिये बहुत यत्न किया—बादशाह अतिस्वादु, भो-
जनों, मद्य तथा अफ़ीम में मस्त रहता था उसे राज-
कार्यों से कोई वास्ता न था पर नूरजहां ने जहांगीर का

इसके हाथ आगया परन्तु प्रयाग में पराजित होकर फिर से दक्षिण में भाग गया—वहाँ से राजपूताना और सिन्ध भागता फिरा। सौभाग्य ने पुनः शुभ दिन दिखाये कि युवराज परवेज़ मर गया और महाबतख़ान के उसके साथ आ मिलने से उस का बल बहुत बढ़ गया।

५. नूरजहान् और महाबतख़ान्—

महाबतख़ान बड़ा वीर साहसी राजपूत सेनापति था और जहांगीर के समय शूरवीरता में वह अद्वितीय था। उसे काबुल का हाकिम नियत किया हुआ था, शाहजहान के विमुख होने पर नूरजहान ने महाबत को अपनी सहायतार्थ बुलाया, इसी नरसिंह ने शाहजहान का स्थान २ पर पीछा करके उसका नाक में दम कर दिया परन्तु महाबत की बढ़ती हुई शक्ति को तथा उसे परवेज़ के पक्ष में देख कर नूरजहान ने मरवाना चाहा। जब जहाँगीर सेना सहित काबुल को जारहा था महाबत को दरबार में उपस्थित होने की आज्ञा दी गई। महाबत बालक न था उसने महारानी के दुष्ट

के इंग्लैंड के राजा जेम्ज़ ने अपना राजदूत १६१५ में जह
गीर-महान् मुग़ल के दरबार में भेजा ताकि वह अं
व्यापारियों को भारत में व्यापार करने की आ
लेदे--इस में वह थोड़ा बहुत कृतकृत्य हुआ।

३ वर्षों तक सर टामसरो जहाँगीर के पास रह
इस समय में वह प्रायः बादशाह के साथ सभ्रा
तथा भोजन में भी सम्मिलित होता था। उस
पूर्णतया अपने आपको भारत के राज्यप्रबन्ध
परिचित कर लिया था अतः जो वृत्तान्त उसने तथ
यात्री हॉकिन्ज़ ने लिखे हैं उन से पता लगता
कि (क) अब अकबर के समय जैसा प्रबन्ध न थ
(ख) यात्रा करनी बहुत कठिन थी क्योंकि मार्ग में लुटे
लूटमार करते थे (ग) दरबार में उत्कोच की रीति बहुत
प्रचलित थी (घ) राजपूतों की अपेक्षा मुसलमानों
का अधिक पक्ष करने के कारण देश में प्रायः विद्रोह
होते थे (ङ) अमीरों को अनुचित रीति से बहुत धन
मिलता था और सूबों का प्रबन्ध अति ढीला था जैसे
गुजरात का हाकिम ३१०००० रुपया सेनाविभाग से
वार्षिक बचाता था और लाखों रुपया गुजरात के
कर तथा उत्कोचों से तथा १००० रुपया दैनिक वेतन
लेता था।

के पुत्र कर्णसिंह को दरबार में बहुत उच्च पद दिये गये। अपने पुत्र की इस दशा, को देखकर महाराना प्रताप की आत्मा अवश्य दुःखित हुई होगी।

(३) कंधार पर ईरानियों ने १६२२ में अधिकार कर लिया-मुग़ल उसे वापिस लेने में नाकामयाब हुए।

(४) १६१२ से १६१६ तक अहमदनगर की रियासत के विजय में शाही सेना लगी रही-एक चतुर वीर हबशी मलिक अम्बर अपनी अद्भुत बुद्धिमत्ता से अहमद नगर में स्वतंत्र राज्य स्थापित करने में कृतकृत्य होगया था, तीन बार उसने शाही सेना को पराजित किया परन्तु शाहजहाँने उसे १६१६ में जीत ही लिया। मलिक अम्बर भी नरसिंह या वह ५ वर्षों के पश्चात् मुग़लों से अहमदनगर को लेने में कृतकृत्य हुआ। फिर उसने जहाँगीर से भागे हुए राजपुत्र शाहजहान को अपने यहां आश्रय दिया और १६२६ में अपनी मृत्यु तक सुशासन करता रहा। परन्तु जब शाहजहान

शाहजहान को तब तक शान्ति न आई जब तक उस ने भाई शहरयार समेत सब राजपुत्रों को मरवा न डाला । इस प्रकार रक्त की नदियों से गुज़र कर यह सिंहासन पर बैठा परन्तु शाहजहान का अन्त भी देखियेगा ।

आचार—बादशाह बनने से पूर्व शाहजहान निस्सन्देह वीर योद्धा, योग्य प्रबन्धकर्त्ता, चतुर और नीतिज्ञ राजपुत्र था परन्तु बादशाह होने से इस में शानोशौकत, भोग विलास और शिल्पप्रियता की अति हो गई । राज्य का सारा कार्य्य महामंत्री आसफ़ख़ाँ और फिर ज्येष्ठ पुत्र दारा को सौंप दिया, तथापि न्याय करने में आलस्य न करता था और बुद्धिमान् चतुर और संसार के अनुभवी राज्यकर्म्मचारियों के चुनाव में विशेष योग्यता रखता था ।

इस कारण स्वयं काम न करते हुए भी राज्य को उन्नत किया और प्रजा की बहुत सुरक्षा की । कइयों ने इस के राज्य का मुक़ाबिला सुलेमान और सलादीन के राज्यों से किया है- निस्सन्देह कभी पहिले या पीछे मुग़ल राज्य का शाहजहाँ के समय जैसा वैभव नहीं रहा ॥

[१] दक्षिण के पठान हाकिम ख़ानजहान लोधी ने शाहजहाँ की राज्यप्राप्ति पर दक्षिण में स्वतंत्र होना चाहा परन्तु शीघ्र सम्राट् की अधीनता स्वीकार करने पर मालवा का हाकिम बनाया गया—वहां उसे सन्देह हुआ कि बादशाह मुझे मरवाना चाहता है, अतः आगरे में ही खुल्लमखुल्ला विद्रोह की ध्वजा गाड़ दी। चंबल नदी पर शाहीसेना से हार कर अहमदनगर भाग गया, पर उस रियासत के फ़तह होने पर बुंदेलखण्ड में शरण ली, वहां अन्त में शाही सेना से पराजित होकर मरा [२] १६३६ में अहमदनगर फ़तह किया गया। [३] शाहजहां के तृतीय पुत्र औरंगज़ेब ने बड़ी वीरता से लड़कर बीजापुर और गोलकुण्डा की रियासतों को कर देने पर बाधित किया [१६५६]

(४] बङ्गाल निवासियों को पुर्त्तगाली लुटेरे दासत्व में पकड़ लेजाते थे—पुर्त्तगालियों को बंगाल से निकाल दिया [१६३१] बहुतों को क़ैद करके दासत्व में बेच डाला और सैकड़ों का घात किया।

(५) बुन्देलखण्ड का राजपूत राजा चम्पतराव स्वतन्त्र था— उसे अधीन करने के लिये आक्रमण

के हाथ में कन्धार दे दिया, पर १६४८ में ईरान वालों ने उसे वापिस ले लिया, फिर शाहजहाँ के चारों पुत्रों ने कन्धार को हस्तगत करने में सिर तोड़ यत्न किया, परन्तु सफल न हुए।

१३. शाहजहान की इमारतें-अपनी महारानी बीबी मुमताज़महल के स्मरण में शाहजहान ने रोज़ा ताज-महल आगरे में बनवाया (१६३८)। इसी में शाहजहाँ भी दफ़न किया गया-यह ताज संसार में शान्ति, सौन्दर्य, शुद्धता, शिल्पकी अपूर्वता में अन्य कोई उदा-हरण नहीं रखता।

(२) शाहजहानाबाद के नाम से नई देहली बसायी क्योंकि आगरे की गर्मी असह्य थी। वहां दुर्ग तथा महल भी बनवाये। (३) आगरे में जामे मसजिद और मोती मसजिद बनवायीं (४) देहली की संसारप्रसिद्ध जामे मसजिद बनवायी (५) रावी नदी से नहरें निकाली और जमना से भी नहरें निकलवाईं। अलीमर्दान की नहर प्रसिद्ध है। केवल ताज पर ३ ००,००,००० रुपये व्यय हुए और देहली के राजदर्बार में जो अर्द्धस्फटिक, सुवर्णमय, रत्न-

होगया था। ५२ उपनिषदों का इसने फ़ारसी में अनुवाद कराया और आध्यात्मसाहित्य का बड़ा प्रेमी था-इस कारण मुसल्मान उस से क्रुद्ध थे।

शुजा—यह वीर चतुर और योग्य सेनापति था परंतु भोगों और मद्यपान ने इसके शरीर और साहस को क्षीण कर दिया था। यह शय्याधर्म का प्रेमी बंगाल का सूबेदार था।

औरंगज़ेब—दक्षिण का सूबेदार था-सावधान, दूरदर्शी, चालबाज़, शूरवीर, अविश्वासी, जितेन्द्रिय चुपचाप और पक्का मुसल्मान था। ऊपर से अपने आपको धर्म का प्रेमी जताता था-प्रायः बग़ल में कुरान हाथ में माला और हृदय में छल रखता था परन्तु शराब तथा भोगों से दूर भागता था फ़क़ीरों की संगत करता और कभी २ यह प्रसिद्ध करता रहता था कि मैं फ़क़ीर बनकर मक्के में जीवन व्यतीत करूंगा। धर्म में पक्का सुन्नी था, अतः बहुत मुसलमान उस को पसन्द करते थे और अब तक उस की महिमा गाते हैं।

मुराद—गुजरात का हाकिम मुराद मद्य और ——— में मग्न रहता था— परन्तु वह उदारचित्त

वीर और साहसी था-अन्य भाइयों के समान लोभी भी था परन्तु योग्यता और बुद्धि में उन से बहुत कम था, धर्म में सुन्नीमतका प्रेमी था-भोला स्वभाव और शीघ्र विश्वास कर लेने वाला था, इस लिये कपटी औरंगज़ेब के फन्दे में शीघ्र आगया। जब औरंगज़ेब ने उस से कहा कि मैं राज्य का अभिलाषी नहीं हूं परन्तु काफ़िर दारा और शय्या शुजा को राज्य पर सुशोभित नहीं देखना चाहता परन्तु तुम जैसे पक्के मुस्रो को राज्यलक्ष्मी का पति देखना चाहता हूं तो मूर्ख मुराद ने यह सब मान कर औरंगजेब को सहायता दी।

१५. भ्रातृयुद्ध—७० वर्षों की आयु में (१६५८) शाहजहान् रोगग्रस्त हुआ, वृद्ध होने के कारण अमीरों को उस के बचने की आशा न रही। वन की अग्नि के समान यह सूचना चारों दिशाओं में फैल गयी। शाहजहान् ने पुत्रों को दर्बार में अपने पास न रखा था-ताकि वे परस्पर न लड़ें परंतु उसने मूर्खता से उन्हें सूबों के हाकिम बनाकर उन के हाथों में असीम धन और सेना देदी थी— इस कारण अब युद्धों का अवसर अधिक था- बंगाल, दक्षिण और गुजरात की

नवीन काल का समावेश होता था! (४) ५ वर्ष भाइयों को पराजित करने में लगे और इस कार्य्य में राजपूतों की विशेष सहायता थी, फिर उस का पिता जीता था उसे भय था कि कहीं राजपूत उसे राज्य से च्युत न कर देवें, इसलिये १० वर्षों तक राज-पूतों से बनाए रक्खी, फिर पिता की मृत्यु पर उन से बिगाड़ आरम्भ किया।

१६. औरंगज़ेब का आचार—अकबर, जहाँगीर और शाहजहान् का आचार औरंगज़ेब से सर्वथा भिन्न था। वे तीन बादशाह तो उदार, दयालु, खेल तमाशे शागो शौकत और मृगया के प्रिय थे, यद्यपि वे पक्के मुसलमान थे तथापि वे जानते थे कि वे एक हिन्दु देश में राज्य कर रहे हैं, अतः हिन्दुओं से सुवर्ताव करते थे और उन्हें राज्य में कई प्रकार से उत्साहित करते रहे। किन्तु औरंगज़ेब ईर्षालु, कपटी, छली, निर्दयी और अतीव अविश्वासी था—वह दृढ़ सुन्नी मुसल्मान था और इस लिये हिन्दुओं को सताना अपना धर्म समझता था और शीया मत को भी दबाना चाहता था। वृद्ध पिता और भाइयों से जो वर्ताव उसने

ने अत्याचारों का बदला निकालने की तय्यारियां कीं-सिक्ख, राजपूत और मराठे अपने २ देशों में औरंगजेब का मुकाबला करने के लिए उठ खड़े हुए क्योंकि अपने सम्बन्धियों को औरंगजेब ने मरवा डाला था और उच्चवंशी सरदारों पर उसे विश्वास न था, इस कारण नीच घरों के विदेशियों को राज्य में बड़े २ पद दिये जो सदा प्रजा पर अत्याचार करते और स्वतंत्र होने के दाव में लगे रहते थे। उसका राज्य ऐसा विस्तृत था कि एक मनुष्य के लिये उस समय में सम्पूर्ण देश का प्रबन्ध करना असम्भव था, अतः जब औरंगजेब के पश्चात् साधारण शक्ति वाले पुत्र पौत्रे बादशाह बने तो सूबेदारों ने स्वतन्त्रता धारण करली।

१७. औरंज़ेब का हिन्दुओं से वर्ताव हिन्दुओं पर जो २ अत्याचार इस बादशाह ने किये उनके दर्शाने में लेखनी अशक्त है। यहां अति संक्षेप से बिना उदाहरण दिये अत्याचारों की गणना की जाती है:—

(१) देहली, मथुरा, थानेसर, बनारस, मुलतान, अवन्तिपुरी, गंगोत्री, हरिद्वार, अयोध्या नामी नगरों

था । उन के त्योहारों और उत्सवों को बन्द करने का यत्न किया । कहते हैं कि संन्यासियों वैरागियों और सुनारों को कई स्थानों से देशनिकाला देदिया हिंदुओं की पालकियों और अरबी घोड़ों पर चढ़ना भी बन्द कर दिया ।

(६) राजा जयसिंह और राजा जसवन्तसिंह के सुपुत्र पृथिवीसिंह को विष देकर मर-वा डाला, यद्यपि उन्होंने बादशाह को सैंकड़ों लाभ पहुंचाये थे । राजा जसवन्तसिंह की मृत्यु पर उस के पुत्रों को क़ैद कर लिया ताकि अवसर पाकर उन्हें मुसलमान बनावे । बल्कि जोधपुर पर आक्रमण करके उस के भवनों और मन्दिरों को भूमिसात कर दिया और सारे राठौर राजपूतों को मुसल-मान होजाने की आज्ञा दी । राजपूत कट्टर शत्रु होगये । अब मुग़लराज्य को स्थिर करने के स्थान पर उसे नाश करने पर तत्पर हुए । (देखो अकबर)

(७) राजधानियों के आस पास कुछ न्याय होता था और जहां तक हो सकता था औरंगज़ेब स्वयं न्याय करने में आलस्य और पक्षपात न करता था किन्तु

१८. औरंगज़ेब के समय के युद्ध।

(१) १६६२ में मीर जुमला ने आसाम का विजय करना चाहा किन्तु सहस्रों कठिनाइयों के झेलने पर भी कामयाब न हुआ और इसी शोक में परलोक सिधारा। इस शक्तिशाली पुरुष की मृत्यु से औरंगज़ेब को बहुत कुछ सन्तोष हुआ।

(२) शाइस्ताख़ाँ ने अराकान को १६६६ में फ़तह किया।

(३) चिटागांग में कुछ समुद्री लुटेरे बंगाल पर धावा मारा करते थे, इन में से अधिकतर पुर्तगाली लोग थे। उन को अराकान के बादशाह की सहायता थी। हालैंड वालों की सहायता से उन को बादशाह ने क़ाबू कर लिया और यहां तक कामयाब हुआ कि उनको ढाका के निकट आबाद करदिया। यह घटना एक प्रकार से आवश्यक है क्योंकि आंगल लोग तब से लुटेरों से बच कर निर्बाधित व्यापार करने लगे और २० वर्षों के पश्चात् औरंगज़ेब से ही उन्हों ने सुतानती नामी ग्राम लिया और वहाँ कलकत्ता नगर की नीव डाली।

चाहता था। यह रियासतें अन्दर मुसलमानों की थीं, इनकी औरंगज़ेब की आंखों में कांटे की भांति चुभती थीं। साथ ही वह महाराष्ट्रों (देखो अध्याय -) की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना चाहता था। इन ही उद्देश्यों से एक शक्तिशाली सेना लेकर वह दक्षिण की ओर १६८३ में बढ़ा। शोक है कि औरंगज़ेब ने राजपूतों को क्रुद्ध कर दिया था इस कारण उस युद्ध की सहायता के लिये राजपूत साथ न हुए। बादशाह ने स्वयम् बीजापुर का घेरा डाला किन्तु महाराष्ट्रों के विरोध के कारण उस रियासत का विजय करना कठिन होगया, राजपुत्र मुअज़्ज़म ने गोलकुण्डा के बादशाह को अधीनता मानने पर बाधित किया किन्तु औरङ्गज़ेब उस रियासत को सर्वथा अपने राज्याधीन करना चाहता था। पहिले तो सम्पूर्ण सेना को बीजापुर के विजय में लगाया और १६८६ में कामयाब होगया। फिर गोलकुण्डा पर जा पड़ा। उस रियासत का बादशाह अकेला क्या मुक़ाबिला कर सकता था? अतः १६८७ में उसे भी परास्त किया गया॥

विजय के परिणाम—(क) बीजापुर और

न्तर २६ वर्षों तक वह दक्षिण में रहा—मराठों ने पहाड़ी दुर्गों में रह कर उस को ऐसा तंग किया कि वह लौट जाने पर बाधित हुआ । इस पराजय के प्रधान कारण यह हैं:—

(i) औरंगज़ेब की सेना के सिपाही और अफ़सर बड़े आराम पसन्द भोगी और भीरु थे । उन के घोड़े भारी शरीर वाले होने से पर्वतीय देश में लड़ने योग्य न थे ।

(ii) औरंगज़ेब अविश्वासी होने के कारण एक सेनापति को अकेला सेनासहित नहीं भेजता था । दो २ सेनापति होने से परस्पर संग्राम होते थे और उन को अपनी स्थिति में अविश्वास था—इस कारण मन लगा कर स्वकर्तव्य नहीं करते थे । मराठों ने मुसलमानों को धर्म, जाति और देश का शत्रु समझ कर अतीव उत्साह सहित युद्ध किया ।

(iii) किसी पुत्र पर उसे विश्वास न था, कोई उस का हार्दिक मित्र न था जिस से युद्ध में सम्मति ले सकता । सारा काम स्वयम् ही करना था । उत्तरीय भारत का राज्य ढीला पड़ गया, राजपूत

१५९४—१८६४०००० पाउण्ड

१६०५—१९६३००००

२६२८—१८७५००००

२६४८—२४७५००००

१६५५—३००८००००

१६६०—२५४१००००

१६६६—२६७०००००

१६९७—४३५५००००

१७०७—३३९५००००

१६६० में लगान थोड़ा आया क्योंकि भ्रातृयुद्ध से देश में विपत्तियां आईं और घोर दुष्काल पड़ा। १७०७ में लगान की कमी का कारण दक्षिण में पराजित होना और उत्तर में कुछ कुछ अराजकता का हो जाना है। उक्त तो भूमि की आय हुई—शेष करों से जो आय होती थी, वह भी इस के बराबर समझी गयी है।

अध्याय ८

मराठों की वृद्धि।

कोकन और पश्चिमी घाट के प्रान्तों में यह जाति रहती थी मराठे प्रायः छोटे क़द के किन्तु वीर, धीर, कठोर कामोंके करने में विशेष योग्य और कर्तव्य पालन में प्रेम रखने वाले थे। अपने पर्वतों की भांति उनके शरीर कठोर थे। मुसलमानी रियासतों में भी मराठे सैनिक, सेनापति, सराफ, मन्त्री, दुर्गाधिपति और कोषाध्यक्ष हुआ करते थे इस कारण राज्य प्रबन्ध और युद्धों में लड़ने का अभ्यास खूब था। फिर उन्होंने पर्वती दुर्ग बनाये हुए थे, जहाँ रह कर वे मुसलमानों का विरोध करते रहते थे। कई महात्माओंके उत्पन्न होनेसे सारी मराठा जाति संगठित होगई थी, इस कारण यवनों का विरोध वह बलपूर्वक कर सकती थी। निदान १७ वीं शताब्दि के पूर्वार्द्ध में एक महापुरुष शिवाजी पैदा होगया जिस ने मराठों की गुप्त शक्ति का प्रकाश किया।

२. शिवाजी—महाराष्ट्र का यह जातीय वीर १६२७ में "शिवनरी" के स्थान पर "शाहजी भौंसला" के घर उत्पन्न हुआ इस की माता "जीजी बाई" को सहस्रशः धन्यवाद है, जिसने ऐसे वीर, हिन्दू जाति के उद्धारक, मराठा जाति के संगठन तथा मुग़ल राज्य के नाशक पुत्र को उत्पन्न किया । शाह जी अहमदनगर की रियासत के जागीरदार थे । जब यह रियासत मुग़लों के हाथ में चली गई तो वह बीजापुर राज्य की सेवा में होगए । वहाँ से शाहजी को 'पूना और तंजौर जागीर में मिले । वह स्वयं तंजौर में जिसे 'दक्षिण का बाग़' कहते हैं रहते थे और पूना में उनका प्रतिनिधि-" पं० दादा जी कानादेव " प्रबंधकर्त्ता था ॥

३. शिक्षा-कानादेव बड़े बुद्धिमान्, युद्धरसिक, व्यवहार, नीतिकुशल और प्रभुभक्त थे । ऐसे उत्तम गुरु से शिक्षा प्राप्त करने का शुभवसर शिवा जी को मिला । पढ़ने लिखने में उसका मन न लगता था । वीरों के चरित्र और रामायण, महाभारत पुराणों के सुनने में अनुपम अनुराग था । तलवार और तीर के चोंच, घुड़सवारी [illegible] ी, तीरन्दाज़ी, मृगया

बाघनख आदि के साथ गुप्तरीति से सुसज्जित हो कर शिवाजी अफ़ज़लख़ां को मिलने के लिये गया और अवसर पाकर मिलते समय गुप्त बाघनख और खंजर से अफ़ज़लख़ां को यमलोक में पहुंचा दिया। फिर उसकी सेना पर अचानक धावा करके जय प्राप्त करली। इस से शिवाजी की शक्ति, दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ने लगी। बीजापुर के द्वारों तक जयपताका गाड़ दी, समुद्रतट के दुर्गों को जीत लिया और मुग़लों प्रान्त को भी लूटने लगा॥

५. शाइस्ताखान–शिवा जी की उद्दण्डता और वैभव की वृद्धि को देख कर औरङ्गज़ेब ने उसके नाशार्थ शाइस्ताख़ां को भेजा। पूना को जीत कर शाइस्ताख़ां शिवाजीके महलमें रहने लगा। एक रात्रि २५ साथियों समेत मिहर शिवाजी उस महल में पहुंच गये। शाइस्तख़ां ऐसा घबराया कि एक खिड़की से कूदकर भाग निकला। कूदते समय उसकी अँगुलियां शिवा जी की तलवार से कटी गईं। उसका पुत्र तथा सम्बन्धी और बड़े २ सर्दार सब वहीं मृत्युगाल में पहुँ गये। मुग़ली सेना दुम दबाकर चलदी। इस आश्चर्य और कौतूहलजनक विजय से शिवा जी का यश, कीर्त्ति और वैभव चारों ओर विस्तृत हो गया।

बाघनख आदि के साथ गुप्तरीति से सुसज्जित हो कर शिवाजी अफ़ज़लख़ां को मिलने के लिये गया और अवसर पाकर मिलते समय गुप्त बाघनख और खंजर से अफ़ज़लख़ां को यमलोक में पहुंचा दिया। फिर उसकी सेना पर अचानक धावा करके जय प्राप्त करली। इस से शिवाजी की शक्ति, दिन दू[ni] रात चौगुनी बढ़ने लगी। बीजापुर के द्वारों [पर] जयपताका गाड़ दी, समुद्रतट के दुर्गों को ले लिया और मुग़ली प्रान्त को भी लूटने लगा॥

८. शाइस्ताखान–शिवा जी की बढ़बढ़ता [औ] वैभव की वृद्धि को देख कर औरङ्ग़ज़ेब ने उसके नाशार्थ शाइस्ताखां को भेजा। पूना को जीत कर शाइस्ताखां शिवाजीके महलमें रहने लगा। एक रात्रि २५ साथियों समेत मिहर शिवाजी उस महल में पहुंच गये। शा-इस्तख़ां ऐसा घबराया कि एक खिड़की से [भा]ग निकला। कूदते समय उसकी अँगुलियां [शि]वा जी की तलवार से काटी गईं। उसका पुत्र तथा सम्बन्धी और बड़े २ सर्दार सब वहीं मृत्युग्रास [हो] गये। मुग़ली सेना दुम दबाकर चलदी। इस और कौतुहलजनक विजय से शिवा जी [की] कीर्ति और वैभव चारों ओर विस्तृत हो

७. छत्रपति महाराज शिवाजी भोंसला–निदान औरंगजे़ब ने हार मानकर शिवाजीको राजाकी और सम्भा जी को पांच हजारी की उपाधियां दीं । १६७४ में शिवा जी ने अत्यन्त समारोह से निज राजतिलक कराया और इस प्रकार हिंदू राज्य की दक्षिण में स्थापना की ।

६ वर्षों तक वह राज्य कर सका । किंतु उसी अल्पकाल में राज्यप्रबन्ध की अद्भुत शक्ति दिखाई । यदि उस के उत्तराधिकारी उन्हीं रीतियों का अनुकरण करते तो मराठा राज्य शीघ्र नष्ट न होता । ५३ वर्षों की आयु में १६८० में शिवा जी को घुटनों की पीड़ा हुई, उस से सन्नज्वर हुआ और वह स्वराज्य को प्रचण्ड करके परलोक सिधारा ॥

८-सम्भा जी (१६८०—१६८९]--शिवा जी को अपने पुत्रकी अयोग्यता के कारण बहुत शोक था। उस में भोगप्रियता की आदत बहुत थी । राजनीति में भी अकुशल था, अपने दरबार के बड़े २ सरदारों को उस ने क्रोधित करदिया, पिताके योग्य मंत्रियोंको हटा दिया और अन्य ऐसे कर्म किये जिन से प्रजा असन्तुष्ट हो

निदान मराठों ने जिंजी के अजीत दुर्ग में शरण ली, किंतु १६९८ में वह भी फतह होगया, हौंसला न हारकर राजाराम ने सितारा में अपना राज्य जमाया। तब औरंगजेब ने उस राजधानी पर हमला किया और उसे स्वाधीन करने में भी कृतकार्य हुआ। १७०० में राजाराम की मृत्यु होगई तब उस की विधवा रानी ताराबाई राज्य करने लगी। उस ने बड़ी कुशलता, धीरता और वीरता से राज्यकार्य निबाहा। इस वीराङ्गनी रानी से उत्साहित हो कर महारटों ने औरंगजेब का ऐसा नाक में दम किया कि उसे लज्जित होकर १७०७ में वापिस लौटना पड़ा। उसके पुत्र बहादुरशाह ने साहु को छोड़कर उसे मराठों का राजा माना। दक्षिण में आ कर साहू ने ताराबाई को कुछ वर्षों के पश्चात् राज्य से पृथक् कर दिया और स्वयम् राज्य करने लगा।

(ग) अदन तथा मिश्रदेश के रास्ते से सिकन्द-रिया में माल ले जाते थे, फिर वहां से समुद्र द्वारा स्पेन, फ्रांस, इङ्गलैण्ड आदि देशों में जाता था। परन्तु ईरान, लघु एशिया, मिश्र और अरब असभ्य मुस-लमानों के हाथों में होने से व्यापार बहुत रुका हुआ था। इन कष्टों को दूर करने के लिये योरुपनिवासी ऐसे समुद्री मार्ग से भारतवर्ष के साथ व्यापार करना चाहते थे जिस पर तुर्कों का कब्ज़ा न हो।

(२) १. पुर्तगालवासियों का भारत में आगमन—१४९२ ई०-कोलम्बस-भारतीय मार्ग के ढूंढने में पहिला बड़ा यत्न स्पेन-राज्य की ओर से संसार प्रसिद्ध कोलम्बस ने किया, परन्तु अमेरिका के पूर्ववर्ती द्वीपों को भारत का भाग समझ कर उसने भूल से उन्हें पश्चिमीय भारतीय द्वीप समूह कहा। १४९७ में इटली निवासी वास्कोडीगामा पुर्तगाल के राज्य की सहा-यता लेकर मार्ग ढूँढने को चला। समुद्र पर बहुत कष्ट हुए, एक जहाज़ डूब गया, मल्लाहों ने विद्रोह कर दिया परन्तु गामा निर्भय तथा उत्साही पुरुष था।

३. वास्कोडीगामा—मल्लाहों को क़ैद कर, दिग्-दर्शक यन्त्रों को सागर में फेंक, अनभिज्ञ मल्लाहों

४. पुर्तगालियों की वृद्धि-आलमीडा (१५०८-९) नामी प्रथम गवर्नर पुर्तगाल की ओर से भारत में आया। मिश्र देशीय मुसलमानों ने अपने व्यापार का नाश होते देख पुर्तगालियों से युद्ध करने की अनेक तय्यारियां कीं, परन्तु इस बार भी वह बुरी तरह से हारे। इस गवर्नर ने व्यापार-वृद्धि करने का महान् यत्न किया।

५. आलबुकर्क (१५०९-१५) नामी गवर्नर बहुत प्रसिद्ध है। यह बड़ा बुद्धिमान्, उत्साही, दृढ़ निश्चयी, योग्य शासनकर्ता और दूरदर्शी था। (क) उसने अपने समय में (१) गोआ (२) अरब वालों से ऊर्मुज़ (३) फारसी खाड़ी (४) समाट्रा और (५) मलाक्का जीत लिये। (ख) दूसरी जातियों को भारत के साथ व्यापार करने से रोका। [ग] कालीकट के राजा को कोचीन राज्य की सहायता से जीता। (घ) मुसलमानों के साथ समुद्र पर बहुत युद्ध किये परन्तु (i) पुर्तगालियों की तोपें बन्दूकें मुसलमानों से अच्छी थीं, (ii) उनके जहाज़ भी अच्छे थे और (iii) सेना की क़वाइद तथा संग्राम शैलि बहतर थी— इस कारण सदैव अल्बूकर्क जीतता रहा (ङ) वह भारतीयों

यह देश बड़े युद्ध नहीं कर सकता था (ग) शक्तिशाली देशों का मुकाबिला-इस देशको समृद्ध होतादेख इंगलैंड तथा हालैंड निवासी भी भारत से व्यापार करने को बढ़े और यह दोनों देश पुर्तगाल से कई बातों में बढ़े हुए थे। (घ) अकुशलता-भारत में आये हुए पुर्तगाल गवर्नर आल्बूकर्क की तरह योद्धा, सुशासनकर्ता तथा बुद्धिमान् न थे, अतः राज्य बिगड़ता गया। (ङ) ईसाई धर्म प्रचारार्थ अत्याचार-आल्बूकर्क के पश्चात् के गवर्नरों ने ईसाई मत के फैलाने में ही बड़ा यत्न किया न कि राज्य और व्यापार के फैलाने में कोई कुशलता दिखाई। साथ ही वे बड़े क्रूर थे—इन लोगों ने भारतीय प्रजा पर अनेक अत्याचार करके उनको तंग किया—इस कारण जब अवसर मिलता था, तब प्रजा विद्रोह करती थी। प्रजा हाहाकार करने लगी और आल्बूकर्क की क़बर पर उसके अनुगामियों के ज़ुल्मों से बचने की प्रार्थना करने लगी। ऐसोंका राज्य नष्ट होना ही चाहिये था क्योंकि ज़ालिम कभी फूलता फलता नहीं। (च) दुष्टाचार—आचार में भारतवासी पुर्तगीज अत्यन्त गिर गए थे—उन्हें (i) गर्व बहुत था (ii) जुआ खेलने की

आदत उनमें खूब प्रचलित थी (iii) प्रायः ये लोग बड़ी शानोशौकत से रहते थे और कर्तव्य से पूर्व भोगों का विचार करते थे।

७. पुर्तगालियों का भारत के इतिहास में कार्य–(क) समुद्र पर बहुत से युद्धों में मुसलमानों को हरा के और उनके हाथ से व्यापार छीन कर उनकी शक्ति का कम कर दिया। (ख) योरुप तथा एशिया को मिला कर दोनों की उन्नति के कारण पैदा किये, (ग) राजाओं की आज्ञा से भारत, चीन, जापानादि देशों में ईसाई मत फैलाने का यत्न किया—आगरे में अकबर ने पादरियों के लिए गिर्जा बनवा दिया, फतहपुर सीकरी की विवादसभा में पादरी बड़ा भाग्य लेते थे। जैसुइट प्रचारकों तथा सेंटज़ेवियर ने आकर भारत में किन्तु खास करके मद्रास में बहुत से ईसाई बनाए (घ) योरुपियनों को भारत के धौलत तथा उसमें ईसाई मत फैलाने का मार्ग बताया।

(ii) हालैण्ड निवासी डचों का भारत में आगमन–, पुर्तगाली व्यापार के योरुपीय केन्द्र हालैण्ड के तीन

बड़े नगरों में थे, यहां से ही योरुप के उत्तरीय देशों में सामान जाता था। पुर्तगालियों से सामान लेने की अपेक्षा इन्हों ने स्वयम् भारत से व्यापार करना चाहा। उत्तरीय हिम महासागर के मार्ग से भारतवर्ष में पहुंचने का यत्न वे कुछ वर्षों से कर रहे थे परन्तु उस में अकृतकृत्य होकर रास गुड होप के रास्ते से भारत सागर में से होते हुये डचों के जहाज १५९६ में समात्रा में जा पहुंचे। अनेक कम्पनियाँ एशिया-व्यापारार्थ हालैण्ड में बनने लगीं। १६०२ में वे सब मिलकर डच ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नाम से प्रसिद्ध हुईं। ५० वर्षों में ही डचों ने लंका, समात्रा, मलक्का, लालसागर, खाड़ी फ़ारस और भारत के तटों पर अपने व्यापार स्थान बना दिये। आस्ट्रेलिया का पता लगाया, अमेरिका में न्यूयार्क का नगर बसाया, एशिया के सारे इलाके पुर्तगालियों से ले लिये— परिणाम यह हुआ कि १७ वीं शताब्दी में एशिया तथा योरप का व्यापार पुर्तगेजों के काबू से निकलकर डचों के हाथ में आगया और वे झटपट मालामाल होने लगे।

१६२३ में अम्बोयना (समात्रा का नगर है)

बढ़ती अधिक अधिक बढ़ गई। (३) छोटे देश के पास एक तो धन अधिक बहुत नहीं हो सकता फिर युद्ध में फ्रांस के नालीन राजाओं की चढ़ाई होजाती है तो यह देश बहुत खर्ची होगया। (४) उन का व्यापार गर्म मसाले आदि कीमती पदार्थों और चीजों के खरीदने व अन्य वस्तुओं का था अतः उन के व्यापार को बन्द करने से इंग्लैंड जैसे देश को हानि नहीं पहुंच सकती थी। (५) जहां जहां डच गये, वहां २ उन्होंने अपनी सभ्यता नहीं फैलाई— अतः वे राज्य स्थिर न कर सके। (६) अंग्रेज उन के मुकाबिले में जीत कर फ्रांसीसियों को भी भारत में हरा रहे थे, और क्लाईव ने डचों का प्रसिद्ध नगर चिनसुराह भी जीत लिया। १७६३ से १८१९ तक डचों के सब इलाके अंग्रेजों ने अधीन कर लिये और सन्धि होने पर केवल सुमात्रा तथा जावा उन को दे दिये गए। जिस से भारतवर्ष में अब उन का कोई भी चिन्ह नहीं रहा।

१०. फ्रांस निवासियों का भारत में आगमन— डच तथा अंग्रेजों को भारत के व्यापार से बहुत

बिगड़ने लगी परन्तु गवर्नर मार्टिन ने उस में जान डाल दी:—(i) कर्नाटक के नवाब से पूदोचरी (पांडीचरी), बिझौर आदि मोल लिये, (ii) पांडीचरी को बड़ा नगर बनाने का यत्न किया, (iii) इस चतुर हाकिम ने सेना में भारतवासियों को भी दाखिल कर के दिखा दिया कि रोटी के टुकड़े के लिये भारतवासी अपने देश के विरुद्ध भी जान देने-को उद्यत हैं; (iv) व्यापार की भी इस ने खूब वृद्धि की (v) शिवा जी के कर्नाटक के हमले में इस ने बुद्धिमत्ता से पांडीचरी को बचाये रखा, (vi) इस बढ़ते हुए नगर को डच नहीं देख सकते थे अतः १६९७ के युद्ध में पांडीचरी जीता गया–मार्टिन तथा अन्य फ्रांसीसी पकड़ कर स्वदेश में भेज दिये गये-४ वर्षों के पश्चात् सन्धि होजाने के कारण यह नगर फ्रांस को वापिस दे दिया गया जिस पर मार्टिन को वहां का गवर्नर बनाकर दोबारा भेजदिया गया। (vii) फ्रांसीसियों की कोठियां मूसल पटम चन्द्रनगर, सूरत, कालीकट, बालासौर, ढाका, पटना कासिमबाजार में मार्टिन के समय होगईं और १७०६ में मार्टिन की मृत्यु पर ४० सहस्र पुरुषों

१५· आङ्गल की वृद्धि के कारणः—

(क) औरंगज़ेब की मृत्यु पर राज्य में निर्बलता आने से देश में खलबली मचने लगी—लुटेरे और चोर उचक्के बढ़ने लगे—उनसे अङ्गरेज़ों को अपनी कोठियां स्वयं बचानी पड़ीं। (ख) मद्रास, बम्बई, कलकत्ता में दुर्ग बनाए गये और इन्हें सेना से सुरक्षित किया गया।

(ग) अपने इलाक़ों में राज्य, न्याय तथा आय एकत्रित करने का काम आङ्गल स्वयम् करते थे और यह अधिकार उस खिलबली में अधिक बढ़ गए।

(घ) उपरोक्त तीन स्थानों में एक प्रेज़ीडेन्ट (प्रधान) कम्पनी के योग्य एजेन्टस् की सभा की सहायता से और इंग्लैण्ड में कम्पनी के अधिकारियों की आज्ञा से ही सब काम करता था। बम्बई और मद्रास के साथ प्रेज़ीडेन्सी का शब्द तब से ही प्रयुक्त होने लगा है। फिर १७४४ तक कम्पनी का सामान्य इतिहास है, उस वर्ष से विशेष घटनाएं होने लगीं॥

२. नानक की शिक्षा—हिन्दु धर्म के संशोधनार्थ
इधर कार्य पंजाब में नानकदेव ने किया वह श
[या से भारत में किसी ने नहीं किया था। यह
कर कि उस जगदीश्वर ने राम, कृष्ण, ब्रह्मा, विष्णु
[्वर, ईसा और मुहम्मद को पैदा किया, अतः उन
[न जीवों की पूजा त्याग कर उस परब्रह्म की पूजा
[नी चाहिये—नानक ने भूले भटके हिन्दुओं और मु
[मानों को सत्य मार्ग पर लाने का यत्न किया। मूर्ति
[ा, तीर्थों, यज्ञों, रस्मों वेद तथा क़ुरान के पाठमात्र
[की खण्डन किया—कहा कि लोग एक परमेश्वर की
उपासना करें इसी से सुख होगा।

ब्राह्मण, शूद्र, मुसलमान सब एक परमेश्वर के पुत्र हैं—
[न में कोई ऊँच नीच का भेद नहीं, अतः परस्पर घृणा
[था अत्याचार का करना पाप है। अपने जीवन तथा
[वाक्यों में इस बात पर अति बल दिया कि संसार को
असार समझ कर योगी, जैनियों और वेदान्तियों की
[भाँई नहीं त्यागना चाहिए परन्तु सदाचार, उपासना,
[...] का सेवन करते हुए जीवन व्यतीत करना
[...] नके गद्दी [...]
की सद्दर चल पड़ा जिस

पालक आज्ञाकारी शिष्य अमरदास को उत्तराधिकारी बनाया। (१) गुरु अमरदास ने सिखधर्म को बहुत उन्नत किया यहाँ तक कि कुछ पहाड़ी राजाओं को अपना अनुयायी बना कर सहस्रों रुपयों का चढ़ावा लंगरों के लिए लिया, (२) गोविंदवाल में अपना निवासस्थान बना कर सिक्खों के लिए यात्रास्थान बना दिया; (३) अकबर से भूमि खरीद कर अमृतसर के नगर की नींव उसी गुरु ने रक्खी। (४) सती की रसम के विरुद्ध आवाज़ उठाई। (५) अकबर के पक्ष में चित्तौड़ जीतने की प्रार्थना इस गुरु ने की—जब अकबर जीत गया तो गुरु के साथ बादशाह की मित्रता होगई, इस कारण धनियों में भी सिक्ख धर्म का प्रचार हुआ।

६. गुरुरामदास (१५७४-८२)—(१) यह गुरु जाति के क्षत्री और गुरु अमरदास के जामाता थे। (२) अकबर बादशाह ने लाहौर जाते समय उनका दर्शन किया, उन्हें अमृतसर की भूमि दान में दी और बहुत सा धन दौलत पेश किया (३) गुरु ने वहाँ तालाब बनवाया (४) नगर का नाम रामदासपुर रक्खा (५) अब से सिक्खों के गुरु सद्गुरु के अतिरिक्त सच्चे पादशाह भी बन गये।

अपने मुरीदों में व्यापार का उत्साह पैदा किया-इस से उन्हें धनाढ्य, उत्साही, घोड़ों पर चढ़ने वाले, शिनिव और पौराणिक धर्म की कूप-मण्डूक रीति को त्य करने वाला बना दिया (=) चूंकि इस गुरु ने जहांगी के ज्येष्ठ पुत्र .खुसरो की कामयाबी में प्रार्थना की थी, इसलिए .खुसरो के स्थान पर जब जहांगीर ही बादशाह बना तो उसने गुरु को पकड़वा भेजा और फिर मरवा कर नदी रावि में फेंकवा दिया-यद्यपि गुरु अर्जुन यह नाशवान शरीर छोड़ गए तथापि उनका काम और नाम नष्ट नहीं हुआ-उन्होंने सिक्खों की एक बलवान् कौ बनाने की नीव रक्खी थी-जो आगे अति दृढ़ हो गयी

७. हरगोविन्द (१६०६-४५)-यद्यपि हरगोविंद की आयु ग्यारह वर्षों की थी, तथापि वह अपने पिता की मृत्यु का बदला निकालना चाहता था-उसने दो तलवारें शरीर के साथ बांधी—एक पिता का बदला निकालने के लिये और दूसरी मुसलमानों के नाशार्थ। इस लि [illegible] रि क [illegible] माथ = तलवार, [illegible] विन्द ने रखने [illegible]

अपने मुरीदों में व्यापार का उत्साह पैदा किया-इस से उन्हें धनाढ्य, उत्साही, घोड़ों पर चढ़ने वाले, शिक्षित और पौराणिक धर्म की कूप-मण्डूक रीति को त्याग करने वाला बना दिया (=) चूंकि इस गुरु ने जहांगीर के ज्येष्ठ पुत्र ख़ुसरो की कामयाबी में प्रार्थना की थी, इसलिए ख़ुसरो के स्थान पर जब जहांगीर ही बादशाह बना तो उसने गुरु को पकड़वा भेजा और फिर मरवा कर नदी रावि में फेंकवा दिया-यद्यपि गुरु अर्जुन यह नाशवान् शरीर छोड़ गए तथापि उनका काम और नाम नष्ट नहीं हुआ-उन्होंने सिक्खों की एक बलवान् क़ौम बनाने की नींव रखदी थी-जो आगे अति दृढ़ हो गयी।

७. हरगोविन्द (१६०६-४५)-यद्यपि हरगोविंद की आयु ग्यारह वर्षों की थी, तथापि वह अपने पिता की मृत्यु का बदला निकालना चाहता था-उसने दो तलवारें शरीर के साथ बांधी—एक पिता का बदला निकालने के लिये और दूसरी मुसलमानों के नाशार्थ। इस लिए माला और कमण्डलु के साथ २ तलवार, छत्र, कलगी और बाज़ भी हरगोविन्द ने रखने शुरु किये—अपने मुरीदों को हथियार धारण करने और

८. गुरु हरराय (१६४५–६१)–गुरु हरगोविन्द का पोता हरराय गुरु बना। यह अत्यन्त कोमल हृदय और साधु आचार के थे । अहिंसा परम धर्म है–इस सत्यके मानने वाले थे–इस कारण उन्हें युद्धों से घृणा थी। परन्तु दाराशिकोह को उन पर बड़ा विश्वास था। जब औरंगज़ेब से भाग कर दारा पंजाब में पहुंचा तो गुरु की सहायता मांगी–गुरु की सेना की सहायता से औरंगज़ेब के हाथ से दारा निकल गया–औरंगज़ेब ने इस विमुखता का उत्तर मांगा–रामराय ने स्वपुत्र की ज़मानत रूप में बादशाह के हस्तगत किया और आख़िर सिखों के संगठन को बढ़ाते हुए शान्ति से परलोक सिधारे।

गुरु हरकिशन (१६६१–६४)– छः वर्षों की आयु में गद्दी पर बैठा और बाल्यावस्था ही में चेचक से मरगया।

९. गुरु तेग़ बहादुर १६६४–७५ गुरुका पहिला नाम देग़ बहादुर था–अर्थात् जो अतिथि सेवा, दया और उदारता में बहादुर था–इसी कारण पहिले पहल सिक्ख लोग उनके पास एकत्र हुए–दर्बार में इस गुरु ने बड़ी ...लौकिक दिखाई–इस कारण–मरने बादशाह का

हिन्दु भाव को जगा दिया। मालवे और मांझे के जाटों में खून जोश मारने लगा, बस अब कोई सेनापति उन्हें एकत्र करने वाला चाहिये था- वह सौभाग्य से तेग बहादुर के पुत्र गोविंद में मिल गया- इस प्रकार आत्मत्याग कभी निष्फल नहीं जाता।

१०. गुरु गोविंदसिंह-१६७५--१७०८-सिक्ख गुरुओं ने अपने मुरीदों को जो शिक्षा दी थी उसका प्रकाश गोविंद के समय हुआ और जो कुछ अन्य गुरुओं ने वाणी से कहा था उस को इस शेर गुरु ने कर दिखाया। हिंदुभाव के स्थिर रखने वाले, उनकी बिगड़ी दशा को सुधारने वाले, उनकी हारी बाज़ी को जिताने वाले, उनकी डावाँडोल नाव को पार लगाने वाले, महावीर, धीर, बुद्धिमान्, तेजस्वी दूरदर्शी, सच्चे सुधारक, और उदार नेता गोविन्द और शिवा जी के अतिरिक्त अन्य कोई नहीं हुआ। इन महाकर्मों को करने के लिए २० वर्षों तक पर्वतों में गोविन्द छिपा रहा। सुधार के सारे साधन वहीं पर सोचे। जात पात के सब बन्धन शिष्यों से छुड़वाए-उन को 'कृतनाश, कर्मनाश, धर्मनाश, कुलनाश के सिद्धान्त का मुरीद बनाया-सैन्य उत्साह पैदा करने के लिए आत्मत्याग सिखाया और अन्त में

चिड़ियों से हिन्दुओं को बाज़ बनाने में कामयाब हुआ। सिख नाम से उन को सिंह नाम दिया और पांच लक्षण केश, कंघा, कृपान, कड़ा और कच्छ का सामान प्रत्येक को रखने की आज्ञा दी। अमृतसर को पुन यात्रा-स्थान बनाया और ग्रन्थ साहब बनाकर उस की पूजा आरम्भ करवाई।

अपनी समृद्ध शक्ति को अनुभव करके सिक्खों को लूट मार करने की आज्ञा गुरु गोविन्द ने दे दी-मुग़ली सेना भी मुक़ाबले के लिये आगई। माता ग्जरी, दो छोटे बालक सरहन्द के नगर में एक ब्राह्मण के घर छिपा दिये, परन्तु देश हत्यारे ब्राह्मण ने बालकों को मुग़ल हाकिम के हवाले कर दिया। मुग़लों ने उन को मुसलमान बनने की प्रेरणा की परन्तु जब उन्होंने न माना तो उन के इर्द गिर्द दीवारें चुनवा दीगई, सारा पंजाब इस अत्याचार से भड़क उठा। उधर से गुरु गोविन्द ने मुक़ाबले की शक्ति न देख कर दक्षिण में भाग जाना उचित समझा। यहीं १७०८ में उस का देहान्त हुआ, परन्तु गुरु के उत्साह और मुग़लों के अत्याचार ने पंजाब में जोश भर दिया था।

११-बन्दा [१७०८-१६] गुरु गोविन्द ने बन्दा नामक

सिक्ख भी इसके प्रमाण पर यहां के उपद्रवियों का
कर लेना-देना छोड़कर अपना २ सामान लेकर समूहों
में बन्दा के पास आ गये। जो सिक्ख सिरस में
थे वे भी सामान आदि बेचकर वहां आ पहुंचे ताकि
मुसलमानों से धर्मयुद्ध करके उन के अत्याचारों का
बदला लेवें-बादशाही थानों और ग्रामों का लूटना आरम्भ
किया, और हर तरह से सिक्खों ने मुसलमानों पर खूब
हाथ चलाए। 'वाह गुरु जी का खालसा' और वाह गुरु
जी की फतह' का नारा करते हुए जहां सिक्ख सिपाही
पहुंचते थे लोग थर २ कांपने लगते थे। कैथल,
समाना, घुरम, अम्बाला, फजपुर, मुस्तफाबाद, सधोरा
आदि ग्रामों और नगरों को लूट कर प्रत्येक मुसलमान
का घात किया गया। इन कार्यों को सुनकर बहुत से हिन्दु
बन्दा के साथ हो गये और वह सरहन्द के नगर को
लूटने के लिये चला ताकि गोविन्द के निरपराधी बाल-
कों के क्रूर घात का बदला लेवे। सिक्खों और मुसल-
मानों में घोर संग्राम हुआ परन्तु वीर सिक्खों ने अपने
नवीन जोश के कारण विजय पाई। तीन दिन तक नगर
में लूट रही और घात हुए। अन्त में प्रत्येक ग्राम
को काबू करने के लिये सिक्ख सवार दौड़े और सत-

दिखाई पर अपने धर्म-गुरुओं की मृत्यु ने उन्हें मानव [illegible] बना दिया।

१२-सिक्खों में शान्ति (१७१६-४८)-बादशाही सेना ने पंजाब में घर घर जा २ सिक्ख को चुन २ कर मारा-सिक्खों ने फिर के पास रहना छोड़े और अन्य [illegible] की भाँति रहने लगे। बहुत से सिक्ख पर्वतों में जा छिपे परन्तु वे मुसलमानों पर बदला निकालने के लिए सदा तय्यार रहते थे। जब बादशाह मुहम्मदशाह के समय में जब सब प्रांतिक हाकिम स्वतन्त्र होने लगे और फिर नादिरशाह के रूप में भारत पर एक और विपत्ति आई तो सिक्ख अपने पर्वतीय घरों से निकल पड़े। खुल्लमखुल्ला अमृतसर में आकर एकत्र होने लगे—यहाँ विद्युत की न्याईं चमके, वहाँ बादल की न्याईं गर्जे और पंजाब के सब मुसलमानों पर आफ़त और क़यामत ढादी। कई बार लाहौर के बाज़ारों को दिन के प्रकाश में धावा मार कर लूट जाते थे। मुसलमानों ने धर्मयुद्ध समझ कर तय्यारियां कीं परन्तु युद्धों में मुसलमान हार गये—इस प्रकार सिक्खों को दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति होने लगी।

१३. सिक्खों की उन्नति (१७४८–६८

वाला एक अपूर्व शक्तिशाली पुरुष रणजीतसिंह के रूप में निकला, जिसने सिक्खों का राज पंजाब में फैला दिया।

अध्याय ११।

मुग़ल वंश का ह्रास।

१. बहादुरशाह १७०७–१७१२ ।

औरंगज़ेब की मृत्यु पर उसके तीन पुत्रों मुअज़्ज़िम, आज़म और कामबख्श के दरमियान राजगद्दी के लिये झगड़ा हुआ। आगरे के निकट मुअज़्ज़िम ने आज़म को युद्ध में पराजित किया बल्कि दो पुत्रों सहित उसको मार डाला। फिर कामबख्श ने दक्षिण के राज्य पर संतोष न करके विरोध किया किंतु वह युद्ध में परास्त होकर मारा गया। इस प्रकार औरंगज़ेब के पुत्र मुअज़्ज़िम ने अपने पिता की न्याईं भाइयों को मार कर राज्य प्राप्त किया। किंतु वह राजकार्य्य में निपुण न था, इस कारण प्रायः मंत्रियों के हाथों चढ़ा रहता — जिन में से ज़ुल्फ़क़ार ने बड़ा ज़ोर पकड़ा।

गये—बहादुरशाह कुछ समय तक दक्षिण में ही रहा और १७१२ में लाहौर में उसका देहान्त हुआ।

२. जहांदार शाह १७१२-१७१३ ।

बहादुरशाह की मृत्यु पर उस के चारों पुत्रों में राज्य के लिये युद्ध हुए। मन्त्री ज़ुल्फ़िक़ारख़ां की सहायता से ज्येष्ठ पुत्र जहांदारशाह ने अपने तीन भाइयों को मार कर राज्य प्राप्त किया। यह देर तक राज्य न कर पाया था कि जहांदार के एक भतीजे फ़र्रुख़सियर ने जो बङ्गाल का हाकिम था अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये बिहार के हाकिम सय्यद हुसैनअली और इलाहाबाद के हाकिम सय्यद अब्दुल्ला (यह दोनों सगे भाई थे) की सहायता से उस ने आगरे पर हमला किया। जहांदारशाह डरपोक निकला, इस लिये फ़र्रुख़सियर देहली तक चढ़ आया और छिपे हुए जहांदार और ज़ुल्फ़िक़ार को पकड़वा कर विजेता फ़र्रुख़सियर ने मरवा डाला।

३. फ़र्रुख़सैयर १७१३-१९ ।

(i) फ़र्रुख़सैयर ने पूर्वोक्त दो सैयदों की सहायता से

गये—बहादुरशाह कुछ समय तक पञ्जाब में ही रहा और १७१२ में लाहौर में उसका देहान्त हुआ।

२. जहाँदार शाह १७१२-१७१३।

बहादुरशाह की मृत्यु पर उस के चारों पुत्रों में राज्य के लिये युद्ध हुए। मन्त्री ज़ुल्फ़िक़ारख़ाँ की सहायता से ज्येष्ठ पुत्र जहाँदारशाह ने अपने तीन भाइयों को मारकर राज्य प्राप्त किया। वह देर तक राज्य न कर पाया था कि जहाँदार के एक भतीजे फ़र्रुख़सियर ने जो बङ्गाल का हाकिम था अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने के लिये बिहार के हाकिम सय्यद हुसैनअली और इलाहाबाद के हाकिम सय्यद अब्दुल्ला (यह दोनों सगे भाई थे) की सहायता से उस ने आगरे पर हमला किया। जहाँदारशाह बड़ा भीरु निकला, इस लिये फ़र्रुख़सियर देहली तक बढ़ आया और छिपे हुए जहाँदार और ज़ुल्फ़िक़ार को पकड़वा कर विजेता फ़र्रुख़सियर ने मरवा डाला।

३. फ़र्रुख़सियर १७१३-१९।

(i) फ़र्रुख़सियर ने पूर्वोक्त दो सैयदों की सहायता से

हुआ । (iii) बादशाह दोनों भाइयों को दिल्ली में नहीं रखना चाहता था, इसलिये चतुर हुसैनअली को दक्खिन का हाकिम बना दिया । हुसैनअली ने भी यह चाल समझ ली और बादशाह को स्पष्ट कह दिया कि यदि उनके विरुद्ध बादशाह कोई कर्म करेगा तो हुसैनअली तीन हफ्तों में दिल्ली पहुंच जायगा । बादशाह ने इस धमकी की कुछ परवा न की, गुजरात के हाकिम दाऊदखां को गुप्तपत्र भेजा कि यदि वह हुसैनअली को मारडाले तो उसे दक्खिन का हाकिम बना दिया जायगा किन्तु अभागा दाऊदखाँ मारा गया । (IV) इस पर बादशाह ने हुसैनअली को मारने के लिये महरट्टों से सहायता मांगी परन्तु चतुर सय्यद ने महरट्टों को बहुत से अधिकार देकर अपनी ओर करलिया । हुसैनअली को बादशाह के सारे विरोध का पता लग गया था, फिर साथ ही महरट्टों को जो अधिकार दिये थे उन को अंगीकार न करके बादशाह ने सय्यद को रुष्ट किया । तब तो सय्यद ने अपनी सेना तथा 20000 महरट्टी सेना-जो वीर पेशवा बालाजी विश्वनाथ के अधीन थी—के साथ दिल्ली पर हमला किया और बादशाह को क़ैद करके मरवा डाला ।

...तक अवध में मनमानी करते रहे, तब उस देश
को अंग्रेज़ी इलाक़े में मिला लिया गया ।

८. बंगाल का सूबेदार मुर्शिदकुलीखाँ १७०२से१७२५ तक बड़ी होशियारी के साथ शासन करता रहा फिर उसका दामाद शुजाउद्दौला १७३९ तक सूबेदार रहा, परन्तु एक वीर और अनुभवी अमीर अलीवर्दी खान शुजाउद्दौला के पुत्र को हटा कर सूबेदारी दबा बैठा और मुहम्मदशाह ने उसे ही हाकिम मान लिया, उसी वर्ष पश्चिम से भारत पर नादरशाह के रूप में एक आपत्ति आई ।

९. नादर—यह नामी विजेता ख़िज़र खाड़ी के तट पर वास करने वाले एक गड़रिये का पुत्र था-इस ने ईरान देश को अफ़ग़ानों के आक्रमण से बचा कर स्वयं शासित किया, फिर बदला निकालने के लिए अफ़ग़ानिस्तान को भी स्वाधीन करके अफ़ग़ानों को दण्ड दिया, अन्ततः ईरानियों और कज़लबाशियों की बृहत् सेना ले कर भारत पर चढ़ आया ।

१०. नादरशाह के हमले के कारण—(१) देहली राज्य की कमज़ोरी नादर से छिपी न थी ।

११. नादर की सवारी -अटक पार हो कर नादर मुंह उठाये आगे बढ़ता आया किन्तु देहली-अधीश महम्मदशाह भोगों में मस्त था, उस का यह असत्य विचार रहा कि नादर की क्या मजाल है कि वह देहली पर आक्रमण कर सके। किन्तु जब नादरी सेना कर्नाल तक पहुंचने पर आई तो महम्मदशाह नें उस का मुकाबिला किया। भोगी बादशाह पूर्णतया परास्त हो कर नादर का क़ैदी बना और उस के जलूस के साथ देहली में प्रविष्ट हुआ। नादर नें पहिले तो प्रजा को कष्ट न देने का प्रण किया किन्तु उस के सिपाहियों के अत्याचार करने पर जब देहली निवासियों नें कइयों को मार डाला तो क्रुद्ध हो कर नादर ने सर्व साधारण के घात की आज्ञा दी-एक दिन भर रक्त की नदियां बहती रहीं, हजारों निर्दोषी नर नारियों का वध हुआ, लूट का बाजार गर्म रहा, अनगणित अत्याचार हुए, किन्तु निर्दयी नादर, आग लगा कर तमाशा देखता रहा, अन्ततः बहुत सा लूट का सामान ले कर लौट गया, शाहजहांवाला 'मोर का सिंहासन' भी साथ ले गया।

समान यह भी अपने तईं अपूर्व विजेता बनाना चाहता था–भारत पर छः बार चढ़ाई की किन्तु पहिले हमले में राजपुत्र अहमदशाह और मन्त्री कमरुद्दीन की वीरता और बुद्धिमत्ता के कारण सर्हन्द पर बुरी तरह से हारा (१७४८)।। यह अन्तिम लड़ाई थी जिस में मुग़लों का विजय हुआ–इससे मुग़लों का बुझता हुआ दीपक कुछ दिनों के लिये चमक उठा किन्तु बुद्धिमान् मन्त्री के युद्धमें मरने से राज्य को बहुत हानि हुई । इसी वर्ष अयोग्य बादशाह और नीतिनिपुण निज़ाम की मृत्यु हुई ।

अहमदशाह १७४८-१७५४

१४. अब्दाली का २ य हमला—महम्मद शाह का पुत्र अहमदशाह बादशाह बना, इस बादशाह का जामी-थत्र, नाम का हमनाम बादशाह अहमदशाह अब्दाली था जिसने अब दूसरी बार भारत पर हमला किया और १७४८ में बादशाह ने उसे लाहौर और मुलतान के सूबे देकर सुलह की ।

१५. ग़ाज़िउद्दीन–निज़ामुलमुल्क का ज्येष्ठ पुत्र ग़ाज़िउद्दीन–पिता के देहान्त पर राज्य करने के

समाम यह भी अपने तईं अपूर्व विजेता बनाना चाहता था–भारत पर छः बार चढ़ाई की किन्तु पहिले हमले में राजपुत्र अहमदशाह और मन्त्री कमरुद्दीन की वीरता और बुद्धिमत्ता के कारण सर्हिन्द पर बुरी तरह से हारा (१७४८)। यह अन्तिम लड़ाई थी जिस में मुग़लों का विजय हुआ–इससे मुग़लों का बुझता हुआ दीपक कुछ दिनों के लिये चमक उठा किन्तु बुद्धिमान् मन्त्री के युद्ध में मरने से राज्य की बड़ी हानि हुई। इसी वर्ष अयोग्य बादशाह और नीति निपुण निज़ाम की मृत्यु हुई।

अहमदशाह १७४८-१७५४

१४. अब्दाली का २ य हमला—महम्मद का पुत्र अहमदशाह बादशाह बना, इस बाद आमी शत्रु उस का हमनाम बादशाह ... अब्दाली था जिसने अब दूसरी बार भारत ... किया और १७४८ में बादशाह ने उसे लाहौर ... तान के सूबे देकर सुलह की। ......

फिर ग़ाज़िउद्दीन ने रघोनाथराव को पञ्जाब पर हमला करने के लिये प्रेरित किया। महरट्टे तीमूर की सेना समेत भगा कर सारे पंजाब पर राज करने लगे किन्तु यह घटना दो दिन की चांदनी और फिर अंधेरी रात साबित हुई, क्यों कि महरट्टों से बदला लेने के लिये अब्दाली ने चौथा हमला किया और पानीपत पर महरट्टों की पराजय होने से हिन्दू राज्य की आशाओं का पहाड़ चिकना चूर होगया।

१९. ग़ाजिउद्दीन ने अपने अत्याचारों से देहली में घहलका मचा दिया था। सब ओर अराजकता और अत्याचार के दृश्य दिखाई देते थे, निदान निर्दयी बादशाह का घात करके अपने पापों की नाव भरली और फिर बादशाह के धड़ को जमना नदी में (१७५९ में) फिंकवा दिया। साथ ही कामबख्श के पुत्र को शाहजहान के नाम से सिंहासन पर बैठाया, परन्तु निदान उसे देहली से भाग कर सूरजमल के पास शरण लेनी पड़ी। इस आपाधापी—परस्पर लड़ाई झगड़ों से लाभ उठा कर अंग्रेज़ लोग बंगाल और मद्रास में बली होगए-यह बात उनके वृत्तान्त में देखो।

शाहआलम और अन्तिम बादशाह ।

२०. अब्दाली का हमला—१७६० में अहमदशाह अब्दाली ने देहली को लूटा किन्तु फिर उसने अनूपशहर में लश्कर डाला ।

महरट्टों के सेनापति विश्वास राव ने देहली को फ़तह करके शाहआलम के पुत्र जवान बख़्त को सिंहासन पर बिठा दिया किन्तु कइयों की यह सम्मति थी कि विश्वास राव को ही महाराज बनाया जावे । पर यह बात अब्दाली के होते हुए अनुचित समझी गयी । पानीपत के विजय के पश्चात् अब्दाली ने भी जवान बख़्त को स्थिर रखा, यद्यपि असली बादशाह शाहआलम ही था ।

२१. शाह आलम देहली में—इस वर्षों से अधिक शाहआलम अपने राज्य से बाहिर आवारह फिरता रहा । जब अंग्रेज़ों के जीतने में नाकामयाब हुआ, तो अलाहाबाद में १७७१ तक अंग्रेज़ों से बंगाल आदि प्रान्तों के कर में से भाग लेता रहा । देहली में नजीबुद्दौला और जवान बख़्त कुछ चतुराई से राज्य करते रहे, अहमदशाह ने एक बार फिर हमला किया

जिस में उसने सिक्खों की ताड़ना की; किन्तु अब वे इसे आक्रमणों से नष्ट नहीं होने लगे थे।

१७७१ में देहली की विचित्र दशा थी, महरट्टों के क़ब्ज़े में सारा नगर था, युवराज और राज-परिवार क़िले में रहते थे, इस पर महरट्टों ने शाहआलम को कह सुन कर उसे देहली आने पर प्रेरित किया। नजीबुद्दौला का देहान्त होचुका था और उसका पुत्र ज़ाब्ता ख़ान मन्त्री बना था किन्तु यह बादशाह और मन्त्री व मुरक थे। बादशाह शाहआलमके देहली आने पर महरट्टों का बल अधिक बढ़ गया क्योंकि सारा राज्यकार्य्य बादशाह के नाम में शूरवीर, नीतिज्ञ, महदाजी सिन्धिया ही करता था।

२२. ग़ुलामक़ादर के अत्याचार—ऐसे शाहआलम का क्या इतिहास हो सकता है? इतना कहना पर्याप्त होगा कि यह बहुत दुर्भाग्य बादशाह था, इसने अपने दीर्घजीवन में बहुत उतार चढ़ाव देखे। जब कुछ काल के लिये महरठे देहली से चले गए तो ज़ाब्ता ख़ान के ज्येष्ठ पुत्र ग़ुलामक़ादर ने देहली के राज्य पर हाथ मारा, बूढ़े बादशाह से राज्यकोष लेने के लिये उसके पुत्र पौत्रों को उसके सामने ही

बहुत कष्ट दिये। राजपुत्रियों का अपमान किया, राज सिंहासन की अप्रतिष्ठा की, फिर बादशाह का बहुत अपमान करते हुए बड़ी क्रूरता के साथ खंजर से आँखें निकाल लीं। निदान हतभाग्य, निःसहाय अन्धे बादशाह को महरठों ने ज़ालिम ग़ुलामक़ादर की बन्दी से छुड़वाया, तब राक्षस को पकड़ कर सन्धिया ने उचित कष्ट दिये और फिर उसका सिर कटवा कर अन्धे बादशाह के चरणों पर जा रखा। देहली के असली शासक महरटे ही थे किन्तु १८०१ में लार्डलेक ने देहली फ़तह करली, मुल्क का प्रबन्ध स्वयं करने लगा और बादशाह को पेन्शन देकर पृथक् कर दिया।

२३. मुग़लवंश के अन्तिम बादशाह—१८०६ में शरीर त्याग करके बादशाह ने इन उतार चढ़ावों से अन्ततः मुक्ति पाई। तब शाहआलम का दूसरा पुत्र अकबर नाम मात्र में १८३६ तक राज्य करता रहा, वस्तुतः वह अँग्रेजों से वज़ीफ़ा लेता था। फिर उसका पुत्र महम्मद बहादुरशाह मुग़ल वंश का अंतिम बादशाह हुआ। १८५७ के विद्रोह में उसके पुत्र और पोते को कप्तान हाडसन ने गोली से मार कर शाही वंश का

नाश किया, साथ ही बादशाह को क़ैद करके ब्रह्मा में भेज दिया गया। तब से इंग्लैण्ड के राजा ही भारत के राजराजेश्वर हुए।

Ring out the old, ring in the new.

२४. नये राज्य की तय्यारियां—अब पता लग गया होगा कि औरंगज़ेबकी मृत्युके पश्चात् राजगद्दी के लिये राजपरिवार में संग्राम होते रहे, इन में अमीरों वज़ीरों की चांदी रही, ज़ुल्फ़िक़ार, सय्यद, आसफ़ जाह, ग़ाज़िउद्दीन जैसे मन्त्रियों के हाथों में बादशाह कठपुतलियों की तरह नाचते रहे। कई मन्त्रियों ने बादशाहों को क़ैद किया, अन्धा किया या मार डाला, दूसरे सरदारों ने यथाशक्ति देश दबा लिया।

घर की फूट को देख कर अपने अत्याचारों का बदला लेने पर तुले हुए राजपूतों, सिक्खों, जाटों, मरहटों ने स्वतन्त्रता धारण की, तब मुसलमान सूबेदारों के साथ इन के युद्ध होने लगे। किन्तु देश में उस समय फ़्रांसीसी और अंगरेज़ भी मौजूद थे जिन्होंने उस निर्बलता के समय अपने दुर्ग बना

लिये और सेनाएं रख कर, धुपके २ शक्ति बढ़ा ली, देशी राजाओं को एक दूसरे के विरुद्ध सहायता देकर वे बलवान् होते गये, उन के पास धन, सेनाएं और देश बढ़ते गये, उन्हों ने अपनी शक्ति अनुभव करली, तिस पर विजय की अपूर्व इच्छा उन में प्रज्वलित होगयी, बस अब क्या था? सिक्खों, मरहटों, और मुसलमान सूबेदारों के साथ २ अङ्गरेज़ भी राज्य प्राप्ति का यत्न करने लगे। उन्होंने कई रियासतों को मदद दी। सहायता लेने वाले राजाओं की निर्बलता भी बुद्धिमान् अङ्गरेज़ों को मालूम थी-उस निर्बलतासे लाभ उठा कर अपना राज्य बढ़ा लिया इस नये विजय का मूलमन्त्र देशनिवासियों की अदूरदर्शिता, परस्पर फूट, देश माता के हित का अभाव और विशेष करके देहली राज की कमज़ोरी थी। आज कल भी तो जर्मनी, फ्रांस, पुर्तगाल वालों की कोठियाँ भारत में हैं। चन्द्रनगर, पांडीचरी, गोआ आदि नगर भी उनके पास हैं-वे इस देशमें अब क्यों राज नहीं कर सकते? कारण कि अंग्रेज़ों का राज्य बहुत बली है। उस समय देहली के राज्य में बल न था कि वह इन साहसी योरुपीयों को रोक सकता।

२५. दो मुसलमानी साम्राज्यों में समानताएं- भारतवर्ष में मुसलमानी राज्य का हम संक्षिप्त वृत्तान्त दे चुके हैं, उस के पाठ से ज्ञात हुआ होगा कि मुसलमानों के विजय १००० ई० से आरम्भ हुए, किन्तु राज्यस्थापन करने में वे १२०६ ई० में ही कामयाब हुए। मुहम्मदतुगलक के समय ही राज का विस्तार हुआ और उसी के समय में राज्यभङ्ग हो गया, फिर थोड़ी बहुत शक्ति के साथ १५२६ तक देहली में पठानों का राज्य रहा। उसी वर्ष बाबर ने मुग़ल वंश की स्थापना की, इस के वंश में पांच शक्तिशाली बादशाह हुए। १६८८ तक राष्ट्र का विस्तार होता गया किन्तु फिर ह्रास हुआ, १७०७ तक उनके राज्य का वास्तविक अन्त होगया किन्तु १८५७ तक देहली में वे अवश्यमेव नाममात्र राज्य करते रहे। उन पठानी और मुग़ली साम्राज्यों में कुछ समानताएँ हैं जैसे:

(i) दोनों की राजधानी देहली रही।

(ii) दोनों की स्थापना देशविद्रोह के कारण हुई।

(iii) दोनों के अन्तिम बादशाह निर्बल थे—

इस कारण प्रान्तिक सरदार स्वतन्त्र होगए और एक दूसरे से लड़ कर देश में कष्टों का पहाड़ लाए ।

(IV) दोनों के ह्रास का एक कारण आर्यों की आपत्ति—स्वतन्त्र राज्य के लिये नवीन मत थे।

(V) दोनों साम्राज्यों की जड़ों को खोखला करने के लिये तीमूर, नादर और अब्दाली के भीषण आक्रमण हुए ।

(VI) दोनों ने ही दक्खन को फ़तह करने से राज्य का विस्तार किया किन्तु इतने विस्तृत राज्य के शासन करने में उनके राजा अशक्त थे ।

(VII) दोनों के समय में साधारण किसान लोगों को बहुत कष्ट न थे—ग्रामीन पंचायतें मौजूद थीं, जो छोटे २ प्रजातन्त्र राज्य (Republics) होने से ग्रामीणों के लिये बहुत हितकारी थीं ।

(VIII) दोनों के काल में प्रजा के पास अस्त्र शस्त्र थे ।

(IX) प्रजा की शिक्षा का कोई ज़िम्मा नहीं लिया हुआ था, अतः हिंदु लोग स्वतन्त्रता से मन मानी शिक्षा अपनी सन्तानों को दे सकते थे ।

मस्जिदों की पाठशालाओं में हिंदु बालकों का जाना
कोई आवश्यक न था।

राष्ट्रभाषा और दर्बार भाषा उर्दू थी जिस
फ़ारसी के शब्द आटे में नमक समान थे, हिसा
किताब हिंदुओं के हाथों में होने से हिन्दी में रह
जाता था, टोडरमल ने मुश्किल से फ़ारसी में करदिया।

(XI) मुसलमान बादशाहों ने अपने असल
वतनों को त्याग कर भारत को ही मातृभूमि बनाय
उनके अमीरों वज़ीरों ने इसी देश में निवास किय
अतः उन्हें जो धन दौलत प्राप्त होता था वह यह
लोगों में ख़र्च करके हिंदुओं को धनी करते थे।

(XII) बहुत से मुसलमान या तो जन्म से हिं
थे या हिन्दुधर्मी माताओं के पुत्र थे—इस कार
स्वभाव से बहुत अत्याचारी न थे।

(XIII) इस देश के विदेशी व्यापार बढ़ा
और इसमें सर्व प्रकार के शिल्प को उन्नत करने
कुछ यत्न किया—इस देश के शिल्प पदार्थ य
योरप में जाकर हमें मालामाल करते थे।

२६. पठानी और मुगली साम्राज्यों में भिन्नतायें

(i) पठानी राज मुगली साम्राज्य जितना विस्तृत कभी न था, उस में अफ़ग़ानिस्तान, काश्मीर और कृष्णा नदी का दक्षिण भाग शामिल न था।

(ii) पठानी साम्राज्य में पांच वंशों ने ३२० वर्षों तक शासन किया किन्तु मुगलों का केवल एक वंश ३१५ वर्षों तक राज्य करता रहा।

(iii) पठानों के समय मुसलमानों और हिन्दुओं में बहुत विरोध था, उनके दो बड़े बादशाहों में से एक क्रूर और दूसरा पागल होनेसे अत्याचारी थे। किंतु अकबर, जहांगीर और शाहजहांन प्रजाप्रिय थे। पठानों ने हिन्दुओं को राजपदों से बहुत वञ्चित रखा किन्तु औरंजेब के अतिरिक्त और किसी मुगल बादशाह ने हिंदुओंमे ऐसा बुरा बर्ताव नहीं किया।

(VI) पठानों के समय हिन्दुओं ने मुसलमानों को बायकाट करके अपनी जातीयता और स्वतन्त्रता रखी, किन्तु अकबर की नीति से जातीयता का भाव नष्ट होगया; केवल एक देशभक्त सूर्यवंशी उदयपुर राजाओं के घराने ने देश, जाति,

(VIII) भारतवर्ष जैसे गर्म और उपजाऊ देशों में लोग आलसी, भोगी और कामी होजाते हैं किंतु जब राजशक्ति और धन की बाहुल्यता हो तो यह अवगुण अधिक बढ़जाते हैं। जो मुसलमान यहां आबाद होते थे—उनमें यह अवगुण होने से हिन्दुओं से कोई विशेषता नहीं रहती थी। परन्तु ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, मध्य एशिया आदि देशों से वीर हृष्ट पुष्ट जवान मुसलमान भारत में आकर बसते थे—अतः मुसलमानों का प्रभुत्व बना रहता था। पठानों के ह्रास के समय भी यह मुसलमानी लहर जारी रही—भेद इतना था कि पहिले देहली राज्य को वह लहर पुष्ट करती थी—तब स्वतन्त्र मुसलमान हाकिमों के राजों को उसने दृढ़ किया। किन्तु नादर और अब्दाली के हमलों के बाद नये मुसलमान उन देशों से आने बन्द होगए क्योंकि हिन्दुओं या योरूपियों का बल बढ़ रहा था और देश में लूट के कारण कुछ न रहा था। तब से मुसलमानों की तुर्की भी कम होती गयी है। आज कल के शासक बड़े बुद्धिमान् हैं—वे शीतप्रधान देश के निवासी होने से वीर, साहसी, दृढ़ स्वभावी हैं-भारत में कुछ वर्षों

कारण कहते हैं कि उसने राजा के पद को गौण करके राज्य का काम स्वयम् संभाला । इसके उत्तराधिकारी पेशवा कोल्हापुर राजाओं का मान करते रहे किन्तु मराठों के वास्तविक राजा और नेता पेशवा ही होगये ।

कोल्हापुर दल को नीचा दिखाने और साहू के विरुद्ध जो मन्त्री भी थे उन्हें दबाने में बालाजी ने बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लिया, फिर इसी पेशवा ने निज़ाम-उल-मलक और सैय्यदहुसैन की चालों से मराठा राज्य को सुरक्षित रक्खा, साथ ही प्रबन्ध के कार्य में ही यह पेशवा निपुण न था, परन्तु वीर धीर योद्धा भी था ।

बालाजी की चतुराई और धैर्य्य से सैय्यद की पराजय हुआ । तिस पर उस ने मराठों से सन्धि कर ली जिस की ये शरतें थीं:—

१. दक्षिण के ६ सूबों और बीजापुर, कर्नाटक, मैसूर, तंजोर के इलाकों से चौथ तथा सर्देश मुखी मराठों को एकत्र करने की आज्ञा मिले ।

२. साहू का परिवार तथा माता देहली से भेज दिये जायँ ।

३. साहू १५०० मराठे सिपाही " सैय्यद " की सहायता के लिये रक्खे।

४. साहू चौथ आदि एकत्र करने के बदले में राज्य को कुछ धन दे।

५. साहू उन सब लुटेरों को जो उक्त प्रान्तों को लूट रहे थे; देश से निकालने के लिए जिम्मेवार हो।

मराठे देहलीमें—१७१८ में जब यह सन्धिपत्र बादशाह को भेजा गया, तो उसने अस्वीकार किया। सैय्यद को क्रोध आया और साथ ही उसने, अपने भाई की जान भय में देखी। इस कारण १०,००० मराठी सेना बालाजी के आधीन लेकर 'सय्यद' देहली पर चढ़ गया। वहां " फर्रुखसियर " को मार कर नये बादशाह से सन्धि स्वीकार कराली। यद्यपि देहली वालों ने क्रोध में आकर १५०० मराठे मार डाले, तो भी बाला जी सेना का सारा व्यय, साहू का परिवार और ... मृत्यु के समय जो इलाका म- ... उस में स्वराज्य का पट्टा लेकर

ब्राह्मणों का बल बढ़ना—करोड़ों रुपयों
आय एकत्र करने में बालाजी ने ब्राह्मणों का
हाथ दिखाया। मराठों में ब्राह्मण ही अधिक पढ़े
थे, पेशवा ने उनको करों के एकत्रित करने में लगाया
राज्य-प्रबन्ध का बहुत सा भाग उनके हाथों में
जाने से अन्य मराठे कुपित हो गये, ईर्ष्या की अग्नि
प्रज्वलित होने लगी जिस से अन्ततः मराठी राज्य
नाश हो गया।

१७२० में बालाजी कार्य की अधिकता
रोगी होकर परलोक सिधारा, तब उसका ज्येष्ठ पुत्र
बाजीराव पेशवा बना॥

बाजीराव, १७२०–४०

२. बाजीराव का आचरण—इस पेशवा ने
भारत में मराठा राज्य को स्थिर कर दिया, इस
कारण उसे सब पेशवाओं में उत्तम मानते हैं। यदि
उसमें राज्य-प्रबन्ध की कुछ अधिक योग्यता होती,
तो वह शिवाजी से भी बढ़ कर काम करता—इस
शूरवीर पराक्रमी योद्धा और नीतिज्ञ पेशवा में जहां सब
... ... का सहारा, मानसिक शक्ति और ...

थी, वहां ब्राह्मणों की सहजबुद्धिमत्ता, वक्तृता और सुव्यवहार भी थे-दूरदर्शिता, तीक्ष्ण विचार, शीघ्रता से अन्यों की कुटिलता को देखने और उस के दूर करने के साधनों को ढूंढने में उसका मुकाबिला बहुत थोड़े मनुष्य कर सकते थे। निज़ाम, आंगल, फ्रांसीसी पुर्तगेज़, और अब्राह्मण मराठे-इन सब की विरोधिनी शक्तियों को दबाने और अपने सर्दारों में अपूर्व विश्वास और साहस फूंकने में बाजीराव बहुत कामयाब हुआ।

३. हिन्दू राज्य की स्थापना की इच्छा-बाजीराव का उद्देश्य भारत के उत्तरखण्ड में मराठी विजयपताका गाड़ना था-ताकि मराठा राज्य बढ़े, पेशवा की शक्ति भी बढ़े और दक्षिण में मराठों की अधिकता के कारण नियमबद्ध राज्य करने में जो कठिनाइयां होरही थीं वे उत्तर भारत के विजयों में मराठों के निमग्न होने से दूर हो जावें। किन्तु अन्य मराठे इस दूरदर्शिता की नीति के विरुद्ध थे। अपनी नीति का प्रचार करते हुए अष्टप्रधान में पेशवा ने एक दिन कहा कि "आर्यों की भूमि से विदेशियों

को निकाल देने का अब समय है—यश:कार्य से उत्तर खण्ड में मराठों का झण्डा आपके—साहू के जीवन में ही किस्तना से अटक तक फहरावेगा।" इन वाक्यों पर साहू ने कहा—"तुम योग्य पिता के योग्य पुत्र हो—निस्संदेह तुम इस झण्डा को हिमालय पर लगाओगे।"

४. पेशवा के विजय—(१) मालवा पर कई बार आक्रमण करके निदान १७३४ में उस को पेशवा ने काबू कर लिया और उस देश के भिन्न भागों में कर जमा करने के लिये दो सर्दारों को नियत किया जो पीछे इतिहास में प्रसिद्ध हुए, क्योंकि वे वहां के राजा बन गये और उन के राज्यवंश अभी तक चले आते हैं। वे सरदार मल्हारराव हुल्कर और रानूजी सिन्धिया थे—हुल्कर जन्म से शूद्र चराने का था परन्तु उसने कुछ सैनिक इकट्ठे करके बाजीराव को मालवा के विजय में सहायता दी—उसकी चतुरता को देख कर बाजीराव ने उसे कर एकत्रित करने पर लगाया—सिन्धिया दक्षिणी राजपूत था। पहिले तो यह पेशवा का पटेल जूतीबरदार था, पर अपनी बुद्धिमत्ता के कारण यह भी एक बड़ा सर्दार बनगया।

बहुत ज़ोर की लड़ाइयाँ होती रहीं किन्तु १७३९ में पुर्तगेज़ों का नगर बसीन फ़तह कर लिया गया, मराठों का यह सब से बड़ा मुहासरा था, इस विजय से मराठों की प्रसिद्धी का सूर्य चमक निकला और उनका राज्य भारतवर्ष में मुख्य होगया, तब ऐसा प्रतीत होता था कि भारतवर्ष में हिन्दूराज्य फिर से स्थापित हो जावेगा ॥

बालाजी बाजीराव (१७४०-६१)

८. बालाजी बाजीराव का आचार तथा कार्य. बालाजी को नाना साहब पेशवा भी कहते हैं यह बड़ा सौभाग्यवान् था क्योंकि इसके समय में मराठों का राज्य भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैल गया । नीति, मिलनसारी, सुव्यवहार, कपट, शत्रुको यथा तथा मारने में इस पेशवा का मुक़ाबला थोड़े मनुष्य कर सक्ते हैं । यह उदारचित्त, दानी, प्रजा के दुःख को न सहने वाला किन्तु भोगी था; उसने राज्यप्रबन्ध उन्नत कर दिया; कर एकत्र करने में रिश्वतख़ोरी बन्द की; मुकद्दमों के फैसले में अन्याय और पक्षपात दूर करके पंचायतों की विधि का

निकाला जिसके अनुसार राज्य का सारा प्रबन्ध तो पेशवा ने करना था। सितारा तथा कोल्हापुर के राजाओं को अपने इलाकों में ही स्वतन्त्र राज्य करने की आज्ञा थी। इस पर ताराबाई बहुत तिलमिलाई। राजा को पेशवा के विरुद्ध उत्तेजित किया, राजा के न मानने पर उसे अपनी मृत्यु तक (१७६१) क़ैद में रक्खा।

(ख) पूना का राजधानी बनना—पेशवा ने भी कुछ दख़ल न दिया। परन्तु अब से उसने सितारा छोड़ कर पूना में रहना स्वीकार करलिया ताकि वह हर्म्यों की गुप्त मन्त्रणाओं से दूर रहे और पूरा मुद मुख्तार होसके और साथ ही राजा के क़ैद में होते हुए उसका वहां रहना उचित भी नहीं था। अब से पूना राजधानी हुई, पेशवा असली राजा होगये और शिवाजी के वंशज नाममात्र के राजा रह गये

७. बंगाल के हमले—रघुजी भोंसला तथा उन के सेनापति भास्कर पंडित ने बंगाल देश पर कई आक्रमण किये। मराठों से बचने के लिये अंग्रेज़ों दुर्ग के गिर्द एक खाई बनाई जिसे मराठा

है, चिरकाल से निज़ाम और मराठों में मुठभीर रहती थी। निज़ाम ने मराठों से बदला निकालने के लिये अपूर्व तय्यारियां कीं:—प्रसिद्ध फ्रांसीसी जनरल बूसी को साथ लिया और सेना में फ्राँसीसी सिपाही भी भरती किये। निज़ाम सलावत्त जंग के साथ १७६० में उद्गीर के स्थान पर युद्ध हुआ जिसमें मराठों का जय हुआ। दौलताबाद, असीरगढ़, बीजपुर, बेदर, अहमदनगर, औरंगाबाद के बड़े इलाके निज़ाम ने मराठों को दिये। इस वर्ष मराठों की उन्नति का सूर्य खूब चमकने लगा क्योंकि सारे भारत में मराठा राज्य फैल गया। कालाहन नदी से सिंधु तक और बंगाल बिहार से गुजरात तक सारा भारतवर्ष इनके आधीन था। इनमें से कुछ प्रान्तों से ये शुल्क लेते थे-शेष पर उनका सीधा राज्य था, यदि सावधानी से शासन किया जाता तथा भारत के नाश करने वाले जात पात के झगड़े न होते, तो मराठों का राज्य शीघ्र नष्ट नहीं होता।

सेनाएं—९० हज़ार सैनिक तथा ८० तोपें अब्दाली के पास थीं, मराठे ३ लाख थे और २०० तोपें उनके पास थीं। पानीपत के प्रसिद्ध मैदान में दोनों सेनाएं एक दूसरे के सामने बिना लड़ाई करने के पड़ी रहीं। बस यही 'भाउ' की बहुत ग़लती थी, चतुर अब्दाली तो जानता था कि मराठे अन्त में भूखे मरेंगे। भोले 'भाउ' ने उसकी चाल न समझी। इतनी बड़ी सेनाको रसद पहुंचाना कठिन था ही, परन्तु अब्दाली ने इसे कठिनतर कर दिया। रसद के थोड़े होने पर सिपाहियों का भोजन कम कर दिया गया। निदान जब गुज़ारा न चला तो 'भाउ' ने अब्दाली को लिख भेजा कि अब प्याला लबालब भर चुका है, इस में अधिक जल नहीं समा सक्ता।

संग्राम—तिस पर मराठों की सारी सेना यह ठानकर कि मारा या मरे, हमला करने के लिए बाहिर निकल आई। १४ जनवरी के दिन प्रातःकाल से युद्ध प्रारम्भ हुआ, १ बजे तक मराठों की जीत रही, फिर भूखे सिपाही युद्ध की थकान न सह सके। तब अब्दाली ने अपनी ताज़ी सेना से हल्ला बोल दिया—धर्म के जोश से भरे हुए बहिश्त के इच्छुक अथक

चिकनाचूर होगया। साढ़े पांच सौ वर्षों तक आर्य्य लोग मुसल्मानों की दासता सहते रहे थे। १७६१ में स्वतन्त्र होने का एक सुवर्णावसर मिला किन्तु उस में भी अदूरदर्शिता, जातपात के झगड़ों और ईर्ष्या द्वेष से प्रेरित होकर आर्य्य जाति के भावी लाभों को भूल कर और भारत-माता का ध्यान न करते हुए अब ब्राह्मण मराठों ने हिन्दु राज्य को समूल काट दिया।

(ख) बङ्गाल मराठों के आक्रमणों से कुछ काल के लिए बच गया, इधर भारतीय मुसल्मानों में दम न रहा था। अतः चुपके २ अंग्रेज़ अपना राज्य स्थिर करते गये।

(ग) ८ वर्षों तक मराठे विन्ध्याचल के पार न गए, किन्तु इसी समय उत्तर खण्ड में बड़े परिवर्त्तन होरहे थे।

(घ) इस युद्ध से महदा जी सिन्धिया ने कई शिक्षाएं लीं जो शेष जीवन में उस के लिए हित-कर हुईं।

(ङ) पेशवा इस पराजय के अतुल शोक से कुछ मासों में ही मर गया—उसकी मृत्यु पर फ़ौज की

कि पूना में रह कर राज करने की आज्ञा दी । यथा सम्भव, चोरी, ठगी, घात अत्याचार को बन्द किया, पञ्चायतों को वृद्धि दी, भिन्न प्रकार से प्रजाकी उन्नति की-परिणाम यह हुआ कि प्रजा इसके राज्य में समृद्ध हुई और यदि माधोराव के पश्चात् कोई योग्य पेशवा बनता, तो मराठा राज्य इतनी शीघ्रता से नाश न होता । परन्तु इसकी मृत्यु से मराठों को पानीपत की पराजय से भी अधिक धक्का लगा ।

११. रामशास्त्री--स्मरण रहे कि माधोराव को ऐसा चतुर उसके गुरु रामशास्त्री ने बनाया था । मराठा इतिहास में वह एक अपूर्व पुरुष गुज़रा है-विद्या और सदाचार में प्रसिद्ध वह बुद्धिमत्ता और सत्यता का पुतला था । राजाओं के दोषों को जताने में कभी भय न करता था । बड़े २ निडर पापी पुरुष भी उससे भय भीत होते थे । दया, परिश्रम और दृढ़ता का भी वह नमूना था--ऐसे सुयोग्य महा-पुरुष की प्रतिष्ठा आज तक मराठों के दिल में है ।

१२. माधोराव के समय चार सरदार बड़े प्रसिद्ध हुए, उन में से दो सुखराम बापू और नाना

के झगड़ों के कारण इन सरदारों को क़ाबू न रख सका।

(घ) १७६३ में ताडुखगा के युद्ध में निज़ाम को मराठों ने परास्त कर फिर कर्नाटक पर हमले किये और मैसूर के नवाब को अपना लोहहस्त दिखाया।

(ङ) १७६९ में चम्बल पार होकर राजपूताने रियासतों से मराठों ने अपना पुराना कर एकत्रित किया और जाटों के देशों को उजाड़ कर भरतपुर में उन्हें शिकस्त दी, फिर ६५ लाख रुपया उनसे लेकर सन्धि की। १७७०-१ में माधोराव तथा हैदर का युद्ध हुआ, क्योंकि हैदर ने ख़िराज देना बन्द कर दिया था। इस में हैदर बुरी तरह से हारा तब बहुत सा इलाका तथा ३५ लाख रुपया मराठों को देकर उसने जान छुड़ाई।

१७७१ में मराठों ने रुहेलखण्ड को फ़तह किया और देहली क़ाबू करली। फिर शाहआलम को देहली का बादशाह बनाकर मराठे स्वयं कारबार करने लगे, पर भारतवर्ष का राज्य उन के हाथ से

१० वर्षों में ही बड़े परिवर्तन होचुके थे-उन्हें अङ्गरेज़ों के हाल में देखो।

दुर्भाग्य से १७७२ में माधोराव क्षय रोग से २८ वर्षोंकी आयु में परलोक सिधारा। तब इसका छोटाभाई नारायण राव गद्दी पर बैठा। इसका संरक्षक भी वही अयोग्य रघुनाथ हुआ—फिर एक वर्ष में वह भतीजे का घात करके स्वयं पेशवा बन बैठा।

माधोराव नारायण १७७४—

मराठे घातक रघोबा के पहिले ही विरुद्ध थे किन्तु जब नारायण राव के घर बालक पैदा हुआ, तो मराठा सरदारों ने माधोराव नारायण के नाम से ही उसे पेशवा बनाया, इससे मराठा जाति में फूट का बाज़ार गर्म हुआ, तब लोभी रघोबा ने जो कुकर्म किये वे अङ्गरेज़ों के हाल में देखो।

सिन्धिया—इसी फूट का दूसरा परिणाम यह हुआ कि सिन्धिया, हुल्कर, गायकवाड़ आदि सरदार स्वतन्त्र होगए और हर एक ने अपनी रियासत का विस्तार पृथक् २ करना चाहा, सिन्धिया ने शक्ति बढ़ाली, ग्वालियर फ़तह करलिया, देहली और

आगरा के सूबों का हाकिम बनाया गया और देहली सेनाका महासेनापति भी होगया। उसने अङ्गरेज़ों से बङ्गाल की चौथ भी मांगी। इधर जैपुर जोधपुर की रियासतों को परास्त करके सिन्धिया ख़िराज ले रहा था, उधर मुसलमान सरदारों से वह उन की जागीरें छीन रहा था, फिर हत्यारे ग़ुलामक़ादर को उचित दण्ड देकर देहली में बादशाह का संरक्षक बना, तब वह मुग़ल राज्य का महामन्त्री नियत किया गया और सिन्धिया तथा उसकी सन्तान को देहली में पेशवा का प्रतिनिधि बनाया गया। इस प्रकार पेशवा के दर्बार में भी सिन्धिया सब पर ग़ालिब होना चाहता था। हुलकर और सिन्धिया की बहुत अनबन थी, परस्पर यहांतक वैमनस्य बढ़ा कि अजमेर के निकट लकौरी स्थान पर दोनों ने घोर संग्राम किया जिस में हुलकर की पराजय होने से सिन्धिया का पलड़ा मराठा पञ्चायत में भारी हो गया। नानाफरनवीस को भी वह दाब दिखाता किन्तु १७९४ में पूना के निकट एकाएक उसका देहान्त होगया, तब उस का पोता दौलतराव सिन्धिया १५ वर्षों की आयु में उसका उत्तराधिकारी हुआ।

बाजीराव के पास जाने से रोक दिया गया—इस बात पर पेशवा को ऐसा क्रोध हुआ कि वह महल की छत से कूद कर आत्मघात कर बैठा।

१७. बाजीराव २य, १७९५—१८१८। तब दौलतराव सिंधिया और नाना फरनवीस ने मिल कर रघुनाथ के पुत्र बाजीराव को ही गद्दी पर बिठाया, फरनवीस उसका महामन्त्री बना, पर इस पेशवा ने उक्त दोनों सरदारों को ही मारना चाहा, पहिले तो सिन्धिया की सहायता से नाना फरनवीस को पकड़ने की तजवीज़ सोची। पूना में रात दिन रक्त की नदियाँ बहीं, बाज़ारों में युद्ध हुए, निदान फरनवीस क़ैद होकर अहमदनगर भेजा गया। सिन्धिया का स्वसुर जो एक दुष्ट, क्रूर और नीच आदमी था वह मन्त्री नियत हुआ। पर उस ने अपने अत्याचारों से सारी प्रजा को कष्ट कर दिया। बाजीराव ने सिन्धिया से तंग आकर नाना फरनवीस को क़ैद से छोड़ कर उसे अपना मन्त्री बना दिया। किन्तु मराठा सरदारों के पारस्परिक झगड़ों से मराठा राज्य का ह्रास हो रहा था। अब यह लोग इस तरह दुर्बलता से

निज़ामुल—मुल्क (आसफ़शाह) के मरने पर सिंहासन के लिए उसके पुत्र नासरजंग और नाती मुज़फ्फरजंग का आपस में विरोध हुआ। और ठीक उसी समय दक्खन के बीच कर्नाटक की नवाबी के वास्ते तत्कालिक नव्वाब अनवरुद्दीन और अगले नव्वाब के दामाद चंदा साहिब ने आपस में लड़ना शुरू किया। फरांसीसियों ने चंदा साहिब को सहायता दी और बड़ा शूरता से अनवरुद्दीन को मार डाला, महफूज़खाँ को पकड़ लिया और नव्वाब के छोटे पुत्र मुहम्मदअली को त्रिचनापली दुर्ग में भगा दिया। तब बड़ी सज धज से चंदा साहिब अरकाट में प्रविष्ट होकर कर्नाटक का सूबेदार बना और देश और धन से फरांसीसियों को उसने तथा मुज़फ्फरजंग ने मालामाल करदिया। विजय के आनन्दों को प्राप्त करते हुए डूप्ले के साथियों ने 'गुज़ों गुश्तन रोज़े अव्वल बायद' का सिद्धान्त भुला दिया और मुहम्मदअली तथा नासिरजङ्ग को बल पकड़ने दिया। परिणाम यह हुआ कि जब चंदा साहिब की सेना त्रिचनापली को घेरने गई तो नासरी और अंगरेज़ी सेना उस दुर्ग की रक्षार्थ मौजूद थी—अन्त में चंदा

उठा—क्योंकि हैदराबाद में फरांसीसी जनरल बूसी की तूती बजने लगी।

जिस स्थान पर डूप्ले ने नासिर पर विजय प्राप्त की, वहाँ उसने एक नगर आबाद किया जिस का नाम डूप्ले विजयनगर रक्खा गया। वहां एक विजय-स्तम्भ भी बनाया गया जिस पर भिन्न भाषाओं पर डूप्ले के गुण गाए गए। थोड़े दिनों में मुज़फ्फ़र-जङ्ग को कई सर्दारों ने मार डाला। तब इसी ने निज़ामुल—मुल्क के छोटे पुत्र सलाबतजंग को गद्दी पर बिठा कर उसे अपने वश में रक्खा।

४. अरकाट का विजय क्लाइव—नासिरको सहायता न देने में आंग्लों ने गलती की परन्तु मुहम्मद-अली को उन्होंने पूरी २ मदद देनी चाही। १७५१ से ५४ तक भिन्न २ युद्ध, दांव, पेंच, चालें और मुहासरे होते रहे जिनका वर्णन करना यहां असम्भव है। परन्तु जब चन्दा साहिब की सेना ने त्रिचनापली को घेरे हुए था तो उसकी रक्षा का कोई साधन न दीख पड़ता था, पर प्रभु की ऐसी माया है कि—

प्रज्वलित अग्नि के समान बढ़ता गया। उसकी वीरता साहस और तेजी को देखकर अरकाट की संरक्षक सेना भाग गई और नगरनिवासी उस अद्भुत कौतुक से विस्मित होगये। इस प्रकार क्लाइव के हाथ में अरकाट आगया। २३ दिनों के बाद चन्दासाहिब का पुत्र रज़ा साहिब १०००० सैनिकों के साथ अरकाट को वापिस लेने आया। इतने बड़े दुर्ग को जिसकी दीवारें कच्ची और गिरी हुई थीं और रसद का सामान भी जिस में थोड़ा था, ५० दिनों तक क्लाइव ने निरन्तर बचाये रक्खा। आखिर 'रज़ा' परमात्मा की रज़ा (इच्छा) को मानकर वापिस चला गया। मुरारीराव मराठा क्लाइव की विचित्र वीरता को देखकर उसके साथ ही आ मिला। फिर रज़ा की छोटसी सेना को क्लाइव तथा मुरारी की सेना ने हार दी। लोग क्लाइव के नाम से थर थर कांपने लगे-इस अवसर को अमूल्य समझ कर चन्दा साहिब तथा फरांसीसी दोनों को उसने कांजीवरम, कावेरीपाक तथा सामियावरम पर हारें दीं। त्रचनापली की सहायतार्थ जो दालूलनामी फरांसीसी जनरल आया था वह त्रचनापली से भाग गया। फिर यहां

लिया, परन्तु और कुछ न कर सका क्योंकि वह भी तीक्ष्ण स्वभाव, जिद्दी और अभिमानी था। उसके साथ काम करने वाले सब अफसर रुष्ट होगए, उसके कर्मों से बूसी भी क्रुद्ध हुआ। हैदराबाद से बूसी को वापिस बुला लिया गया क्लाइव ने इस सुवर्ण अवसर से लाभ उठाया कि शीघ्र ही अंगरेज़ी सेना से हैदराबाद के उत्तरखण्ड को फ़रासीसियों के हाथों से ले लिया, तब से वह इलाका उत्तरीय सर्कार के नाम से अंगरेज़ों के अधीन है। लाली ने मद्रास को घेरा जा डाला; पर अंगरेज़ी बेड़े के आ जाने से उसे वहाँ से हटना पड़ा।

१७६० में कर्नल कूट ने वांदीवाश के अति प्रसिद्ध संग्राम में फ़रासीसियों को पूर्णतया परास्त किया और बूसी बहुत सैनिकों समेत आंगलों का क़ैदी बना, फिर १७६१ में फरासीसियों का प्रधान नगर पांडिचरी भी फ़तह होगया। इसके कुछ मास पश्चात् जिंजी का प्रसिद्ध दुर्ग भी आंगलों ने फ़तह करके फ़रासीसियों का सारा बल नष्ट कर दिया। सारे भारत में किसी स्थान पर भी फरासीसी झण्डा

करने के लिए तैयार होरहे थे। १७६३ में पेरिस की सन्धि से योरूप का युद्ध समाप्त हुआ, तब फ़रांसीसियों को भारतीय इलाके इस शर्त पर वापिस दे दिये गए कि न तो कोई दुर्ग बनाया जाय और न सेना रक्खी जाय। इस के बाद अंगरेज़ों ने पांडिचरी दो बार फ़तह की परन्तु दोनों बार ही वापिस देनी पड़ी। इसी प्रकार कर्नाटक के तीसरे युद्ध के अन्त में दक्षिण में फ्रांसीसियों का पूर्णतया ह्रास हो गया। इसी समय में अंगरेज़ों ने बंगाल में भी अपना राज्य स्थापित कर लिया था जिसका वृत्तान्त आगे दिया जाता है॥

६. सराजुद्दौला—यह युवक काम और भोग की मूर्ति था, सारा समय विदूषकों, वेश्याओं तथा भोगियों की संगत में रहकर मद्यपानादि के सेवन में गुज़ारता था। इन दुराचारों से उसकी बुद्धि मलीन होगई थी और वह अदूरदर्शी और शीघ्र क्रुद्ध होनेवाला बनगया था-इन कारणों से प्रजा को उससे सुख की आशा न थी।

७. आंग्ल और सराजुद्दौला—दूरदर्शी साहूकार वल्लभदास ने अशान्ति को निश्चयपूर्वक आते

अंग्रेज़ तड़प २ कर मर गये और सुबह होने तक केवल २३ ही मनुष्य जीते निकले।

जब इस घोर अत्याचार की सूचना इंग्लैण्ड में पहुंची, तो क्लाइव और वैटसन को बदला लेने के लिए मद्रास भेजा गया। उन्हीं ने पहुंचते ही दुर्ग पर धावा किया और बड़ी सुगमता से कलकत्ते को काबू कर लिया। १७५७ में क्लाइव से डरता हुआ सराजुद्दौला लड़ना न चाहता था-उसने सन्धि करनी चाही। जितने इलाके युद्ध से पूर्व आंग्लों के पास थे वे उन्हें लौटा दिये और आँग्लों के मारे तथा लूटे जाने का भी बहुत सा रुपया देकर बदला चुकाया, इससे युद्ध यहीं समाप्त हो जाता यदि युद्ध के नये कारण उपस्थित न होते।

८. प्लासी का संग्राम (१७५७)

कर्नाटक की अवस्था का अनुसरण करते हुए क्लाइव ने फरांसीसी इलाके-चंद्रनगर पर हमला करके उसे काबू कर लिया, सराजुद्दौला ने अपने राज्य में इस शांतिविदारक घटना को देखकर फरांसीसियों का ही पक्ष लिया। क्लाइव ने डुप्ले की नीति का अनुसरण

इस तरह अमीचंद को शांत करके क्लाइव ने सराजुद्दौला को लिखा कि आंग्लों की सब शिकायतों को दूर कर दो-अन्यथा आंग्ल सेना तुम्हारे राज्य पर आक्रमण करेगी। यह पत्र लिखते ही उसने उत्तर की प्रतीक्षा न करके शीघ्र मार्च कर दिया, ९०० गोरे, २००० देसी और ८ तोपें इसके पास थीं।

क्लाइव की सेना जब मुरशिदाबाद की तरफ मार्च कर रही थी, तो कटवा नामी स्थान पर जहां से कि भागीरथी को पार करना था उसने पड़ाव डाला। युद्ध कैसे तथा कब किया जाय इन बातों पर क्लाइव ने अपने अफसरों की सम्मति लेनेके लिए एक सभा की, जिसमें यह निश्चित हुआ कि नवाब पर शीघ्र ही धावा न करना चाहिए। परन्तु क्लाइव ने इस बात पर एकान्त में बहुत विचार किया और तत्काल ही धावा करने का फैसला किया। इस कारण भागीरथी को पार करके प्लासी नामी स्थान पर डेरे जमाये। जब हम इस बात पर विचार करते हैं कि मीरजाफर जैसे गला काटनेवाले उसकी सेना में छिपे थे, बड़े २ सेनापति भी उसके विरुद्ध थे जिन्होंने अङ्गरेजों के विरुद्ध न लड़ना था तो सराजुद्दौला की सेना

प्लासी का युद्ध बड़ा प्रसिद्ध है यद्यपि उसके बड़े परिणाम उस समय प्रतीत न होते थे, पर इतिहास पता लगता है कि इसके बड़े परिणाम हुए।

मीर जाफ़र देहली-बादशाह की आज्ञा से बंगाल का नवाब बना और क्लाइव के हाथ बहुत सा प्रबन्ध कर दिया। कम्पनी और भारती गोरों को मीर जाफ़र ने नवाब बनने पर ३ करोड़ अधिक रुपया देकर कोष ख़ाली कर लिया।

कलकत्ते के इर्द गिर्द कम्पनी को २४ परगने के इलाके पर १७५७ में ज़िमींदारी का हुक़ दि गया और कम्पनी को ज़िमींदारी के भी हक़ मि जिसमें कि वह कृषकों से लगान ले सकती थी औ लगान लेने के नियम भी बना सकती थी।

परन्तु भूमि नवाब या राज्य की थी, अतः इस लिए कुछ कर भी देना पड़ता था। १७५९ में य राज्याधिकार क्लाइव को निज के तौर पर दे दि गया, इस प्रकार क्लाइव कम्पनी का नौकर हो हुए कम्पनी का मालिक बनगया। नवाब क्लाइव को ११ हज़ारी का पद देकर सब से उ

अमीरों में रख लिया। उपर्युक्त निज की जायदाद पर कम्पनी ने मुकदमा चलाया परन्तु १७५४ में यह फ़ैसला हुआ कि १० वर्षों तक तो यह जायदाद क्लाइव की रहे और फिर सदा के लिए कम्पनी की होगी। १७७४ में क्लाइव के मरने पर वस्तुतः यह जायदाद कम्पनी के हाथ में आई।

९. क्लाईव का गवर्नर बनना–१७५८—६० ॥

१७५८ में कम्पनी ने बङ्गाल में क्लाइव को गवर्नर नियत किया। इधर शाहआलम ने विहार के शासक रामनारायण को पराजित करके पटना का मुहासिरा करलिया था। मीर जाफ़र उसके साथ युद्ध न करना चाहता था, पर क्लाइव ने ३ हज़ार सेना के साथ उसका मुक़ाबिला किया, शाहआलम क्लाइव के नाम से ही भीत होकर भाग गया। फिर क्लाइव ने उत्तरी सरकार के इलाकों को फरांसीसियों के हाथों से लेलिया-इससे बढ़कर क्लाइव ने डचों को पराजित किया जो अंगरेजों के विरुद्ध शाहआलम और मीर जाफ़र की सहायता देरहे थे। क्लाइव ने इनके प्रधान नगर चुंसुरा को फ़तह कर लिया, पर पीछे से सन्धि होने पर वह वापिस कर दिया गया। इस प्रकार

आंग्लों का भय भारत में फैलाकर और बंगाल में आंग्लों के हाथ राजप्रबन्ध देकर क्लाइव १७६० में इंग्लैंड में वापिस चला गया॥

१०. मीर जाफ़र और आंग्ल—ऊपर कहा जा चुका है कि मीर जाफ़र को बहुत सा धन आंग्लों को देना पड़ा। उस धन के अतिरिक्त आङ्ग्लों ने मराठा खाई के अन्दर २ जो भूमि थी और ६०० गज़ उसके बाहर भी जो भूमि थी अपने अधीन करली और इस बात का भी प्रण करा लिया कि फ़ैञ्च भी बंगाल में आबाद न होने दिए जाएं। मीर जाफ़र ने राज्य तो पालिया पर वह नाममात्र का नवाब था, वस्तुतः सारी शक्ति आंग्लों के हाथ में थी जिन्होंने कि उसे राजा बनाया था। बेचारा मीर जाफ़र अपना बहुत सा धन अंग्रेज़ों को दे बैठा और निश्शक्ति भी हो गया। कर्नल क्लाईव और उसके सहकारी उसे कठपुतली की तरह नचाने लगे-ऐसी अवस्था देख, वह बड़ा शोकातुर होकर आंग्लों के विरुद्ध विचारता रहा। सेठ उमाचन्द ने तथा अन्य कई सरदारों ने अपने हाथ से राज्यशक्ति जाते देख आंग्लों के विरुद्ध बहुत मोड़ तोड़ की, पर बली आँग्लों ने

अधिकार और धन दिये उनका वर्णन हो चुका है
मीर कासम से भी उन्हों ने बर्दवान का सारा ज़िला
ले लिया। और २० लाख रुपया कलकत्ते की सभा के
मेम्बरों ने निज उपहारार्थ लिये। कासम उन्हें यह
अधिकार देना न चाहता था। परंतु अकेला बना भा
का क्या कर सकता है? उस को धन तथा अधिकार
देने ही पड़े और चूंकि वह जानता था कि राज्य
प्रबंध उस के हाथ में नहीं है अतः उसने अपनी सारी
शक्ति सेना को उन्नत करने में लगाई। आंग्लों से दूर
रहकर अपने उपाय पूर्ण करने के लिए उस ने
मुर्शिदाबाद से मुङ्गेर में राजधानी बदल ली। नई
राजधानी में तोपों और बन्दूकों के बनाने का
कारख़ाना खोल दिया और देहली तथा अवध सर-
कार से सहायता के लिए पत्र व्यवहार करने लगा
... इन कामों में कासम ने एक बड़ी ग़लती की
... गिरगीख़ाँ को सेनापति बनाया। इसका भाई कल-
... में व्योपारी था--आंग्लों ने उस के द्वारा
... ख़ाँ से पत्र व्यवहार आरम्भ किया और यह
... उन के पंजे में आगया। तब से कासम की
... बातें इस के द्वारा आंग्लों को पता लगती गईं,

उद्दण्ड आंगल अफ़सर ने पटना नगर पर हमला कर के उसे क़ाबू कर लिया, पर क़ासिम ने उसे छुड़ा ही लिया। फिर उस ने कुछ अंग्रेज़ों को पकड़ने की आज्ञा भेज दी, इस पर कलकत्ते में मीर जाफ़र को क़ासिम की जगह सूबेदारी देने की तजवीज़ सोची गई। जाफर ने अपनी प्रजा पर पूर्ववत चुंगी लगाना, बहुत सा रुपया तथा इलाक़ा आदि देना स्वीकार किया-- इस पर उस ७२ वर्षों के बूढ़े, निर्बल के मारे तथा लुब्ध जाफ़र को आंग्लों ने कलकत्ते में सूबेदार बना दिया। मीर जाफ़र ने आंग्ल सेना की सहायता से क़ासिम को कटवा के युद्ध में हराया। कासिम की इस पराजय का कारण वह विदेशी गिरगीख़ाँ था जिस का वर्णन पहिले कर चुका हूं। क़ासिम को अन्तिम समय पर ही उस की राजविद्रोहिता का पता लगा। इसपर क्रुध्द हो उस ने उसे तथा ४८ अंग्रेज अफ़सरों और १५० साधारण सैनिकों को मरवा डाला और स्वयम् अवध की तरफ भाग गया। क़ासिम की हार के कारण ये थे कि आँग्लों के पास युद्ध का अच्छा सामान था, उन के सैनिक सुशिक्षित और अफ़सर आज्ञा पालक और देश हि-

ग्रेजों का अवध में दख़ल हो गया जैसा कि आगे पता लगेगा।

१७. क्लाइव का स्वदेश लौटना—क्लाइव ने बहुतेरे संशोधन लगातार यत्न कर के किए और जैसे उस ने अपने पूर्व शासन में प्लासी का युद्धजीत कर बंगाल में आंग्लों के राज्य की नींव डाली थी वैसे ही इस शासन में दीवानी लेकर उस राज्य को अधिक स्थिर कर दिया, परन्तु बंगाल में दोहरे शासन होने के कारण कुछ हानियाँ अवश्य हुईं। और चूंकि वह बंगाल में १८ मास से अधिक न रह सका, अतः उसके संशोधनों ने पूरी जड़ न पकड़ी-इस कारण उसके जाने पर वे ख़राबियाँ जो कि उसने हटाई थीं- पुनः जागृत होगईं, इन संशोधनों के करने में उसने अपने शरीर को निस्सन्देह रोग ग्रस्त कर लिया और जब वह वापिस गया, तो शत्रुओं के आक्षेपों से अति दुःखित हुआ।

१८. दोहरा शासन—१७६७ से १७७१ तक।

क्लाइव के बाद महाशय वैरिलिस्ट बङ्गाल का गवर्नर बना। उसके बाद महाशय कार्टिअर १७६९ से

७२ तक लाट रहा। इन ५ वर्षों में बङ्गाल पर जो २ आपत्तियाँ आईं उनका वर्णन करना असम्भव है। क्लाइव ने जो दीवानी ली थी, उसे देखकर इंग्लैण्ड के निवासी विशेषतया कम्पनी-बड़ी प्रसन्न हुई थी, बंगाल की आय उस समय ४० लक्ष पौण्ड प्रायः रहती थी और सर्व प्रकार के व्ययों के लिए पूरी हो कर शेष बहुत बचती थी। यह बचत कम्पनी के लिए भारतीय तथा चीनी माल खरीदने में व्यय होती थी। यह माल इंग्लैण्ड में जाकर बहुत बड़ी कीमत पर बिकता था। इस प्रकार प्रतिवर्ष भारत से रुपया जाने लगा जिसका निकास आंगल राज्य के दृढ़ होने पर अधिक बढ़ता गया, पहिले तो इंग्लैण्ड से रुपया आता था परन्तु अब दीवानी मिलने पर इंग्लैण्ड में धन जाने लगा। प्रजा करों से पीड़ित थी जमीन्दार प्रायः मुसलमान थे—धर्म विरोध के होने से वे हिन्दुओं को अधिक से अधिक सताना अपना कर्तव्य समझते थे।

परन्तु जबतक देशी सूबेदार राज्य करता और आप ही कर एकत्रित करता था तब तक किसानों को सूबेदार तक अपनी दुर्बल अवस्था का [illegible]

थे। किन्तु इसी दोहरे शासन की हानियों से बंगाल में १७६९ में एक घोर दुष्काल पड़ा जिसमें १ करोड़ के लग भग प्रजा मर गई, इस दुर्घटना को देख कर अंग्रेज़ों की आँखें खुलीं तब वे भारत के शासन की ओर ध्यान देने लगे। दोहरे शासन को हटा दिया, नवाबों को हटाकर और बंगाल को सर्वतः अपने स्वरक्षता में करलिया, इस प्रकार अंग्रेज़ी राज्य की भारत में स्थापना हो गई।

अध्याय १४

अंग्रेज़ी राज्य की स्थिरता

वारन हेस्टिंग्ज़

१—हेस्टिंगज़ का भारतवर्ष में आगमन— हेस्टिंग्ज़ ने एक सुप्रसिद्ध वंश में १७३२ में जन्म लिया। होनहार बिरवान के चिकने चिकने पात होते हैं—अतः बाल्यावस्था में ही हेस्टिंग्ज़

और ध्रुव भवन बना सके।

३. हेस्टिंग्ज़ के सामने कठिनाइयां--(१) महरट्टों
की शक्ति उच्छृङ्खल समुद्र के समान बढ़ती जाती थी।
वे वीर योद्धा पानीपत के भयंकर दृश्य को ८ वर्षों में
भूल गये थे-अतः वे नवीन संचित शक्ति से उत्तरीय
भारत में आक्रमण करने लगे, और आन की आन में
उन्हों ने रुहेलखण्ड तक के प्रान्त फ़तह कर लिये

उन्होंने शाह आलम को आंगलों की क़ैद से छुड़ा
कर अपनी ही अधीनता में देहली का राज्य १७७१ में
दिया और यहां तक अपने तईं बली अनुभव किया
कि उनके मुखिया माधोराव सिन्धिया ने बंगाल का
ख़िराज आंगलों से मांगा, इस बढ़ती हुई शक्ति का
प्रतिकार करना हेस्टिंग्ज़ का कार्य था।

(२) मैसूर के हैदरअली को भी स्वपरिधि
रखना था॥

(३) बंगाल में अप्रबन्ध की कोई सीमा न रही,
थी, क्लाइव के संशोधन निष्फल हो गये थे, अँग्रेज़
अफ़सर हर जगह उत्कोच, कपट, ग़बन या अत्याचार
से धनी होने के पीछे पड़े हुए थे-इन सब दोषों

टाना हेस्टिंग्ज़ के लिये अपने ही देश भाइयों की प्रचण्ड कोपाग्नि को भड़काना था।

(४) भारतीय अवस्थाओं को न समझ कर पार्लियामेंट ने जो नियम भारतीय-शासन के लिये बनाए-उन से हेस्टिंग्ज़ की कठिनाइयां अधिक बढ़ गईं-यदि हेस्टिंग्ज़ जैसा धीर, वीर, बुद्धिमान्, सहनशील, दूरदर्शी महाशय गवर्नर न होता तो यहां अंग्रेजों का राज्य शीघ्रता से परिपक्व न हो सकता।

४-कठिनाइयों का दूरीकरण--परन्तु निम्न लिखित कारणों से यह कठिनाइयां किञ्चित् कम भी हो गईं:—

(क) बंगाली लोग युद्धप्रिय, स्वतन्त्रताप्रिय, स्वजातीय और विजातीय राज्य में भेद करने वाले न थे, अतः अंग्रेजों को राज करने में मुश्किल न थी।

(ख) बंगाल प्रान्त अति विस्तृत था और भूमि के उपजाऊ होने के कारण राज्य को पर्याप्त आय होती थी।

(ग) नदी नाले अधिक होने के कारण व्यापार की वृद्धि से भी राज्य आय अधिक होती थी।

(घ) बङ्गाल के अति पूर्व दिशा में होने के कारण भारतीय राजाओं के हमले वहां कठिनता से हो सक्ते थे।

(ङ) मराठों के हमलों को रोकने के लिये हैदर, निज़ाम, शुजाउद्दौला मौजूद थे—इन के उपस्थित होते हुए मराठों का सारा बल आक्रमणों पर नहीं लग सकता था। सारांश यह कि प्रजा में विदेशी राज्य का भाव, राजाओं की परस्पर फूट और समान शत्रु को निकालने के भाव न थे, अतः हेस्टिंग्ज़ की कठिनाइयां थोड़ी थीं।

५-हेस्टिंग्ज़ का कार्य्य तीन विभागों में विभक्त हो सक्ता है:—

(i) राष्ट्रीय संशोधन।

(ii) अन्य राष्ट्रों से सम्बन्ध।

(iii) प्रबन्धकर्तृसभा से वैमनस्य।

६. राष्ट्रीय संशोधनः—(I) कोषसम्बन्धी संशोधनः—(क) बंगाल का कर एकत्रित करने के लि[ए] उसने अंग्रेज़ कलक्टर नियत किये और उन्हें ... के दीवानी अभियोगों के फ़ैसले करने का भी अ[धिकार]

नवाब बंगाल की पैन्शन कम कर दी और शाह आलम से कोरा तथा अल्लाबाद इस कारण छीन लिये कि वह मराठों के साथ मिल गया था, फिर इन इलाक़ों को ५० लाख रुपया के बदले शुजाउद्दौला के पास बेच डाला। वस्तुतः ये इलाके नवाब वज़ीर के थे, फिर बादशाह देहली को दिलाये गये, यदि बादशाह इन्हें छोड़ गया था तो वज़ीर को वापिस मिल जाते परन्तु हेस्टिंग्ज़ ने वे ५० लाख में बेचे। इन भिन्न २ विधियों से उसने ४८ लाख रुपया की बचत कर दिखाई यद्यपि व्यय पूर्व से बहुत अधिक हो गया था जैसे आगे चल कर पता लगेगा।

७. न्याय सम्बन्धी संशोधनः—(१) कलकत्ते में दो न्यायालय अपीलें सुनने के लिये बनाए गएः—

(क) सदर दीवानी अदालत जिस में रुपया विषयक अपीलें सुनी जाती थीं—यहां का प्रधान न्यायाधीश गवर्नर होता था,

(ख) सदर निज़ामत अदालत-जिस में अपराध सम्बन्धी मुक़द्दमें होते थे, उसका प्रधान एक देशी न्यायाधीश नियत किया गया।

(२) हिन्दुओं तथा मुसलमानों के क़ानूनों के आधार पर एक कोड बनवाया ताकि उन संचित सिद्धान्तानुसार अभियोगों का फ़ैसला हुआ करे।

(३) दीवानी मुक़दमों के फ़ैसला करने में जिस धनराशि का मुक़द्दमा होता था उसका चौथाई भाग न्यायाधीश लेते थे-यह रीति हेस्टिंग्ज़ ने बन्द कर दी।

८. अन्य संशोधनः—(१) व्यापार की वृद्धि के लिये तिब्बत तक व्यापारिक रास्ता बनवाया।

(२) नमक, अीम अफीर वस्त्र का व्यापार जो कम्पनी करती थी उसे अपने अधीन लेकर उन्नत किया।

(३) कलकत्ते में एक बैंक खोला।

(४) योरुप में लाल सागर द्वारा जहाज़ों के ले जाने का यत्न किया।

(५) संस्कृत अध्ययन के लिये आक़ुलों को उत्साह दिया।

(६) रायल एशियाटिक सोसाइटी बनाई जिस का प्रथम प्रधान सर विलियम जोन्स् था। भारत के इतिहास की गवेषणा में उस सभा ने अत्यन्त प्रशंसनीय काम किया है।

(७) मुसलमानों की पढ़ाई के लिये कलकत्ता में एक मदरसा खोला॥

९. रुहेलों से युद्ध। रुहेले कौन थे ? १७४० तक रुहेलखंड का नाम केहतर था और अब तक भी यही नाम हिन्दुओं में प्रसिद्ध है। जब हिन्दुओं को पारस्परिक ईर्षा द्वेष की चिरस्थायी कमज़ोरी अति प्रखर रूप धारण किये हुये थी तो एक उत्साही अफ़ग़ान ने नादिरशाह के आक्रमण-काल में स्वर्णीय अवसर पाकर यहां का राज्य प्राप्त कर लिया और सहस्रों की संख्या में सजातियों को आबाद किया। चूँकि ये रुहदेश के वासी थे, अतः देश का नाम रुहेलखण्ड पड़ गया।

इन पठानों ने दीन हिन्दुओं पर अपना राज्य घोर पाप, हत्या और अत्याचार के लोहहस्त से स्थिर कर लिया. परन्तु उनके नवीन बढ़ते राज्यको शुजाउद्दौला तथा आङ्गल न सह सके थे। इस कारण जब मराठों ने १७६९ से वारंवार हमले करके रुहेलों का नाक में दम कर दिया और शतशों को मारा, तो शुजाउद्दौला को शान्ति हुई।

(३) रुहेले भी उस प्रान्त में विदेशी थे और हिन्दू कृषकों को सताते थे, इस कारण एक विदेशी के स्थान पर दूसरा विदेशी आ जावे तो क्या हानि? युद्ध में जिस की लाठी उस की भैंस का सिद्धान्त ठीक होता है। अभिप्राय यह कि हेस्टिंग्ज़ उस देश को स्वहस्तगत करना चाहता था क्योंकि ऐसा करने से ही अंगरेज़ी इलाका रक्षित रह सकता था।

(४) मराठों को निकालने के लिये रुहेलों ने शुजा-उद्दौला को ४० लाख रुपया देना किया, मराठे स्वयं ही लौट गए जिस पर 'शुजा' को कुछ यत्न न करना पड़ा, तिस पर रुहेलों ने धन देने से इन्कार किया, तब यह कहा गया कि एक आंगल के सामने की हुई सन्धी को रुहेलों ने भंग किया है, आङ्गल मान में न्यूनता होती है, इस कारण उन प्रणघाती रुहेलों को दंड मिलना चाहिये।

हेस्टिंग्ज़ ने शुजाउद्दौला को सहायक सेना रखनी करने पर मजबूर किया जिससे (क) कोरा तथा इलाहाबाद ५० लाख रुपयों में वज़ीर को दिये गए (ख) रुहेलों को दण्ड देने के लिये आङ्गल

ा दी और उसका खर्च वज़ीर से लिया। (ग) युद्ध
 सारा व्यय शुजाउद्दौला ने देना था और उस
य के अतिरिक्त आङ्गलों को ४० लाख रुपया इनाम
तौर पर दिये जाने थे।

रुहेलखण्ड का विजय, १७७४--वज़ीर तथा आङ्गलों
 सेनाएं कर्नल शैम्पियन के अधीन रुहेलों पर जा
ीं। रुहेलों का पराजय हुआ, तब उन्हों ने ऐसे घोर
्याचार किये कि सहस्त्रों मारे गए और एक लाख के
ाभग लोग आक्रान्ता सेना के अत्याचारों से बच कर
ालों में जा छिपे। फिर युद्ध के अन्त में सहस्रों रुहेले
ा त्याग कर रामपुर में जा बसे और रुहेलखंड
ाध के साथ मिला दिया गया; इस प्रकार हेस्टिंग्ज़
धन के लोभ में प्रथम अन्याययुक्त कर्म किया;
न्तु विजेता लोगों में धर्म, न्याय और पुण्यादि
विचार अपने होते हैं, वे साधारण माने हुए
ों से नहीं चलते।

१०. महाराष्ट्र में अशान्तिः--१७७२ में
धोराव के देहान्त पर उस का छोटा भाई
ारायणराव पेशवा बना परन्तु इन दोनों के बच्चे

हुए, हत्यारे, देशविद्रोही, द्वेषी, लोभी, भीरु रघुनाथ राव, कुप्रसिद्ध रघोवा ने उस तरुण पेशवा को एक वर्ष के अन्दर मार डाला और स्वयम् पेशवा बन गया। मराठे इस हत्यारे को पेशवा पद पर न चाहते थे-इस फूट को देखकर निज़ाम ने पूना पर आक्रमण किया। उसे रघोवा ने पराजित तो किया परन्तु जीत का फल उसे ही त्याग दिया। हैदरअली भी आक्रान्ता होना चाहता था, उसे रोकने के लिए रघोवा बढ़ा, परन्तु पीछे नारायणराव के घर पुत्र उत्पन्न हुआ, तब मराठों ने अवसर देख कर उस नन्हे बालक को ही सिंहासन पर बुला दिया और एक प्रबन्धकर्तृसभा बना ली। यही माधोराव नारायण पेशवा है जिसने १७९५ में आत्मघात किया। रघोवा पेशवाई से हटने की सूचना पाते ही वापिस हुआ, यद्यपि पूना में सभा की सेना पराजित हुई -रघोवा ने अपने आप को सभा के कम्पो से मुकाबले में निर्बल देखकर पूना में प्रवेश न किया पर अंगरेजों से सहायता लेने गया।

११. मराठों की पहली लड़ाई के कारण (१) मद्रास तथा बंगाल के अंग्रेज़ बहुत से इलाके जीत

चुके थे परन्तु बम्बई के आंगलों ने विजय देवी
मुखड़ा अभी तक न देखा था ; मैसूर और मराठों
इलाकों पर अवसर पाकर वे अधिकार जमाना
चाहते थे।

(२) १७७५ में देशद्रोही, लोभी, हत्या
रघोवा ने यह सुअवसर आङ्गलों को दे दिया, पूना
के राज्य की प्राप्ति के लिये सहायता मांगी, अतः
सूरत में एक सन्धि हुई, तदनुसार (क) सहायता
बदले आङ्गलों को पूना राज्य में से सालसैट तथा बसी
दिये जाने थे और (ख) रघोवा ने ही अंग्रेज़ी सेना
का पूरा ख़र्च देना था, इस सन्धि के अनुसार बम्बई
आंगलों ने हेस्टिंग्ज़ से आज्ञा लेने के बिना सालसैट
तथा बसीन पर स्वत्व कर लिया और रघोवा को
पूना के राज्य का स्वत्वी बनाने के लिए सेना भेज
दी। मराठी सेना के अरस स्थान पर पराजित होने
से रघोवा शीघ्र पेशवा बन जाता, परन्तु उसी
समय हेस्टिंग्ज़ की इच्छा के विरुद्ध उसकी कौन्सल ने
बम्बई सेना को वापिस जाने की आज्ञा दी और
सालसैट लेकर रघोवा का साथ त्याग देने की इच्छा
पूना सभा से प्रकट की गई- इसे ही पुरन्धर की

हेस्टिंग्ज़ सभा की इस सन्धि के विरुद्ध था क्योंकि (i) प्रान्तिक राज्य के कर्म के विरुद्ध स्पष्टतया आज्ञा अनीतियुक्त था।

(ii) अङ्गरेजों की ओर से सन्धि करने की इच्छा प्रकट होनी उनकी निर्बलता को दर्शाती थी।

(iii) रघोबा ने भी इङ्गलैण्ड में कम्पनी को अपील की जिस पर उन्होंने सूरत के सन्धिपत्र को समर्थित किया--इस पर की फूट में अङ्गरेजों पर आपत्ति आ गयी; १७७८ में पूना के जीतने की इच्छुक बम्बई की सेना को कई कारणों से वापिस होना पड़ा रास्ते में घेर मराठों ने ऐसा सताया कि यद्यपि अँग्रेज तोपें आदि भारी सामान एक तालाब में फेंक चुके थे, तब भी बचना कठिन हो गया था, इस कारण वारगाँव पर सन्धि की गयी कि (क) १७७३ से अङ्गरेजों ने जो मराठी इलाके लिये हैं, वह वापिस दिये जावें।

(ख) जो सेना बंगाल से युद्ध करने को आ रही थी उसे रोका जावे और रघोबा का साथ त्याग दिया जावे। परन्तु बंगाल तथा बम्बई के अङ्गरेजों ने इस

अपमानयुक्त सन्धि का विचार न करते हुए सन्धि करने वाले अफ़सरों को पदच्युत कर दिया और मराठों से लड़ने के लिये सेनाएं भेज दीं ।

(i) १७८० में कर्नल गाडर्ड ने जो बंगाल से चल कर गुजरात तक ससैन्य पहुंचा था-अहमदाबाद को जीत कर बसीन पर भी अधिकार जमा लिया ।

(ii) पापहम ने ग्वालियर के अजीत पर्वती दुर्ग को सिन्धिया से फतह कर लिया ।

(iii) २०००० मराठों को कोंकन में हार्टली ने परा-जित किया ।

(iv) १७८१ में कर्नल कैमल ने सिन्धिया की सेनाओं को शिकस्त दी ।

(v) परन्तु गाडर्ड पूना को न जीत सका, वापिस जाते समय ३०००० मराठों ने उसे बहुत सताया, यदि कोई साधारण सेनापति होता तो अवश्यमेव यह सेना मारा गया होता । इन युद्धों में शूरवीर मराठों के बारंबार हारने का कारण यह था कि उन्हों ने छापे मारने की पुरातन रीति त्याग दी थी और पानीपत की न्याईं युद्ध क्षेत्रों में आकर सुशिक्षित सेना से लड़ते थे ।

१२. युद्ध के समाप्त होने के कारण-(१) यदि हेस्टिंग्ज़ ने मराठों से ही युद्ध करना होता, तो मराठों की बड़ी हानि होती परन्तु मैसूर के दूसरे युद्ध के कारण उस पर कई विपत्तियां आपड़ी थीं।

(२) मैसूरी सेना से निकाले हुए कर्नाटक निवासी मद्रास में शरणागत हुए थे, भोजन सामिग्री के न होने से १५७० मनुष्य प्रति सप्ताह वहां मर रहे थे।

(३) सुप्रसिद्ध फ्रांसीसी सेनापति बूसी बड़ी सेना सहित हैदरअली की सहायतार्थ आ रहा था।

(४) अत्यनुभवी वृद्ध सेनापति आयर कूट के रोगग्रस्त हो जाने से आङ्गलों का कोई अनुभवी सेनापति न रहा था।

(५) अमेरिका के स्वतंत्रता के युद्ध में इङ्गलैण्ड हार रहा था, इस कारण हेस्टिंग्ज़ को सहायता नहीं हो सकती थी। उपरोक्त कारणों से हेस्टिंग्ज़ मराठों के साथ सन्धि करके मैसूर युद्ध में पूर्ण ध्यान लगाना चाहता था, इस कारण सल्बई का सन्धिनामा १७८२ में समर्पित किया गया कि (1) रघोबा का

साथ आक्लल त्याग दें, और उसे ४ लाख रुपये की वार्षिक पैन्शन देकर सिन्धिया की क़ैद में रखा जावे।

(ii) ग्वालियर को छोड़कर बाक़ी सारे जीते हुए इलाके सिन्धिया को वापिस दिये जावें और बड़ोच भी सिन्धिया को मिले।

(iii) बक्षीन तथा गुजरात के अन्य सारे इलाके मराठों को वापिस दिये जावें।

(iv) किसी यूरुपीय जाति को मराठा राज्य में व्योपारिक कोठियां खोलने का अधिकार न दिया जावे और नाही किसी ऐसी जाति से अंगरेज़ों के विरुद्ध मराठे बातचीत कर सकें।

(v) सारे मराठा राज्य में अंग्रेज़ बिना रोकटोक व्यापार कर सकें और एक दूसरे के शत्रु को कोई दल सहायता न दे। पिछली दो शर्तें महराठों के स्वतंत्र राज्य की घातक हैं:—जब कोई राज्य अपनी इच्छानुसार सन्धि विग्रह न कर सके और शत्रु को ... हिर न रख सके तो स्वराज्य किस बात का?

उसने रण दी और मराठों को दिखा दिया कि
मानों के स्थान पर स्थिर हिन्दु राज्य भारत
पित करना तुम्हारे लिये असम्भव है।

१३. हैदरअली [१७०२-१७८१]–१७०२ में
हैदरअली नामी का जन्म हुआ जो अपने
वीरता, धीरता, चतुरता, नीतिज्ञता के कारण
सिद्ध हुआ है, वह मैसूर के हिन्दु राज्य में आकर
सिपाही बना, अपनी होशियारी के कारण
समय में ही वहयूथपति के पद पर नियत हु
दिन्दिगाल के ज़िले का इसे शासक बना
वहां कामयाब होने से बंगलोर का इलाका
ने हैदर के अधीन कर दिया; फ़्रांसीसियों
होने पर जब त्रिचनापल्ली का इलाका मैसूर
तो वह भी हैदर के शासन में कर दिया ग
किसी को क्या मालूम था कि यही सपापा
बगली सांप की न्याईं राजा को ही काट
राज्य में जितने मुसलमान सैनिक थे उन्हें
साथ मिला लिया और सुअवसर पाकर
फ़तह कर ली, फिर हिन्दु मंत्रियों को मरवा

किये, तब १७६६ में राजा को सर्वथा सिंहासन से उतार कर स्वयम् मैसूर का सुलतान बन बैठा। इस घोर कर्म के करने का इसे शुभ अवसर मिला था क्योंकि (क) पानीपत के भयंकर पराजय के कारण मराठे चुप बैठे थे। (ख) मैसूरी हिन्दुओं में दूसरे हिन्दुस्तानियों की तरह स्वतंत्रता की हिम्मत मर चुकी थी, अतः उन्हों ने ऐसे घातक मुसलमान का राज्य भी चुपके से स्वीकार कर लिया।

(ग) आङ्गलों का कोई वीर सेनापति भारत में मौजूद न था, इस कारण वह हैदर से युद्ध न कर सकते थे। यद्यपि हैदर ने पुरातन आर्य्य राजधानी मैसूर में मुसलमानी राज्य स्थापित किया किन्तु इस का राज्य चिरस्थायी न हुआ क्योंकि (क) धर्म के तअस्सुब में आकर मुसलमान बनाने के यत्न में हिन्दुओं पर उसने घोर अत्याचार किये।

(ख) सब ओर से मैसूर शत्रुओं से घिरा हुआ था, मराठों तथा आङ्गलों के साथ बारंबार युद्ध हुए जिन में अन्त में उनकी हार हुई, तब ३४ वर्षों में मैसूरी राज्य पुरातन हिन्दु वंश के हाथ में आ गया। थोड़े दिनों में हैदर ने बेदनूर पर हमला करके उसे

खूब लूटा। यहां एक असीम कोष उसके हाथ लगा जो भावी युद्धों में उस के काम आया। फिर उसने मालाबार पर चढ़ाई की, कलीकट का राजा जमूरन महल के अन्दर आग में जल कर मर गया, हैदर ने लूट और घात से प्रजा का नाश कर दिया। परन्तु माधोराव ने इसका सिर नीचा किया (देखो अ० ११)

१४. अंग्रेज़ों और हैदर की पहिली लड़ाई-(१७६७ ६९) हैदर सब तरफ अपना राज्य फैलाना चाहता था, अतः मराठों, निज़ाम और आङ्गलों ने मिलकर उसे दबाना चाहा। बड़ी चालाकी से हैदर ने मराठों तथा निज़ाम को धन दे कर अपनी जान छुड़वाई और केवल आङ्गलों से मुठभेर की-यही मैसूर की पहली लड़ाई है।

(क) चांदगाम और त्रिनोमली पर स्मिथ सेनापति ने हैदर को पराजित किया।

(ख) बम्बई की सेना ने बंगलोर फ़तह कर लिया, परन्तु अन्त में उस सेना को पराजित होकर वापिस जाना पड़ा।

(ग) स्मिथ ने बंगलोर का घेरा किया और

जेनरल वुड ने दिन्दिगाल, पालघाट आदि के इलाके फ़तह कर लिये।

(घ) मद्रास की राजसभा ने ग़लती करके वुड को सेनापति बनाया जिसने स्मिथ की सारी विजयों को खाक में मिला दिया, हैदर ने उस के दाँत तोड़े और अकस्मात मद्रास पर आक्रमण किया।

(ङ) हैदर के इस हथकण्डे से चकित और भय-भीत होकर अंग्रेज़ों ने हैदर से सन्धि कर ली। उस सुलह की शर्तें ये थीं:—

(१) एक दूसरे से जीते हुए इलाके वापिस दिये गए और (२) आक्रमण होने पर एक दूसरे को सहायता देनी मानी गयी।

१५. चेतसिंह तथा हेस्टिंग्ज़—मराठों तथा हैदर अली के साथ युद्धों में निमग्न होने के कारण हेस्टिंग्ज़ को धन की बड़ी ज़रूरत थी, बंगाल के कोष में रुपया न रहा था, इङ्गलैण्ड का राज्य या कम्पनी भारत की विजयों में एक कच्ची कौड़ी नहीं ख़र्चना चाहते थे, तब अंग्रेज़ी इलाके की रक्षा और वृद्धि के लिये धन तथा रुपया एकत्रित करना आवश्यक था।

गवर्नर जनरल के बनारस आने पर राजा ने उसके पैरों पर अपनी पगड़ी उतार कर रखी और अपनी असली दशा बताई परन्तु हेस्टिंग्ज़ राजा के साथ न बोला, केवल यही कहा कि अपराध के लिये कम्पनी को ५० लाख रुपया देकर छूट सकते हो। राजा ने अपने अपमान तथा अन्याययुक्त दण्ड को देखकर स्पष्ट वक्तृता की, हेस्टिंग्ज़ अधिक क्रुद्ध हुआ और राजा को उसके महल में ही क़ैद रक्खा। जब यह अशुभ सूचना नगरवासियों तथा राजा की अन्य प्रजा को मिली तब वे उठ खड़े हुए, राजा को क़ैद से छुड़ाया और हेस्टिंग्ज़ को घेर लिया। गवर्नर को सहायतार्थ लखनौ आदि से सेनायें पहुंच गयीं। बनारस, चुनार, रामनगर को फ़तह कर लिया गया। परन्तु इन विजयों में सारा कोष सिपाहियों के हाथ लगा। हेस्टिंग्ज़ कोरा का कोरा मुँह ताकता और हाथ मलता रह गया और कठिनता से अपनी जान बचाई। बनारस का मालि चेतसिंह के भांजे को दुगना कर लेकर दिया गया परन्तु हेस्टिंग्ज़ ने अपने जीवन को दूषित कर लिया, न तो कोष उस के हाथ लगा और न राजा काबू में आया, मुफ़्त में अन्याय किया।

आज्ञा देदी और प्रण दिया कि उनकी जागीर तथा धन उनसे नहीं छीने जावेंगे।

हेस्टिंग्ज़ को धन की आवश्यकता थी, बेगमों धन लेने के बिना नवाब रुपया नहीं दे सकता था इस कारण प्रण की परवाह न करके और माता ु के परस्पर अस्वाभाविक विरोध का विचार न कर हुए हेस्टिंग्ज़ ने आकुल सेना से बेगमों पर हमल करके धन लेने के लिये नवाब को प्रेरित किया, है स्टिंग्ज़ के वापिस जाने पर नवाब को पश्चात्ता हुआ और उसने ऐसे घृणित कर्म करने से हेस्टिंग्ज़ को इन्कार कर भेजा परन्तु गवर्नर ने बार बार धम काया, तब तो नवाब मान गया।

बेगमों पर फ़ैज़ाबाद में हमला किया गया और उनके नौकरों को बहुत कष्ट देकर कोष का पता लगाया गया, राज्य कुमारियों और राज्य दुलारी बेगमों को ज़नाने से निकाल कर बेइज़्ज़त किया गया, अन्त में ८० लाख रुपया हेस्टिंग्ज़ के पास भेजा गया। सारे अवधमें इस घटना से अत्यंत कोलाहल मचा। जब हेस्टिंग्ज़ पर बलपूर्वक इलज़ाम लगाये जाने लगे तो ... कि बेगमों और उनकी प्रजा ने

हमें ,फैसले करने के लिये एक प्रधान न्यायालय, गवर्नरजनरल के अधिकार से बाहिर, बनाया गय

(६) कम्पनी के हाथ में दोनों राज्य त व्यापार रक्खे गये। हां, राज्य सम्बंधी बातों आकूल पार्लियामैंट को कम्पनी ने सूचित रखना था ताकि कम्पनी .खुदमुख़्तार न होजावे।

एक्ट के लाभ—(i)कम्पनी का स्वतंत्र राज्य टूट गया, तब से केवल व्यापारिक लाभों से प्रेरित हो कर भारत का शासन करने की प्रवृत्ति होगी (ii) मद्रास, बम्बई, बंगाल की सरकारें परस्पर लड़ती रहती थीं, भावि में ऐसा नहीं हो सकेगा, तीनों संगठित होने से उनका बल बढ़ जावेगा।

कम्ज़ोरियां—(i)गवर्नर जनरल का अपनी सभा के बिना कुछ न कर सकना हानिकारक था, उस समय के राज्य के लिये गवर्नर को बहुत सी बातें अपने अधिकार पर कर लेने से अधिक सुगमता होती। पहिले पहिल ये लोग सभा के सभ्य नियत हुए—

फ्रैंकसिस, कर्नल मान्सन,जनरल क्लेवरिंग और

नन्दकुमार तथा ऐसे कई विरोधियों से पीछा छुड़ाने के लिये राजा साहब को फांसी दिलवाई गई। बंगालियों के दिलों में इस घटना से अंग्रेज़ी क़ानून के लिये भय और घृणा के भाव पैदा होगए जो शनैः२ कम हुए।

ii. न्यायालय गवर्नर से स्वतंत्र करने से परस्पर दोनों में लड़ाई होती रही।

iii. कोई उच्च नियामिक सभा निकट न थी—क्योंकि सभा, न्यायालय तथा गवर्नर के परस्पर झगड़ों का इंगलैंड में फ़ैसला किया जा सकता था, जो भारत से ६ मासों की दूरी पर था।

iv न्यायालय में अंग्रेज़ी क़ानून के अनुसार फ़ैसले करने से प्रजा अत्यन्त दुखित हुई।

१८. फ़ाक्स और पिट्ट के प्रस्ताव—भारत के राज्य प्रबन्ध की ओर पार्लियामेंट का ध्यान १७८० से विशेष होने लगा। फ़ाक्स ने एक अत्युत्तम प्रस्ताव पेश किया कि भारत का शासन कम्पनी से हटा कर इंगलैंड के राजा के [illegible] जावे और [illegible]

(ग) भारतनिवासी पार्लियामेन्ट को अपने दुःखों के सुनने वाला न्यायालय मानने लगे.

(घ) यह बर्क आदि महानुभावों की श्रेष्ठता दिखाता है क्योंकि उन्हों ने निर्भयता से ऐसे प्रधान कर्मचारी पर मुक़द्दमा चलाया ताकि निर्णय हो कि आंगल राज्य भारत में रिश्वतख़ोरी तथा अत्याचार से होगा या न्याय तथा दया से। इस मुक़द्दमें से उद्देश स्पष्ट कर दिया गया कि भारत में न्याय तथा दया से राज्य होगा और कि कम्पनी के कर्मों के निरीक्षण के लिये आंगल जाति मौजूद है जो उक्त उद्देश को पूरा करावेगी।

अध्याय १६

आङ्गल राज्य की वृद्धि।

लार्ड कार्नवालिस १७८६—९३

१ जीवन—कार्नवालिस एक लार्ड के घराने में १७३८ दिसम्बर में उत्पन्न हुआ। २२ वर्षों की आयु में

सम्पन्न कार्नवालिस, हेस्टिंग्ज़ के प्रस्थान से २० मास पश्चात् भारत में आया तब तक म० मैकफर्सन स्थानापन्न गवर्नर जनरल रहा॥

३–कार्नवालिस को भेजने के उद्देश्य–कम्पनी के किसी कर्मचारी को गवर्नर जनरल का पद देना हानिकारक था क्योंकि :–

(क) कलकत्ता सभा के सभ्य उसे अपने समान समझ कर अधीन नहीं होना चाहते थे, अतः महालाट हेस्टिंग्ज़ जैसे को कष्ट उठाने पड़ते थे। प्रतिष्ठित, सन्मान योग्य तथा लार्डवंशज को महालाट बनाने से सब कर्मचारियों के दबे रहने की आशा थी। तब से लेकर अब तक इंगलैण्ड से जो महाशय महालाट बन कर आये हैं वे लार्ड ही होते हैं।

(ख) भारतवर्ष में रहा हुआ अधिकारी भारतीय रजवाड़ों के परस्पर संबन्धों को जानता होगा, वह उनकी त्रुटियों से लाभ उठा कर युद्ध करेगा जिन के कारण कम्पनी की आय और व्यापार कम हो जायेगा।

(ग) कम्पनी के किसी कर्मचारी को नियत न करना परन्तु इंगलैण्ड के एक प्रतिष्ठित नीतिज्ञ को

कर के तुंग भद्रा नदी के दक्षिण के सारे प्रान्त में अपना स्वतन्त्र राज्य मना लिया था और आंग्लों को यह नामी शत्रु समझता था ।

ii. कनाड़ा के ईसाइयों को उसने अत्यन्त पीड़ित किया-यहां तक कि ३०००० नर नारियों को बलात्कार से मुसलमान बनाया ।

iii. कूर्ग देश पर आक्रमण करके वहां के हिन्दू निवासियों पर अकथनीय अत्याचार किए ।

iv. ट्रावन्कोर का हिन्दू राजा आंग्लों का मित्र था–टीपू ने कई बार आक्रमण करके राजधानी के अतिरिक्त उसके सारे देश का नाश किया था । राजा ने आंग्लों से सहायता मांगी–इस कारण युद्ध करना पड़ा ।

v. साथ ही टीपू फ्रांसीसियों के साथ अधिक मिलाप रखने से अंग्रेज़ों के लिये कण्टक हो रहा था । टीपू की शक्ति को कम करना आभीष्ट था और युद्ध के आरम्भ करने से पूर्व निज़ाम तथा मराठों को आंगलों ने अपने साथ मिला लिया । यह दोनों ऊपर से आंगलों के साथ मिल तो गए किंतु वास्तविक सहायता नहीं देना चाहते थे । क्योंकि टीपू

(४) १७९२ में कई अजीत, लोह के समान दृढ़ दुर्गों को जीत कर टीपू को बाध्य किया कि वह अपने डेरे उखेड़ कर नगर में शरणागत हो। इस पर कार्नवालिस नगर को जीतने के लिए बढ़ा। टीपू हौसला हार गया—इस लिए उसने सन्धि की प्रार्थना की जिस के स्वीकृत हो जाने से युद्ध समाप्त हो गया।

७. सन्धि—(क) टीपू के राज्य का अर्द्ध भाग आंग्लेंा ने ले लिया।

(ख) ३ करोड़ रुपया युद्ध-व्यय टीपू से लेने का प्रण लिया और तीस लाख रुपया मराठों को मिला।

(ग) श्री रंगपटम में आंग्ल कैदी छुड़ाए गये।

(घ) इन शर्तों को पूरा करने के लिये टीपू ने दो पुत्र ओल में दिये।

(ङ) इस युद्ध से दिंदीगल, बारहमहाल मालाबार, सलीबरी, कालीकट आंग्लों के शासन में आ गये। कूर्ग का प्रान्त उस के हिंदू राजा को दिया गया। मराठों तथा निज़ाम को भी कुछ इलाके मिले।

ने जो नीलाम की विधि निकाली थी, उस से उत्पन्न अस्थिरता के कारण भूमि की शक्तियों को स्थिर रखने की चिन्ता किसी को न थी, फिर भूमियों को उन्नतकरने का क्या विचार हो सक्ता था ? और नीलाम में भूमि ख़रीदने वाले ज़िमींदार किसानों को बहुत सताते थे । इन त्रुटियों को दूर करने का कार्य्य महाशय शोर को सौंपा गया—उस की गवेषणा का परिणाम स्थिर बन्दोबस्त हुआ । कार्नवालिस भी उस विधि का बहुत सहायक था क्योंकि:—

[क] तीन प्रान्तों का $\frac{1}{3}$ भाग जंगल से आच्छादित था ।

[ख] जो भूमियाँ जोती भी जाती थीं वे उत्तरोत्तर निकृष्ट हो रही थीं ।

[ग] यदि बन्जर तथा अन्य भूमियां कुछ काल के लिये कृषि अर्थ दी जातीं, तो करकी वृद्धि के भय से

और उन से आय का $\frac{9}{10}$ भाग लेना किया । :
आय स्थिर करदी गई जो कि अब तक है, य
कई वार इस के बदलने का विचार किया गया :
लोकापवाद तथा प्रण देने से गवर्नमेंट ने इस वि
को नहीं हटाया। भारत निवासी अब अन्य प्रा
में यही स्थिर कर विधि ठहराने की प्रार्थना बारम
कर रहे हैं, देखिये वह शुभ दिन कब आता है ?

९. स्थिर कर विधि के लाभ-(क) सब :
जातियों में नियत तथा शीघ्र २ न बदलने व
भौमिक लगान लिया जाता है और ऐसा लेना
चाहिये ताकि विश्वास,आशा तथा हर्ष पूर्वक कृषक
जोत सकें तथा उस पर पूंजि लगा कर उन्नति
सकें। लगान की अनिश्चिति में किसानों का वि
श्वास,आशा टूट जाती है। इसलिये कृषि की उ
तथा कृषकों की समृद्धि के लिये स्थिर ल
करना परमोपयोगी है। बंगाल में दुष्काल
होगये, मृत्यु की संख्या कम हो गई,
अधिक अमीर होने लगे और भूमिपति
बहुत समृद्ध हो गये क्यों कि यद्यपि उस समय

वालिस ने ८७ प्रतिशतक राशिदान की राज्य कोष में ली, १० ०/० भूमिपतियों को उनके श्रम का फल दिया, तथापि अब लगानों के बढ़ जाने से २८ ०/० राज्य कोष में जाता है और शेष इन भूमिपतियों को मिलता है।

[ख] कृषकों तथा भूमिपतियों के धन से व्यापार की बड़ी वृद्धि होती है । बंगाल में दोनों कृषि तथा व्यापार हैं और व्यवसाय की वृद्धि भी इस कारण होगई है ॥

[ग] बंगाल से धन प्राप्त करके अंग्रेज़ सारे भारत का विजय कर सके—भारत के विजय करने में मद्रास तथा बम्बई से उन्हें कोई आर्थिक सहायता नहीं मिली, केवल बंगाल के सन्तुष्ट तथा समृद्ध निवासियों ने बहुत सहायता दी ॥

[घ] जिस देश में रूपया बहुत हो, वहां के निवासी राज्य में अशान्ति तथा परिवर्तन नहीं चाहते । आज कल योरुप तथा एशिया में आक्रान्तियां रक्त पात के बिना ही जाती हैं—उस का एक कारण व्यापार तथा पूंजी वृद्धि है । आक्रान्ति, अशान्ति और अप्रबन्ध से अन्तरजातीय व्यापार रुक जाता है—

भेद को देख रहे हैं। अतः बेहतर हो कि सारे ही भारतवर्ष में कर की विधि स्थिर हो जाय, और उस से भूमिपतिओं का अधिकार बहुत न रखते हुए कृषकों को उन्नति का फल देने का यत्न किया जावे।

११. कार्नवालिस के संशोधनः—(१) गवर्नमेंट के कर्मचारी अभी तक बहुत उत्कोच तथा उपहार लेते थे-इस कुरीति का कारण कर्मचारियों के अल्प वेतन थे, अतः अंग्रेज़ों की वेतन-वृद्धि कर दी गई ताकि दुराचार दूर हो कर नियन्त्रन, सन्मानभाव तथा उत्तरदायित्व बढ़ जावें।

२. कार्नवालिस की सम्मति थी कि बहुत से युरोपियन कर्मचारियों के बिना, भारतवर्ष को काबू नहीं किया जा सकता, कि "जब भारतवासी आंगलों से रीति रिवाज, धर्म, भाषा, नियमों में भिन्न हैं तो उनका अधीन रहना कठिन है; राज्य की अशुद्धियां, कर्मचारियों के अत्याचार आदि से वे बारंबार विद्रोह करेंगे—उन कठिन समयों में आंगल ही इस को बचा सकते हैं, देश निवासियों

पर कदापि विश्वास नहीं हो सकता" इस पक्ष
सम्मति के आधार पर कार्नवालिस ने भारत
निवासियों को उच्च पदों से वंचित रखा।

३. न्यायाधीशों को प्रबन्धकर्त्ताओं से सर्वथ
पृथक् कर दिया, किन्तु इस उत्तम रीति को शीघ्र
हटा दिया गया। शोक है कि आज तक सुराज्य
तथा न्याय का यह प्रथम आधार भारतवासी फि
प्राप्त नहीं कर सके। कार्नवालिस तो इस विषय मे
यहाँ तक बढ़ा कि उसने इंगलैंड की विधि के अनुसार
प्रजा को अधिकार दिया कि राज्य कर्मचारियो
पर उनके अपराधों वा अत्याचारों के लिए न्याया
लयों में वे मुकदमें चला सकते हैं।

ने इन्हें बन्द करने का बहुत यत्न किया और पोलीस का महकमा खोल दिया ।

६. फौजदारी अभियोगों तथा मुसलमानों के पारस्परिक मुकद्दमों में मुसलमानी स्मृति के अनुसार फैसले होते थे और इस स्मृति के नियमों को चलाने वाले हर न्यायाधीश के साथ एक काज़ी होता था । हिन्दुओं के पारस्परिक अभियोग मनुस्मृति के अनुसार फैसले होते थे—और जो मिश्र जातीय मुकद्दमे होते थे वे न्यायाधीश अपनी बुद्धि अनुसार करता था—परन्तु काज़ी तथा पण्डित की सहायता विचित्र थी, अतः एक नई स्मृति बनाने का यत्न किया गया ।

इन सब संशोधनों से कार्नवालिस राज्य में बहुत स्थिरता लाया और भावि शुद्ध भारतीय शासनशैली का उसने आधार रक्खा । अन्त में यह कहना उचित होगा कि स्थिर लगान विधि, राज्य कर्मचारियों के दुराचारों के संशोधनों तथा प्रजाहित राज्य प्रदानार्थ कार्नवालिस प्रसिद्ध रहेगा ।

सरजान शोर १७९३-९८ तक

१२. बंगाल में शोर का कार्य—स्थिर लगान कराने वाले शोर को महा लाट बना दिया गया क्योंकि कम्पनी की आय इस महाशय ने स्थिर कर दी थी और अन्य प्रान्तों में भी स्थिर आय करने की आवश्यकता थी। शोर ही इस कार्य्य को पूर्ण कर सकता था। यह महाशय दयावानदार, उच्च भावों वाला, भारत प्रेमी, स्वकर्तव्याकर्तव्य को भली प्रकार समझने वाला और पराधिकारों को पादाक्रान्त न करने वाला सुयोग्य महा लाट था।

१३. इसके समय में निम्न लिखित घटनाएं हुईं; (१) बनारस की स्थिर कर विधि: राज्य में स्थिरता, कृषि की उन्नति और भूमिपति तथा कृषक के संतोष के लिए बनारस में भी स्थिर लगान विधि कर दी गई और मद्रास तथा बम्बई में इस विधि को प्रचलित करने के लिये विचार होने लगा।

(२) कर्दला का युद्ध—मराठों ने कर्दला के स्थान पर निज़ाम को घोर पराजय देकर उसका बल तोड़ दिया। उस के कर दार बनजाने से मराठों

का बल अत्यन्त बढ़गया। शोर ने कम्पनी की आज्ञानुसार इस घटना में कोई हस्ताक्षेप न किया।

(३) अवध में नया राज्य-१७९७ में आसफ़उद्दौला अधिक मद्यपान, भोगों और दुर्व्यसनों में लम्पट रहने से मर गया। एक नीच कुल का दत्तक युवक वज़ीरअली नवाब बना। प्रजा को उसकी नीचता का पता लगने से अत्यन्त असंतोष हुआ, तब शोर ने हस्ताक्षेप न करने की नीति त्याग दी। लखनौ में आकर वज़ीरअली के विषय में अन्वेषण किया, तब मृत नवाब के भाई सआदतअली को उसने नवाब बनाया। इस नवीन नवाब ने आङ्गलों को ७६ लाख रुपया वार्षिक कर देना स्वीकार किया। इलाहाबाद का दुर्ग भी उनके हवाले किया। इस के बदले आङ्गलों ने अवध में एक राष्ट्र-सहायक सेना रक्षार्थ रक्खी। वज़ीर अली को पेन्शन देकर बनारस में नज़रबन्द रक्खा गया। अतः अवध के अंग्रेज़ी राज्य में मिलाने का यह दूसरा कदम था।

१४. (४) शोर का निरहस्ताक्षेप-टीपू सुलतान ने शोर की कमज़ोरी को देखकर बल संचय करना आरम्भ किया ; फ्रांसीसियों से कई प्रकार की

सहायता ली और अन्य देशों से भी आङ्गलों के विरुद्ध सहायता मांगी। शोर की निर्हस्ताक्षेप की नीति से हस्ताक्षेप की नीति वालों के विचार में कठनाइयों का दल इकट्ठा हो गया परन्तु यह परस्पर विरुद्ध विचार हैं। शोर दयालु तथा कर्तव्य पालन करने वाला महाशय था। उसे कम्पनी से निर्हस्ताक्षेप की नीति की आज्ञा मिली थी—और इस पर वह आरूढ़ रहा। उसका उत्तराधिकारी विरुद्ध विचार रखता था। इङ्गलैंड के अधिकारियों ने पहिले पहिल उसके विरुद्ध शब्द उठाया परन्तु जब उत्तराधिकारी वेलज़ली ने भारत का बड़ा भाग जीत कर दिखा दिया तो शत्रु भी मित्र होगये। 'सरजौन शोर' की सेवा की प्रशंसा अवश्य हुई क्योंकि इङ्गलैंड जाने पर उसे लार्ड टेनमथ की उपाधि दी गई॥

मार्क्वइस अव वैलज़ली, १७९८-१८०५

१५. वैलज़ली का जीवनः—१७६० में रिचर्ड वैलज़ली एक उच्च वंश में उत्पन्न हुवा। ईटन और हैरो के सुप्रसिद्ध विद्यालयों में उस ने विद्याग्रहण की, वहां अपने अध्यापकों का प्रिय रहा. अपने पिता की

मृत्यु पर लार्ड मार्निंगटन बना और १७८४ में आङ्गल पार्लियामेंट की लोक सभा का सभ्य हुआ-वहां निरन्तर १७८८ तक उसने अपनी योग्यता दिखाई, १७९४ में उसे गुप्त सभा (Privy Council) का सभ्य बनाया गया, उसी समय वह भारत की प्रबन्धकर्त्री सभा का भी सभ्य हुआ, तब से उसने भारत के सम्बन्ध में पुस्तकें पढ़ीं। लार्ड कार्नवालिस से उस ने बहुत परिचय रक्खा; अपने भाई आर्थर वैल्ज़ली से जो १७९६ में मद्रास में आया था पत्रों द्वारा भारत का वृत्तान्त प्राप्त करता रहा। लक्ष्मी उस के मुख पर विराजमान थी, वह शासक बनने के वास्ते उत्पन्न हुआ था, उस के मित्र अनुभव करते थे कि इङ्गलैण्ड में उसे अल्प कार्य क्षेत्र मिला हुआ है। वस्तुतः वैल्ज़ली अद्भुत शक्ति का भण्डार था, वह बहुत होशियार, वीर, नीति निपुण था जैसा कि इस के कार्य से स्पष्ट होगा ॥

१६. वैल्ज़ली के समय भारत की राष्ट्रीय दशा- (१) योरुप में अन्य देशों से साथ फ्रांस के युद्ध हो रहे थे जिन में इंग्लैंड चुप न बैठा था बल्कि जहां २ फ्रांसीसी तथा आंगल इलाके थे वहां २ युद्ध भारी थे, इसलिये भारत में भी युद्ध होना आवश्यक था। [२]

भी टीपू से कुछ कम शत्रु न थे। इन दोनों को निज़ाम के सहाय्य से वंचित करने के लिए वैलज़ली ने बड़ी बुद्धिमत्ता से काम लिया। निज़ाम i कुर्दला के युद्ध से अत्यन्त निर्बल हो चुका था, ii. मराठे चौथ के लिए उसे सर्वदा तंग किया करते थे और वह स्वनिर्बलता के कारण उनको मांगों का निरादर करने में सर्वथा अशक्त था। iii मराठों से बचने की चेष्टा में उसने फ्रेंच सैनिक तथा सेनापति रखे थे, पर कुर्दला के स्थल पर वे भी कुछ न करपाये थे, अतएव निज़ाम स्वयं अंग्रेजों की शरण आकर अपने टूटे फूटे राज्य को मराठों से बचाने का इच्छुक था। एवं सहायक सेना सन्धी उसने सहर्ष स्वीकार करली। इस प्रकार की सन्धी को यह व्यापक शर्तें हुआ करती थीं कि—

(क) अंग्रेजों की स्वीकृति के बिना किसी राष्ट्र से पत्रव्यवहार, स्वतन्त्र युद्ध और सन्धि न करना।

(ख) अंग्रेजों के अतिरिक्त सब योरुपीनों को राज्याधिकारों से वञ्चित रखना।

(ग) सेना का रखना जो रियासत पर होने पर आंगलों को स्का व्यय रियासत ही देवे।

(घ) एक आँग्ल रेज़ीडेन्ट रजवाड़े में र[illegible]
राज्य प्रबन्ध में उसकी सम्मति ली जावे ।

(ङ) इन सब अधिकारों के बदले आँग्लों [illegible]
रियासत को आक्रान्तों से रक्षित रखना होता था [illegible]

चौथा मैसूर युद्ध १७९९

१९. कारण—(क) अब टीपू को छल कपट, गुप्त
पत्र व्यवहार तथा अभिमान का दण्ड देने के वास्ते
वैलज़्ली ने तय्यारी की । उसे लिख भेजा कि वह
फ्रान्सीसों से अपना सम्बन्ध खुल्लम खुल्ला त्यागदे ii.
और निज़ाम की न्याईं सहायक सेनासन्धि कर लेवे ।
जब टीपू ने इन शर्तों को अस्वीकार किया तो
वैलज़ली ने युद्ध उद्घोषित कर दिया ।

सत्य तो यह है कि टीपू की आन्तरीय अवस्था
बहुत ख़राब थी i. उसके पास धन की कमी थी ii
सारी हिन्दू प्रजा उसके अत्याचारों से क्रुद्ध थी, iii.
राज कर्मचारी भी उसके क्रोध, अविश्वास, और
क्रूरता से तंग आये हुये थे । IV. आंग्लों ने अपने
गुप्तचरों द्वारा मैसूर के एक एक [illegible]
लिया था ।

इन कारणों से मैसूर जतह करना उन के लिए कुछ कठिन न था— v मराठों तथा निज़ाम ने भी मैसूरी युद्ध में आङ्गलों को सहायता दी। इस प्रकार एकाकी, निर्धनी, प्रजा अप्रिय, कर्म्मचारियों का अविश्वासपात्र टीपू कब तक आंगलों के साथ लड़ सकता था? जिस की लाठी उसकी भैंस का सिद्वान्त सर्वव्यापी है। भारतीय राजाओं की परस्पर फूट और टीपू की कमज़ोरी से वैलज़ली ने लाभ उठाया।

२०. युद्ध—जनरैल हैरिस ने मद्रास से और जनरल स्टूअर्ट ने बम्बई की ओर से राजधानी श्री रंगपटम पर धावा किया, निज़ाम की २:००० सेना का सेनापति गवरनर जनरैल का भाई आर्थर वैलज़ली था-पीछे इसी महाशय ने नैपोलियन को हराने में अत्यन्त प्रसिद्धी पाई और तब से ड्यूक-आफ़ वेलिंगटन प्रसिद्ध हुआ—इसने भी उत्तर की ओर से आक्रमण किया।

ii. टीपू मद्रास तथा बम्बई की सेनाओं को नहीं मिलने देना चाहता था-परन्तु स्टुअर्ट से सदासीर के स्थान पर शिकस्त खाई और हैरिस से मल्लावली

ii. आङ्गलों ने मैसूर के दक्षिण का भाग स्वयं ले लेया जिस से कारोमण्डल तथा मालाबार तटों के मध्यवर्ती इलाके भी उन के पास आगये। मालाबार पर मैसूर का समुद्रीय इलाका भी स्वयं आङ्गलों ने ले लिया।

iii. जिस हिन्दू राजा को हैदर ने सिंहासन से हटा कर स्वयं राज्य लिया था, उसी के वंश में से एक युवक को मैसूर का राज्य सहायक सेना सन्धी के आधार पर दिया गया और अत्यन्त बुद्धिमान् राज्यकार्य्य कुशल एवं मन्त्री पूर्निया को उस का संरक्षक बनाया गया। सारी हिन्दू प्रजा ने इस दयालुता के कार्य्य के लिये आंगलों को धन्यवाद दिया।

iv. टीपु के पुत्रों को पैन्शन देकर वीलौर में भेज दिया गया।

परिणाम— एक वर्ष के अन्दर ही वेलज़ली ने दक्षिण में टीपु का नाश कर, मराठों को भय भीत कर, फ्रांसीसी प्रभाव को रसातल तक पहुंचा दिया। निज़ाम को क़ाबू कर लिया और मैसूर में हिन्दू राज्य संस्थापित करने से भारतीय प्रजा को अपना दिलदादा कर लिया। सारे देशीय रजवाड़ों के भी

अवध के उत्तरीय भाग का लेना—अवध का प्रान्त बहुत गुंजान आबाद और ज़रखेज़ है ।

यह सारा प्रान्त मराठों और सिक्खों के आक्रमणों से भयभीत रहता था, कुछ वर्षों से काबुल के बादशाह ने गुप्तचर भेजकर इस देश की दशा जंचवाई थी। यदि अवध किसी शत्रु के अधीन हो जाता तो अंग्रेज़ इलाके में वह शत्रु सीधा आ सकता था। वज़ीर की कमज़ोरी को देख कर वेलज़ली ने पूर्वजों का कुछ विचार न करके नवाब से उत्तरीय अवध तथा रुहेलखण्ड लेना चाहा।

वज़ीर को बताया गया और यह सर्वथा सत्य है कि तुम्हारी सेना तथा प्रजा तुम से अत्यन्त असन्तुष्ट है- इसलिये शत्रु के आक्रमण के समय उनपर विश्वास नहीं किया जा सकता, ॥ वज़ीर ने जो कम्पनी सेना पूर्व रखी हुई थी उसका पूर्ण व्यय भी नहीं दिया था। और देश में अप्रबन्ध होने के कारण वह आगे को रुपया दे भी नहीं सकता था. जब अधिक सेना इस प्रान्त की रक्षार्थ आवश्यक हुई तो देश आय से उस का व्यय पूरा करना चाहिये था ।

अतः आंगलों ने रुहेलखण्ड तथ
आगरा प्रान्त नवाब से लेना चाहा
स्पष्ट रूप से कहा गया कि ये दो प्र
दे दो और बाक़ी जो कुछ तुम्हारे प
में भी तुम्हारा काम न्याय करना ह
प्रबन्ध आंगल ही किया करेंगे।

वज़ीर ने इन प्रस्तावों को स्वी
आवश्यता ही इन्कार कर दिया। इस
प्रकार से धमकियां दी गईं। उसके
सेना भी भेज दी गई।

गवर्नर जनरल स्वयम् अवध में आ
भाई को भी समझाने और डराने को
में दीन निराश नवाब ने इलाकों का
किया और तब से नाम मात्र का राज
गत रह गया।

इसप्रकार छट से दूसरों के देशों को
[illegible] पर कम्पनी ने पैलज़ली व

मराठें। की दूसरी लड़ाई

बसीन की सन्धि—जसवन्तराय हुलकर से पराजित होकर बाजीराव अंग्रेज़ों की शरण में गया और बिना सोचे समझे उनसे एक सन्धि करली जिसके अनुसारः—

(१) पेशवा ने अपने देश में अंग्रेज़ी सेना रखनी स्वीकार की और उसके व्ययार्थ २६ लाख रु० देना मान लिया।

(२) आंग्लों के शत्रुओं को पेशवा अपनी सेवा में नहीं रख सकता था और ना ही किसी अन्य जाति के साथ पत्रव्यवहार कर सक्ता था।

(३) पेशवा ने सूरत का इलाका भी अंग्रेज़ों को देना था और निज़ाम तथा गायकवाड़ के साथ जो झगड़े थे उनका भी फ़ैसला करने के लिए आंग्लों को मध्यस्थ ठहराना था।

(४) जब तक पेशवा इन तीन शर्तों को पूरा करता रहेगा तबतक आंग्लों ने उसको तथा उसके देश को

(ता करने का प्रण दिया। तब बाजीराव ने इन मानहीन बातों को मान लिया तो वैलज़ली ससैन्य पूना की तरफ़ बढ़ा और बाजीराव को वहां का पेशवा बना दिया; उपर्युक्त सन्धि बहुत प्रसिद्ध है क्योंकि पेशवा ने स्वयं ही स्वतन्त्रता का नाश किया और अंग्रेज़ों को भारत में सब से अधिक बलवान् माना। इसी सन्धि के कारण ही अन्य सब मराठों के युद्ध आंग्लों के साथ छिड़ गए जिनमें मराठों को नीचा देखना पड़ा और अंग्रेज़ लोग भारत में अपूर्व शक्तिशाली होगए।

युद्ध के कारण-(क) सिन्धिया और बरार के राजा राघो जी ने बसीन के सन्धिपत्र को स्वीकार करना बड़ा अपमान समझा, अतः लड़ाई की तय्यारियाँ कीं।

(ख) बाजीराव ने भी जब पूना का राज्य प्राप्त कर लिया तो अपनी मूर्खता पर पश्चात्ताप करने लगा, तब सब मराठा सर्दारों के साथ आंग्लों के विरुद्ध गुप्त पत्रव्यवहार शुरू किया।

(ग) महासेनापति वैलज़ली ने यह [illegible]

(४) वैलज़ली बरार में बढ़ा और सुर्जी
आरगांव पर पूर्णतया भौंसला को जीत लि
(५) और वहां से बढ़कर इसी ने ही गाविल
जीता-इस पर भौंसला दम हार गया और देव
पर सन्धि करली जिसके अनुकूल भौंसला ने आं
(१) कटक तथा बालासोर भेंट किए ।
(२) निज़ाम और भौंसला के मध्य जो ल
थीं उन का निश्चय अंग्रेजों पर छोड़ा । स
वारदे नदी के पश्चिमीय इलाके और गाविल
दक्षिणीय इलाके भी निज़ाम को दिए ।
(३) नागपुर में एक रैज़िडैन्ट का रखना म
(४) भौंसला ने अँग्रेज़ों के शत्रुओं से पत्र व्य
न करना और उन्हें अपनी राज्य सेवा में न लेना
लिया । इस प्रकार भौंसला के साथ लड़ाई
हुई । अब सिन्धिया के साथ युद्ध का वृत्तान्त सु
(क) १८०३ अगस्त में जनरल लेक ने अल
जीतकर सिन्धिया की फ्रांसीसी सेना का लगभग
कर दिया ।
(ख) फिर देहली की ओर बढ़कर उसने दे

निर्धन, दीन शाहआलम को मराठों की बन्दी से निकाल कर अपनी शरण में लेलिया ।

(ग) लेक ने आगरा भी जीत लिया ।

(घ) फिर लासवारी की जगह पर लेक ने उसे पूरी तरह हराया और उसकी रही सही फ्रैन्च सेना का भी नाश करदिया ।

(ङ) कर्नल पौवल ने बुन्देलखण्ड को जीत लिया।

(च) गुजरात की सेना ने भरौच और सुप्रसिद्ध चम्पानेर के किले को हस्तगत किया । जब इस प्रकार से सिन्धिया की सहायता के लिए भोंसला,हुलकर और पेशवा न थे, जब उसकी सेना लगभग सब स्थानों पर पराजित हुई तो तङ्ग आकर उसने सन्धि की-जो सिरजी अंजनगांव के नाम से प्रसिद्ध है । उसकी शर्तें निम्न लिखित थीं—

(१) जमना तथा गङ्गा के मध्यस्थ भाग अंग्रेज़ों को मिले ।

(२) गुजरात में भरौच आंग्लों को, अहमदनगर पेशवा को, और कुछ इलाका निज़ाम को मिले ।

(३) सिन्धिया ने अपने दर्बार में एक रेज़िडेन्ट रखना मान लिया । सबसीडियरी सन्धि की शर्त और

अन्य रियासतों से सम्बन्ध न रखने की शर्त
परिणाम—(१) इन युद्धों से भारत में आंग्ल इं
तम बलवान् होगए। (२) कई राजपूती रा
मराठों की अधीनता छोड़कर आँग्लों की :
(३) शाह आलम का इलाका आँग्लों के अधी
और वे मुग़लों के स्थान पर भारत के राजेश

२४. मराठों की तीसरी लड़ाई

चार मासों में ही ऐसा अपूर्व विजय अंग्रेज़ों क
हुआ जिससे वे भारत के वास्तविक स्वामी बन गए। अ
ने हुल्कर की कमर तोड़ने की ठानी, वह इधर उधर के
पर हाथ मार रहा था, अजमेर पर उसने हमला किया, र
को शुल्क देने के लिये कहा और शान्ति रखने के लिये
से भी कुछ देश मांगा, इस पर वैल्ज़ली ने युद्ध बोल
डेढ़ वर्ष तक युद्ध रहा किन्तु इसमें अंग्रेज़ों को पहिले
सफलता नहीं हुई।

(१) लेक ने टांक रामपुर को फ़तह कर लिया।
(२) कर्नल मान्सन को दर्रह मुकन्दरा से देहल
... कर उसकी ७ हज़ार सेना को हुल्कर ने काट ड

(३) इस विजय से फूले हुए हुलकर ने देहली पर धावा किया, किन्तु वह कर्नल अखतरलोनी से परास्त हुआ।

(४) डीग और फर्रुखाबाद पर भी हुलकर का पराजय हुआ।

(५) डीग और चन्दौर (मालवा) के दुर्ग भी जीत लिए गए।

(६) मरे ने राजधानी इन्दौर फ़तह कर ली किन्तु—

(७) जाटों ने हुलकर को मदद दी—इस कारण उनके दृढ़ दुर्ग भरतपुर का १८०५ में लेक ने घेरा किया, पर चार बार हल्ला किया और चारों बार नाकामयाब हुआ। लोगों में इस निष्फलता की बड़ी चर्चा हुई, पर राजा ने २० लाख रुपया भेंट करके सुलह करली।

(८) अंग्रेज़ों की इस दशा को देखकर सिंधिया ने भी सिर उठाया किन्तु लार्ड वैलज़ली भारत से चल दिया था, और सुलह करने की आज्ञा विलायत से आ चुकी थी, इस कारण कोई बड़ा संग्राम न हुआ

(९) केवल हुलकर लेक से परास्त होकर पंजाब की ओर भाग गया और फिर अंग्रेज़ों से सन्धि करली-इस प्रकार तीसरे युद्ध का अन्त हुआ किन्तु हुलकर को इन पराजयों से ऐसा शोक हुआ कि वह पागल होकर १८११ में परलोक सि-

धारा। तीसरे युद्ध के वृत्तान्त से स्पष्ट हो गया है
पहिले से सब मराठे और जाट मिलकर अँग्रेजों
करते तो उनका परास्त होना कठिन हो जाता-वस
भारत को ग़ारत कर दिया !

२५. लार्ड कार्नवालिस–विलायत के लो
की कठोर नीति से डर गए थे-उन्हें भारत में विद्रो
की चिन्ता थी, अतः उन्होंने भारतीयों को शान
लिये लार्ड कार्नवालिस को दोबारह महालाट बना
उसने वैलज़ली की पालिसी को पलट देने का बीड़
आते ही बसीन की सन्धि ना मंजूर की, लार्ड लेक
से रोका और सिन्धिया तथा हुलकर से सुलह करने
था कि ग़ाज़ीपुर में इसका देहान्त हो गया ।

२६. सर जार्ज बार्लू–१८०५-१८०७ तक।
कौंसल का यह मुख्य सभ्य था। कम्पनी की आज्ञानुसा
भी शांति की नीति का अनुकरण किया और कार्नवा
काम को पूर्ण करना चाहा। इसने मराठों से सुलह
इस कारण कुछ वर्षों तक देश में शान्ति रही।

२७. विलौर में सेना का विद्रोह–किन्तु १८०
... ने बदल गया हुल दिया। मद्रास के ...

विलियम बैंटिङ्ग की सलाह से सेनापति ने सेना में कुछ परिवर्तन किये जैसे(i)कवाइद करने के समय मुन्दरियां पहनने और माथे पर टीका लगाने से सिपाहियों को रोक दिया गया, (ii)डाढ़ी विशेष रूप में कटवाने की आज्ञा दी गयी,(iii) पगड़ी के स्थान पर योरुपी टोपी से मिलती जुलती टोपी उन्हें दी गई। इन विधियों से सिपाहियों ने अपनी जातीयता और धर्म का नाश समझा-धर्म ही तो एक चीज़ है जिस के लिये भारतवासी मर सकते हैं। सिपाहियों के दिल में बैठ गया था कि सरकार उन्हें ईसाई बनाना चाहती है और जब महा सेनापति तथा लाट ने उन की शिकायतों पर ध्यान न दिया तो विद्रोह के अतिरिक्त अपने दुःखों को दूर करने का कोई साधन उनके पास न था। (iv) इस अशांति की आग पर तेल डालने और सिपाहियों को भड़काने में टीपू के पुत्रों ने शायद कुछ भाग लिया। विलौर के दुर्ग में देशी सेना बहुत थी, उस ने एक रात सोते हुए गोरों पर हमला करके ११३ जवान मार डाले।

कर्नल गिलस्पी ने सूचना पाते ही अर्काट से प्रस्थान किया, विलौर फ़तह कर लिया, विद्रोही तित्तर बित्तर हो गए और जो काबू आए, उन्हें बड़े कठोर दण्ड दिये गए।

परिणाम -(१) टीपू के पुत्रों को कलकत्ते भेजा गया. (२) बैंटिङ्क और महा सेनापति को पदच्युत कर दिया गया.

(३) सिपाहियों की जातीयता और धर्म के घातक उ
को हटा दिया गया, (४) ईसाइयों का प्रचार रो
(५) भारतीयों के धर्म में हस्तक्षेप न करने की शिक्ष
को मिली, किन्तु अपने बल के कारण जब सरका
सबक कुछ भुला दिया तो १८५७ में फिर एक भूकम्
(६) वार्लो को महालाटी से हटा कर मद्रास का लाट
गया और उस के स्थान पर लार्ड मिन्टो आया ।

लार्ड मिन्टो १८०७-१८१३

२८. जीवन—यह महालाट बहुत नीति निपुण था
और मिरैवो जैसे नीतिज्ञों का मित्र रहा था; १७७६ में
दल की ओर से लोकसभा का सभ्य बना; १७९४ में क
का हाकिम हो गया; १७९७ में लार्ड बना; दो वर्षों तक
में दूत रहा; फिर भारत की प्रबन्धकर्तृ सभा का विला
प्रधान हुआ, निदान १८०७ में महालाट बना । इसे भी
की नीति का अनुकरण करने को कहा गया और चूंकि सर
के पास धन नहीं था—अत. विजय की नीति का अनु
अभीष्ट न था । पहिले पहिल तो इस नीति का यह प्रेमी
किंतु फिर रजवाड़ों के मामलों में दखल देना ज़रूरी सम
और योरुप में नैपोलियन जो भूकम्प लाया था उस का प्रभ
भारत में भी पड़ता था—इसे मिन्टो ने रोका—इस रोकने
... और विजय किये ।

परदेशों में दूत–१८०७ में नैपोलियन और रूस के ाराज ने टिल्सिट पर एक सन्धि की जिसमें इंगलैंड विरुद्ध गुप्त तौर पर सहायता देने का प्रण रूस ने किया। य था कि फ्रांसीसी और रूसी लोग ईरान, अफ़ग़ानिस्तान, जाब आदि में गुप्त मन्त्रणाएं कर रहेहैं–भारत के लिए उन ा बुरा परिणाम न हो। ऐसी दुर्घटना को रोकने के लिए ई देशों के साथ सम्बन्ध जोड़े गए:—

(i) सिन्ध–के अमीरों ने प्रण कर लिया कि हम फ्रांसी-सियों को अपने यहाँ न आने देंगे।

(ii) एलफिन्स्टन को दूत बना कर काबुल भेजा गया, यहाँ के शासक शाह शुजह दुर्रानी ने अंग्रेज़ों का साथ देने का प्रण दिया।

(iii) सर जान माल्कम ईरान में दूत बन कर गया, ईरान के बादशाह ने भी प्रण दिया कि वह शत्रु की सेना को अपने देश में से नहीं गुज़रने देगा।

(iv) पटयाला और जीन्द के सिक्ख सरदारों और महा-राजा रणजीतसिंह में कशमकश रहती थी, वह सारी सिक्ख रियासतों को एक राज्य में मिला कर एक बली राष्ट्र बनाना चाहता था, इन रियासतों के स्वार्थी, अदूरदर्शी सरदारों ने अपने विजेता सिक्ख भाई का साथ न दिया और अपने आप

(३) सिपाहियों की जातीयता और धर्म के घातक
को हटा दिया गया, (४) ईसाइयों का प्रचार
(५) भारतीयों के धर्म में हस्ताक्षेप न करने की शि
को मिली, किन्तु अपने बल के कारण जब सरक
सबक कुछ भुला दिया तो १८५७ में फिर एक भू
(६) बालों को महालाटी से हटा कर मद्रास का ला
गया और उस के स्थान पर लार्ड मिन्टो आया ।

लार्ड मिन्टो १८०७-१८१३

२८. जीवन—यह महालाट बहुत नीति निपुण
और मिरैबो जैसे नीतिज्ञों का मित्र रहा था; १७७६
दल की ओर से लोकसभा का सभ्य बना; १७९४ में
का हाकिम हो गया; १७९७ में लार्ड बना; दो वर्षों तक
में दूत रहा; फिर भारत की प्रबन्धकर्तृ सभा का बिल
प्रधान हुआ, निदान १८०७ में महालाट बना । इसे भी
की नीति का अनुकरण करने को कहा गया और चूंकि स
के पास धन नहीं था—अत. विजय की नीति का अनु
अभीष्ट न था । पहिले पहिल तो इस नीति का वह प्रेमी
किंतु फिर रजवाड़ों के मामलों में दखल देना ज़रूरी स
और योरप में नेपोलियन जो भूकम्प लाया था उस का प्र
... इसे मिन्टो ने रोका—इस रोक

उन की शक्ति के कम होने पर देश में अराजकता फैल गयी देश उजड़ने लगा, किसान ही ठग बन गये, बुंदेलखण्ड की भी यही अवस्था थी—अतः ठगों के दलन के लिये १८०७ से १८१२ तक मिन्टो ने बहुत यत्न किया, अंत में कालिंजर के फतह होने पर देश शांत हो गया।

बरार और अमीर ख़ान—अमीरख़ान लुटेरा के पठ सरदार ने देश में ख़ूब लूट मचाई हुई थी. उसने राजा बरा पर हमला किया, मिंटो ने अमीरख़ान को दलन करने के लिये राजा के पास सेना भेज दी जिसे देख कर अमीर ख़ा इंदौर लौट गया।

६७. अफरीका-पूर्व में मारीशस और बूर्बान नाम टापू फ़्रांसीसियों के स्वत्व में थे-यहां से उनके जंगी जहा अंग्रेज़ व्यापारियों को तंग किया करते थे। कभी २ डच म उन का साथ देते थे। मिंटो ने यहां सेना भेज कर दोनों टा उनसे छीन लिये। बूर्बान १८१४ में वापिस दिया गया कि मारीशस अब तक अंग्रेज़ों के पास है। डच का ज़र खेज़ .टा जावा भी मिन्टो ने फ़तह कर लिया (१८११)

६८. रणजीतसिंह की वृद्धि—यह रंगेरचंडाल सुक चकी मिसल के सरदार महासिंह का पुत्र था उसका जन्म १७८० में राजवीर-जींद के राजा गजपतसिंह की पुत्री से हु

को सरकार अंग्रेज़ी के शरणागत ठहराया, बस, अब सतलुज के पार सिक्ख राज्य नहीं फैल सकता था, अंग्रेज़ों और रणजीतसिंह के राष्ट्रों में सतलुज नदी की सीमा रहे-यह बात अंग्रेज़ी दूत मैटकाफ़ ने रणजीतसिंह से मनवाली-महाराजा ने सतलुज के पार की सिक्ख रियासतों में हस्तक्षेप न करने और अंग्रेज़ों से मित्रता रखने का प्रण दिया जो मरण पर्यन्त महाराज ने पूरा किया। इस प्रकार देश में शान्ति रखते हुए मिन्टो ने नये इलाके अंग्रेज़ी राज्य में मिलाये और भिन्न रियासतों के साथ मित्रता करके शत्रुओं के हमलों से देश की रक्षा कर ली।

२९. कम्पनी का नया पट्टा—१७९३ में कम्पनी को २० साल के लिये चार्टर दिया गया था, अतः १८१३ में नया पट्टा लेने का समय आया। भारत के व्यापार से सारी आङ्गल जाति लाभ लेना चाहती थी, तब तक कम्पनी ही सारा लाभ लेती रही थी। भारत के व्यापार का ठेका कम्पनी से छीन लिया, य, हां चीन में इसी का ठेका रहा। अतः इस वर्ष से भाग रसी व्यापार के लिए खूब मुकाबला पड़ेगा।

(ख) ईसाई पादरियों को प्रचार आज्ञा भी दी गयी।

३०. ठगी—मध्य भारत में हुलकर और सिन्धिया ने चोरों और डाकुओं को काबू करके देश में शांति रक्खी थी—

उन की शक्ति के कम होने पर देश में अराजकता फैल गयी, देश उजड़ने लगा, किसान ही ठग बन गये, बुंदेलखण्ड की भी यही अवस्था थी—अतः ठगों के दलन के लिये १८०७ से १८१२ तक मिन्टो ने बहुत यत्न किया, अंत में कालिंजर के फ़तह होने पर देश शांत हो गया।

बरार और अमीर ख़ान--अमीरख़ान लुटेरा के एक सरदार ने देश में खूब लूट मचाई हुई थी, उसने राजा बरार पर हमला किया, मिंटो ने अमीरख़ान को दलन करने के लिये राजा के पास सेना भेज दी जिसे देख कर अमीर ख़ान इंदौर लौट गया।

३१. अफरीका-पूर्व में मारीशस और बूर्वोन नामी टापू फ्रांसीसियों के स्वत्व में थे-यहां से उनके जंगी जहाज़ अंग्रेज़ व्यापारियों को तंग किया करते थे। कभी २ डच भी उन का साथ देते थे। मिंटो ने वहां सेना भेज कर दोनों टापू उनसे छीन लिये। बूर्वोन १८१४ में वापिस दिया गया किंतु [illegible] के पास है। डच का ज़रखेज़ टापू जावा [illegible] लिया (१८११)

१७९२ में उस के पिता का देहांत होगया, तिस पर अपनी माता और सास की रक्षिता में रणजीत रहा परंतु युवावस्था में ही अपनी माता और सास से संग्राम करके स्वतंत्र हो गया। १७९७ में उसका सौभाग्य जागा–ज़मानशाह ने पंजाब पर हमला करके सिक्खों से लाहौर लेलिया, पर लौटते समय उसकी १२ तोपें जेहलम नदी में डूब गईं, जेहलम का इलाका रणजीतसिंह के पास था, अतः ज़मानशाह ने रणजीत सिंह को तोपें निकलवाकर अफ़ग़ानिस्तान भेजने को कहा। इस सेवा के बदले उसे लाहौर बख्शीश करने और राजा की उपाधि देने का प्रण किया। रणजीत ने तोपें निकलवाकर भेज दीं और लाहौर को प्राप्त करने का यत्न किया और शीघ्र ही कामयाब हो गया, फिर अमृतसर को फ़तह करलिया, इस प्रकार रणजीतसिंह धार्मिक और राष्ट्रिक राजधानियों का मालिक बन गया, उस समय की मिसलों में से कोई सरदार रणजीत का मुक़ाबला नहीं कर सका था, अतः अपनी सास को क़ैद करके उसने बटाला, अकालगढ़ इत्यादि प्राप्त किये। फिर १८१० में नक्की मिसल के इलाके क़सूर, चूनियां, गोगरा फ़तह किये। १८१६ में अमृतसर, जालंधर, गुरदासपुर के इलाके स्वहस्तगत किये, उसका उद्देश्य सब सिक्ख रियासतों को अपने अधीन करके एक दृढ़ सिक्ख राज्य क़ायम करना था, वह इसमें कुछ कामया भी हुआ, परन्तु ...से

राज करने का माद्दा नहीं था। अतः महाराज के मरते ही ट्ने अपने मज़े चखाये और सर्वनाश करके छोड़ा।

सतलुज के पार जिस प्रकार लक्ष्मण लकीर पड़ गई सका वर्णन अङ्क ३२ में कर आये हैं, अतः रणजीत सिंह पश्चि- ोत्तर में ही अपने हाथ दिखा सका था । १८०६ में कांगड़ा, ८१० में भंग, १८१४ में हज़ारा, १८१८ मुलतान, १८१६ में काश्मीर, १८२३ में पेशावर फ़तह कर लिये । इस प्रकार सत- लुज से ऊपर का सारा इलाका महाराज के पास होगया । इन विजयों में निम्न पंजाबी बहुत प्रसिद्ध हुए-दिवान मुह- कमचंद, मिश्र दिवानचन्द, दिवान रामपाल, सरदार फ़तह सिंह, निहालसिंह, बुद्धिसिंह, अतरसिंह और हरिसिंह नलुवा।

रणजीतसिंह की सन्तान–महाराज की बहुत रानिय थीं जिन में से ४ प्रसिद्ध हैं । महतापकौर से तारासिंह और शेरसिंह पैदा हुए, राजकौर से खड़गसिंह पैदा हुआ और महाराज के बाद यही गद्दी पर बैठा परन्तु इसे जम्मू के हाकिमों ने मरवा डाला। गुल बेगम एक वेश्या थी जिसने बड़ा प्रभुत्व प्राप्त किया, इसका चित्र रणजीत के साथ सिक्के पर छपता था । ज़िंदां ४थी प्रसिद्ध रानी थी-दलीपसिंह इसका पुत्र था जिसे अंग्रेज़ों ने पकड़ कर इंग्लैंड भेज दिया।

मार्क्विस हेस्टिंग्ज़ (लार्ड मोएरा) १८१३-१८२३

३३. मोएरा का काम-१८०५ से १८७२ तक भारत में कोई संग्राम न हुए थे, मराठों ने शक्ति सञ्चय करके फिर से अँग्रेज़ों के साथ मुकाबले करने की ठानी हुई थी, उनकी मदद के लिये बहुत से लुटेरे सरदार भी थे, फिर गोरखा लोग भी अँग्रेज़ी इलाके पर हाथ मारने से न टलते थे, अतः अब एक योद्धा महालाट की ज़रूरत थी—वह लार्ड मोएरा के रूप में यहां आया, वह वीर योद्धा किन्तु राज कार्य्य में अनुभवी और सुनीतिज्ञ भी था, उसके वर्ताव आकर्षण शील थे, उसने बड़ी धीरता और बुद्धिमत्ता से ६ वर्षों तक अंग्रेज़ी राज की नौका को भयङ्कर ठोकरों से बचाकर अन्ततः समृद्ध और शान्त तट पर जा लगाया, फिर ३० वर्षों तक भारतीय सीमाओं के अँदर कोई युद्ध न हुआ। उसके समय में नैपाल युद्ध, पिण्डारियों का नाश और मराठों की चौथी लड़ाइयें प्रसिद्ध घटनायें हैं। साथ ही ईसाई मत के प्रचार के काफ़ी यत्न हुए, सीरामपुर के मिशन से ही १८२२ तक भारत की २० भाषाओं में अँजील का अनुवाद छाप दिया गया था। शिक्षा के प्रचार का यत्न किया गया-१८१७ में कलकत्ते में हिन्दु कालिज स्थापित किया गया और समाचार पत्रों पर राज्य की आपत्ति ना हटा स्वतन्त्र किया गया।

हेस्टिंग्ज़ के समय भारत का विदेशी व्यापार बहुत बढ़ गया क्योंकि कम्पनी का एकाधिकार-ठेका टूट चुका था। योरुप में शान्ति होने से फ्रांस आदि देशों के व्यापारियों ने भी व्यापार करना आरम्भ किया, किन्तु शोक है कि अंग्रेज़ी सामान पर कोई टटकर न लिया जाता था और भारतीय माल जब इंग्लैंड में जाता था तो उसे देश में जाने से रोका हुआ था-या कड़ा टैक्स लिया जाता था, इंग्लैंड के हितार्थ भारत के शिल्प का नाश किया गया, तब से स्वदेशी शिल्प वा दस्तकारी का ह्रास हो रहा है और विदेशी पदार्थों पर ही उत्तरोत्तर हमारा आधार होता जाता है। हमें विश्वास है कि समय आवेगा जब उदार अंग्रेज़ इस अन्याय को हटा देवेंगे।

३४-पिण्डारी युद्ध

पिण्डारी-मुग़ल राज्यके ह्रास के समय जब चारों ओर देश में आपा धापी पड़ी हुई थी तो बहुत से साहसी क्रूर निर्लज्ज कमीने आदमियों ने लूटने का पेशा इख्त्यार किया हुआ था—समूहों में ये लोग ग्रामों और नगरों पर जा पड़ते थे उन्हें लूटते खसूटते थे, प्रजा को अकथनीय कष्ट देते थे, कभी २ ग्रामों को आग लगा जाते थे, फिर सड़कों पर भी छापे मारते थे- इस प्रकार प्रजा की जान माल इज़्ज़त व्यापार की रक्षा कठिन हो गयी थी। मराठा सरदारों ने इन्हें स्वतन्त्रता दी हुई

थी। इन में सब जातियों के लोग थे जैसे अफ़गान, जाट, मराठे और भील।

हेस्टिंग्ज़ के समय वासल मुहम्मद, अमीर ख़ान, करीमख़ान और चीतु सरदार प्रसिद्ध थे—महालाट ने इनके कुकर्मों को बन्द करना चाहा। चारों तरफ़ से नाकाबंदी करके उन का नाश करने के लिए हेस्टिंग्ज़ ने एक बड़ी सेना तय्यार की और सिन्धिया तथा हुलकर से भी सहायता माँगी।

३४. सिन्धिया से सन्धि—पिंडारी युद्ध में सिन्धिया ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध गोरखों से पत्रव्यवहार किया था ये पत्र अंग्रेज़ों के हाथ लग गये थे, अंग्रेज़ी वकील ने दर्बार में ही ये पत्र सिन्धिया को दिखा कर नई सन्धि करने पर मजबूर किया:-(i) सिन्धिया के अधीन जो राजपूती रियासतें थीं वे अंग्रेज़ों को दे दी गई और (ii) पिण्डारियों को नाश करने में सहायता देने का प्रण भी सिंधिया ने किया।

३५. हुलकर से संधि—यशवन्तराव हुलकर की मृत्यु पर उसका नाबालिग पुत्र गद्दी पर बैठा और रानी तुलसीबाई उसकी संरक्षक बनी. यह रानी अंग्रेज़ों का साथ देना चाहती थी किन्तु रियासत की सेना अंग्रेज़ों से लड़ने को उत्सुक थी। सेना ने तुलसीबाई को मार डाला, तब अंग्रेज़ों ने इस

(२) जिताक को फ़तह करने में भी अंग्रेज़ नाका
हुए, बल्कि वहां गोरखों के सामने अंग्रेज़ी सेना भाग ग

(३) जनरल अक्तरलोनी ने सेनापति अमरसि
को रामगढ़ के दुर्ग से निकाल दिया, कमाऊं जीत लिया औ
फिर अमरसिंह को मालौन के किले में जा घेरा, वहां वह
सन्धि करने पर बाधित हुआ। गढ़वाल ख़ाली कर दिया गया
और जमना तथा सतलुज के बीच के सब पहाड़ी दुर्ग अंग्रेज़ों
ने लिये, पर तराई का इलाक़ा देने से नैपालियों ने इंकार
किया, इस कारण फिर युद्ध आरम्भ हुआ।

जनरल अक्तरलोनी खटमाण्डु की ओर बढ़ा, वहाँ से ५०
मील पहिले मकवानपुर के स्थान पर गोरखों की बुरी तरह
से हार हुई (१८१६), इस पर राजा नैपाल ने सैमोली पर
सन्धि की जिसके अनुसार (१) उक्त सब इलाके अंग्रेज़ों
को मिल गए (२) सिक्कम से गोरखों ने अपना अधिकार हटा
लिया इसमें दार्जिलिङ्ग अंग्रेज़ों के पास आगया (३) अंग्रेज़ों
का वकील भी खटमाण्डु में रखना स्वीकार हुआ।

युद्ध के लाभ--इस विजय से अंग्रेज़ों का मान व भय
बढ़ गया; यदि वे हार जाते तो एकापक सब
छोड़ कर दिया होता; (२) ...

का भय सर्वथा मिट गया और पूरी २ हद बन्दी होगयी. (३) स्वास्थ्य वर्धक स्थान जैसे मसूरी, शिमला, नैनीताल, अल्मोरा लंडौरा आदि मिल गए, यहाँ छावनियां और गर्मी की राजधानियाँ बनाई गई (४) पहाड़ी वीर योद्धा गोरखे भी सेना में भरती करने के लिये मिल गए! (५) भारतवर्ष के पहाड़ी प्रान्तों को अधिक उपजाऊ और सुन्दर बनाया जा रहा है किन्तु लोग अधिकतर ईसाई हो रहे हैं (६) सब से बड़ा परिणाम अभी व्यक्त होने वाला है। हिन्दुस्तान में अधिक गर्मी के कारण अंग्रेज लोग अपनी बस्तियां नहीं बसा सकते किन्तु इन पहाड़ी इलाकों का जल वायु अंग्रेजों के सर्वथा अनुकूल है, भूमि भी वही उपजाऊ है, अतः यहाँ बस्तियाँ बसाई जा सकती हैं। जब गोरों की बस्तियों से ये पहाड़ सुन्दर हो जावेंगे तो विलायत वाले लार्ड हेस्टिंग्ज के गुण गाया करेंगे।

३८. मराठों की चौथी लड़ाई, १८१७-१८

कारण-पेशवा बाजीराव ने बसीन की सन्धि से अंग्रेजों का आधिपत्य मान तो लिया था किन्तु पीछे वह बहुत पछताया, दिल में अंग्रेजों से बहुत जलता था और उनके आधिपत्य से बचने का यत्न चुपके २ करता रहा था। पेशवा के इस सङ्कल्प को त्र्यम्बक जी मन्त्री ने अतीव दृढ़ कर दिया था। त्र्यम्बक ने बाजीराव के दिल पर [illegible] बिठा दी थी कि मराठों की बिगड़ी

(२) जिताक को फ़तह करने में भी अंग्रेज़ नाकामयाब हुए, बल्कि यहां गोरखों के सामने अंग्रेज़ी सेना भाग गयी।

१५-३७

(३) जनरल अख़्तर लोनी ने सेनापति अमरसिंह को रायगढ़ के दुर्ग से निकाल दिया, कमाऊं जीत लिया और फिर अमरसिंह को मालौन के किले में जा घेरा, वहां वह सन्धि करने पर बाधित हुआ। गढ़वाल ख़ाली कर दिया गया और जमना तथा सतलुज के बीच के सब पहाड़ी दुर्ग अंग्रेजों ने लिये, पर तराई का इलाक़ा देने से नैपालियों ने इंकार किया, इस कारण फिर युद्ध आरम्भ हुआ।

जनरल अख़्तरलोनी खटमाण्डु की ओर बढ़ा, वहाँ से ५० मील पहिले मकवानपुर के स्थान पर गोरखों की बुरी तरह से हार हुई (१८१६), इस पर राजा नैपाल ने सैमोली पर सन्धि की जिसके अनुसार (१) उक्त सब इलाके अंग्रेज़ों को मिल गए (२) सिकम से गोरखों ने अपना अधिकार हटा लिया इससे दार्जिलिङ्ग अंग्रेज़ों के पास आगया (३) अंग्रेजों का वकील भी खटमाण्डु में रखना स्वीकार हुआ।

युद्ध के लाभ--इस विजय से अंग्रेज़ों का मान व भय बढ़ गया; यदि वे हार जाते तो एकाएक सब मराठों ने विद्रोह कर दिया होता; (२) चीन व नैपाल की ओर से अंग्रेज़ों

का भय सर्वथा मिट गया और पूरी २ हद बन्दी होगयी (३) स्वास्थ्य वर्धक स्थान जैसे मसूरी, शिमला, नैनीताल, अल्मोरा लंढौरा आदि मिल गए, यहाँ छावनियां और गर्मी की राजधानियाँ बनाई गईं (४) पहाड़ी वीर योद्धा गोरखे भी सेना में भरती करने के लिये मिल गए! (५) भारतवर्ष के पहाड़ी प्रान्तों को अधिक उपजाऊ और सुन्दर बनाया जा रहा है किन्तु लोग अधिकतर ईसाई हो रहे हैं (६) सब से बड़ा परिणाम अभी व्यक्त होने वाला है। हिन्दुस्तान में अधिक गर्मी के कारण अंग्रेज़ लोग अपनी बस्तियां नहीं बसा सकते किन्तु इन पहाड़ी इलाकों का जल वायु अंग्रेज़ों को सर्वथा अनुकूल है, भूमि भी बड़ी उपजाऊ है, अतः यहाँ बस्तियाँ बसाई जा सकती हैं। जब गोरों की बस्तियों से ये पहाड़ सुन्दर हो जावेंगे तो विलायत वाले लार्ड हेस्टिंग्ज के गुण गाया करेंगे।

३८. मराठों की चौथी लड़ाई, १८१७-१८

कारण-पेशवा बाजीराव ने बसीन की सन्धि से अंग्रेज़ों का आधिपत्य मान तो लिया था किन्तु पीछे वह बहुत पछताया, दिल में अंग्रेज़ों से बहुत जलता था और उनके आधिपत्य से बचने का यत्न चुपके २ करता रहा था। पेशवा के इस सङ्कल्प को त्र्यम्बक जी मन्त्री ने अतीव दृढ़ कर दिया था। त्र्यम्बक ने बाजीराव के दिलपर यह बात बिठा दी थी कि मराठों की बिगड़ी

दशा सुधारी जा सकती है. कि अंग्रेज़ों को भारत से नि- १५-३८
काला जा सकता है, अतः सन्धिया, हुल्कर और भोंसला से
गठनार्थ पत्र व्यवहार हुए । अंग्रेजों को भी इस बात का
[illegible]ा था ।

(ख) गंगाधर का घात– इतने में बाजीराव और गायक-
वाड़ में बहुत वैमनस्य होरहा था उसे दूर करने के लिये गङ्गाधर
शास्त्री पेशवा के पास आया, उसे त्र्यम्बक के आदमियों ने
पुरन्धर के तीर्थ में मार डाला, चूँकि अँग्रेज़ों ने गङ्गाधर की
रक्षा का ज़िम्मा लिया था, इस कारण उन्होंने त्र्यम्बक को
दण्ड देना चाहा। उसे साल्सट के दुर्ग में क़ैद किया गया, पर
वहांसे वह भाग गया और सिपाही जमा करके अँग्रेजों से
लड़ने की तय्यारियाँ करने लगा– इस काम में बाजीराव ने भी
उसे कुछ सहायता दी ।

(ग) लार्ड हेस्टिंग्ज़ ने पेशवा का बल घटाना चाहा, अतः
एक नये सन्धि पत्र पर हस्ताक्षर कर देने के लिये उसे कहा
गया– उस में ये बातें थीं:–(i) पेशवा मराठों के मुखिया होने
का अधिकार छोड़ दे ताकि सिन्धिया, हुल्कर, गायकवाड़ जैसे
सरदारों की सी स्थिति पेशवा की हो जावे और सब रियासतें
में फ़ूट होने से अधिक निर्बल हो जावें । (ii) अन्य रियासतों
से पेशवा ने जो कुछ लेना है–उसे छोड़ दे । (iii) अहमदनगर

आदि के इलाके अंग्रेज़ों को देवे। (IV) अपने इलाके में अंग्रेज़ी सेना पूर्व से अधिक रहे। (V) त्र्यम्बक राव का साथ छोड़ दे।

युद्ध–पेशवा ने अपने तईं कमज़ोर देख कर १८-१७ जून में :स पूना की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिए। किन्तु यह अंग्रेज़ों के लोह हल से बचने का यत्न करता रहा। पर्याप्त तय्यारी न होते हुए भी पेशवा ने अंग्रेज़ी वकील एलफिन्स्टन के निवासस्थान खेड़की पर जो पूना से चार मील पर है–हमला किया। मंत्री और सेनापति बापुगोखले के अधीन मराठी सेना थी किन्तु मुट्ठी भर सिपाहियों से परास्त हो कर मराठे लौटे–शोक कि वीर मराठों का यह दम रह गया था!

(ख) जनरल स्मिथ ने पूना पर धावा किया, भीरु बाजीराव भाग निकला–नगर पर कब्ज़ा करके स्मिथ ने पेशवा का पीछा किया। सितारा, पुरन्धर प्रभृति स्थानों से पेशवा भागता रहा।

(ग) तब स्मिथ ने सितारा पकड़ कर लिया। और उधर कोरे गांव के संग्राम में मराठी सेना ने अपूर्व भीरुता दिखाई कि मुट्ठी भर अंग्रेज़ी सिपाहियों के सामने से भाग निकली।

(घ) पेशवा कर्नाटक की ओर भागा पर उधर भी अष्टी के युद्ध में उस की हार हुई, यहां से इधर उधर कई सिपाहियों के साथ बाजीराव भटकता रहा, जब किसी मराठा

मुल्क अंग्रेज़ों ने स्वहस्तगत कर लिया, तब से मध्यप्रदेश के इलाके में देशी राज्य का अन्त हो गया।

इस प्रकार चौथा मराठा युद्ध समाप्त हुआ- इस के अन्त पर अङ्गरेज़ों के कब्ज़े में बम्बई प्रान्त हो गया किन्तु सारी मराठी तथा राजपूत रियासतों पर उनका प्रभुत्व हुआ और मराठों की स्वतन्त्रता का नाश करके अंग्रेज़ ही उनके स्थान पर भारत के स्वामी हो गए।

३०. मराठों की अवनति के कारण- १) शिवा जी की सुनीतियों का उस के उत्तराधिकारियों ने अनुकरण न किया, अतः हरएक मराठा सर्दार स्वतन्त्र हो गया। शिवाजी ने कर्म्मचारियों को जागीरें देनी बन्द कर दी थीं परन्तु पेशवाओं ने मालवा, गुजरात, जागीरें पैत्रिक स्वत्व में दीं- २) गए- पेशवा भी बड़ा

(४) पेशवा और उनके मन्त्री ब्राह्मण होते थे पर हुल्कर, भोंसला और सिन्धिया नीच जाति के थे, अतः परस्पर घृणा के साधन उपस्थित थे।

(५) १८०३ में दिल्ली राज्य और शाह आलम आंगलों के हाथ आगए। इस से मराठों की शक्ति बहुत घट गई। फिर सिन्धिया, हुल्कर और भोंसला का आंगलों के साथ पृथक् २ न कि संगठित होकर युद्ध करना मराठा राज्य का नाश करने वाला हुआ।

लार्ड एम्हर्स्ट १८२३--१८२८

४०. जीवनी—अपने चचा लार्ड एम्हर्स्ट के मरने पर यह लार्ड बना। १८१३ में कम्पनी ने इसे चीन में दूत बना कर भेजा—इसने जो सेवा वहां की उसके बदले इसे भारत का महा लाट बनाया गया। इसे कम्पनी की ओर से उपदेश मिला कि यह शान्ति पूर्वक राज्य करे किन्तु ब्रह्मा का प्रथम युद्ध, भरतपुर का विजय और बैरकपुर का विद्रोह अशांति वर्द्धक हुए।

४१. ब्रह्मा के प्रथम युद्ध के कारण—१-ब्रह्मा के ...ों ने अराकान जीत लिया और वहां के निवासियों पर ...चार किये कि अराकान को छोड़ कर वे. अंग्रेज़ी

जिस को आवा महाराज ने एक न सुनी-अतः आंग्लों के लिए अपने प्रताप का प्रकाश करना आवश्यक हो गया।

४२. युद्ध, १८२४-१८२६—अंग्रेज़ों को इस युद्ध में कई कठिनाइयाँ आईं-ब्रह्मा के विषय में वे कुछ भी न जानते थे; भारतीय सिपाही जहाजों द्वारा ब्रह्मा जाने को उद्यत न थे। क्योंकि ऐसा करने से वे अपने धर्म का नाश समझते थे, फिर कम्पनी के अधिकारी भी युद्ध के विरुद्ध थे। अतः एमू और दो नावू के युद्धों में आंग्ल पराजित हुए किंतु अराकान, रंगून ब्योम, मलौन के युद्धों में विजयी हुए, फिर आंग्ल सेना राजधानी आवा की ओर बढ़ी और पघन पर ब्रह्मा सेना को हटाया, तब ब्रह्मानरेश ने यंदबू पर १८२८ में सन्धि करली जिस के अनुसारः—

१—आसाम, अराकान, तनासरम के खण्ड आंगलों को मिले।

२—ब्रह्मा नरेश ने प्रण किया कि वह मणिपुर, कछार और जान्तिया नामक पर्वतीय खण्डों में कोई हस्ताक्षेप न करेगा।

३—एक आंगल रेज़ीडैन्ट उसने अपनी राजधानी "आवा" में रखना स्वीकार किया।

४—अंग्रेज़ी व्यापार को सुगम किया।

५- एक करोड़ रु० हर्जाना भी दिया। इस युद्ध में भारत का २२½ करोड़ रु० तो व्यय हुआ पर उक्त खण्डों में से 'अराकान' संसार में सब से बड़ा चावल उत्पन्न करने वाला, तनासरम लकड़ी के उत्पन्न करने वाला और आसाम चाय उत्पन्न करने वाला खण्ड बन गया है।

ब्रह्मा के युद्ध का महत्त्व - १-आंगलों को जादूगरों की भूमि में जो सर्वमय विजय प्राप्त हुआ इस से सारी भारतीय प्रजा पर उन की अपूर्व शक्ति का सिक्का बैठ गया, सब सर्दार और राजे दब गए।

२- बौद्ध धर्म के प्रचार के पश्चात् भारतवर्ष के साथ ब्रह्मा का सम्बन्ध छूट गया था, इस कारण आर्य्य यहां अपनी सभ्यता न फैला सकते थे, अब आर्य्यों के उपनिवेश यहां अवश्य बढ़ने थे जिस से ब्रह्मा में आर्य्य सभ्यता का प्रचार होना था। नवीन ब्रह्मा की उत्पत्ति तभी से हुई है।

भरतपुर का विजय

१- १८०४ में लार्ड लेक भरतपुर न जीत सका था। तब से अंग्रेज़ उस कलंक को धोना चाहते थे।

२- ब्रह्मा युद्ध में पहिले पहिल अंग्रेज़ों के पराजय के कारण भारतीय प्रजा आंगलों को शक्तिहीन समझने लगी थी। अतः बड़ालाट ऐसी हानिकारक लहर को दबाना चाहता था।

३- पिण्डारी लुटेरे अपने इलाकों से निकल कर सारे भारत में फैल गए थे। ये प्रजा को अंग्रेजों के विरुद्ध बहका रहे थे और भरतपुर में उनका विशेष निवास था।

४-दक्षिण में भी छोटी २ घटनाएं अंग्रेजों के विरुद्ध हुई थीं- राज्य स्थिर करने के लिए भरतपुर का दुर्ग जीतना आवश्यक समझा गया।

५-भरतपुर की तात्कालिक दशा ने उसका विजय सुलभ कर दिया था, राजा बलदेव सिंह के मरने पर उसका ६ वर्षों का पुत्र बलवन्तसिंह भरतपुर का राजा बना और उस की माता संरक्षका बनाई गई। इस बालक को आंगलों ने बलदेव-सिंह का उत्तराधिकारी मान लिया था परन्तु इसके चचा 'दुर्जनशाल' ने सेना को अपने साथ मिला कर बालक तथा उसकी माता को अपने काबू में करके अपना ही राज्य आरम्भ किया-इस पर आंगलों ने उसे राज्यत्यागने को कहा।

दुर्जनशाल के टालमटोल करने पर आक्रमण किया गया और लार्ड काम्बरमेअर ने एक वर्ष में इसे जीत लिया (१८२४), दुर्जनशाल को कैद करके प्रयाग भेजा गया और बलवन्तसिंह को गद्दी पर बैठाया गया तथा राज्यप्रबन्धार्थ वहां एक रैज़ी-डेण्ट भी रख दिया गया, साथ ही दुर्ग का परकोटा गिराया गया। इस विजय से भारत में अंग्रजों का सिक्का बैठ गया।

४८. बैरकपुर का विद्रोह--कलकत्ता के समीप बैरकपुर एक छावनी है।

तोपों के सामने उड़ाया गया, इस क्रूरता को देख कर कम्पनी ने एम्हर्स्ट को बुलाने का विचार किया-किन्तु यह संकल्प कार्य्य में परिणत न हुआ।

४९. अन्तरीय प्रबन्ध--(१) इसके समय में भारत-वासियों को शिक्षा देने के लिये बहुत से विद्यालय तथा महा विद्यालयादि खोले गए।

(२) ईसाई धर्म के फैलाने में कलकत्ता के सुप्रसिद्ध बिशप हीबर बड़ा काम किया। राममोहन राय ने भी उसी समय सामाजिक कामों में प्रसिद्धि प्राप्त की।

(३) १८२७ में एम्हर्स्ट ने आगरा में दर्बार किया जिसमें राजपूताना के सब राजा उपस्थित हुए। यह दर्बार इस बात को दिखलाने के लिए था कि भारतवर्ष में सब से आंग्ल ही महाराजाधिराज हैं। आगरे से एम्हर्स्ट दिल्ली गया और वहां कुछ राजपूत राजा बुलाए गए। दिल्ली का मुग़ल राजा उस समय में अकबर शाह था, वहां एम्हर्स्ट का आने का उद्देश्य यह था कि वह बादशाह को जिता देवे कि सबसे भारतवर्ष में महाधिराज आंग्ल ही हैं न कि मुग़ल राजा।

(४) दिल्ली से एम्हर्स्ट शिमले गया—यह इलाका गोरखों की लड़ाई में अंग्रेज़ों के हाथ में आया था, तभी से एक छोटी छावनी अंग्रेज़ों ने बनाई थी, कुछ समय यहां एम्हर्स्ट

ठहरा और उसे ग्रीष्म ऋतु में भारतवर्ष की राजधानी बना ने का ख्याल आया ।

(५) इस समय यमुना की पश्चिमीय तथा पूर्वीय नहरों को बनाना आरम्भ हुआ जिन्हों ने कि देश को बहुत हरा भरा कर दिया है।

(६) मद्रास में जब कि ' सर टामस मुनरे ' गवर्नर था, भूमि कर लेने का रैयतवारी तरीका निकाला गया ।

(७) बहुत से योग्य पुरुष एम्हर्स्ट की सहायता में थे ? मैटकाफ़, एल्फिन्स्टन, मनरू, कैम्बलमेयर ।

(८) ग्वालियर का राजा दौलतराव सिन्धिया १८२७ में मर गया, मनरू भी उसी साल यमलोक सिधारा । अवध का नवाब गाज़ीउद्दीन १८२६ में मरा उसके पश्चात् उसका पुत्र नवाब हुआ और भोगों में पड़ कर उसने अपना राज्य े दिया ।

ॉर्ड विलियम बैंटिङ्क १८२८ से १८३५ तक

'He never forgot that t ... of gover... nt is the happiness ... verned '

... यह गवर्नर जनरल एक बड़े उच्च वंश में ... स के पूर्व पुरुषा आंगल म थे बलिक हौलैण्ड

वासी थी । १६८८ में जब तृतीय विलियम इङ्गलैण्ड का राजा हुआ तो इसके बुजुर्ग इंग्लैण्ड में आए थे, राजा के साथ उनकी मित्रता होने के कारण ये शीघ्र लोर्ड बन गए थे-इतना ही नहीं किन्तु उनमें से एक ड्यूक आफ़ पोर्टलैण्ड भी बना था । १७८३ में इसका पिता कुछ समय के लिये इंग्लैण्ड का महा-मन्त्री बना । कइयों का विचार यह है कि जुनियस अपना नाम रख कर इसने ही ' लैटर्ज़ अव जुनियस ' नामी पुस्तक लिखी है किन्तु अन्य लोग फ्रैंकूलिस को उसका लेखक ठहराते हैं ।

१७७४ में विलियम बैंटिंक उत्पन्न हुआ और १७९१ में सेना में प्रविष्ट हो कर इसने इटली और स्विट्ज़रलैण्ड के कई युद्धों में भाग लिया-नैपोलियन के प्रसिद्ध मैरङ्गो नामी युद्ध में यह उपस्थित था, फ्रांसीसियों को मिश्र से निकालने में भी इसने भाग लिया था ।

इन सेना सम्बन्धी सेवाओं को देख कर कम्पनी ने इसको मद्रास का गवर्नर नियत करके १८०३ में भेजा ताकि एक अच्छा सैनिक भारत में उपस्थित रहे । परन्तु मद्रास की गव-र्री से इसको अलग होना पड़ा क्योंकि विलौर के विद्रोह से इसके नाम पर बहुत कलङ्क आया था । भारत से वापिस जा-, इसको फिर सेना में रहना पड़ा और स्पेन, सिसली और

इटली के देशों में बहुत से स्थानों पर लड़ता रहा, आखिर इसकी भिन्न २ सेवाओं के बदले इसको १८२८ में भारत का गवर्नर जनरल बनाया गया।

४६. भारत में लौर्ड विलियम बैंटिङ्क के कार्य

बैन्टिङ्क एक उदार हृदय वाला लाट था, सामाजिक तथा न्यायसम्बन्धी संशोधन करने और युद्धों से दूर रहने के कारण भारत की उसने खूब उन्नति की शान्ति, संशोधन तथा अल्पव्ययता के कारण इस लाट का नाम स्वर्णमय अक्षरों में लिखने योग्य है।

१ लौर्ड एम्हर्स्ट के समय में युद्धों के कारण खर्च आय से अधिक हो गया था, यहाँ तक कि वार्षिक १ करोड़ का घाटा होने लगा. बैंटिंक ने व्यय घटाने के लिए बहुत से उपाय किए (क) सिपाहियों के भत्ते की मात्रा आधी कर दी गई। (ख) सेना विभाग में निरर्थक व्ययों को कम किया गया। (ग) आंगलों के स्थान पर देश निवासियों को राज कर्मचारी नियत किया गया।

यह प्रथम अवसर था कि जब भारतवासियों को शासन विभाग में अधिकार मिला। भारतियों को नौकरियां देने से जहां शासन में उत्तमता आ गयी, वहां व्यय बहुत कम होगया। अब तक इस नीति बढ़ाने की बड़ी ज़रूरत है।

नौकरी का नियम--१८३३ में पार्लियामेंट ने भी प्रस्ताव पास किया कि " कोई भारतवासी अपने धर्म जन्म स्थान, जाति, वर्ण, रंग के कारण कम्पनी के अधीन राजपदों से वञ्चित नहीं रखा जावेगा। (ग) इन सब बातों से वैन्टि इतना कृत कृत्य हुआ कि घाटे के स्थान पर दो करोड़ से भी अधिक वार्षिक बचत कर गया।

२. न्याय संशोधन--न्यायाधीशों की संख्या कम होने से सहस्रों मुकद्दमे फैसला होने के बिना पड़े थे। योरुपीय न्यायाधीशों के नियत करने से व्यय अधिक होता था, इसीलिए देशी न्यायाधीश नियत किए गए। इलाहाबाद में हाईकोर्ट बनाया गया, भिन्न २ प्रांतों के न्यायालयों में प्रान्तिक भाषाओं को भी स्थान दिया गया।

३. कम्पनी के कर्मचारियों को प्रजा की ओर से जो २ भेंट दी जाती थीं उन्हें वैन्टिङ्क ने सर्वथा बन्द कर दिया।

४. ठगी--सब से कठिन काम ठगी का बन्द करना था जिसमें यह सफल हुआ-राजपूताना, बुन्देलखण्ड, अवध इत्यादि इलाकों में ठगों के समूह के समूह रहते थे। वे अकेले दुकेले व्यापारियों को लूटते, मारते और सताते थे। इन्हें इस लाट ने चुन २ कर मरवाया। ६ वर्षों में ही १५०० बड़े बड़े ठग प्राणदण्ड से दण्डित किये गए, या देश से निकाल दिए गए। रजवाड़ों से भी इन ठगों के निकलवाने का यत्न किया गया।

५. सती—सती होने की रसम जो कि भारतवर्ष में पांचवीं शताब्दी से चली आती थी, जिसके बन्द करने का हौंसला अंग्रेज़ पूर्व न कर सके थे और जिनकी संख्या ८०० तक वार्षिक प्रति प्रान्त में हो जाती थी–उसे बन्द कर दिया। उसके बन्द करने का यत्न द्वारिकानाथ टगोर तथा राय मोहनराय जैसे देशहितैषियों ने भी अपने तौर पर किया हुआ था।

६. प्रेस तथा आंगल शिक्षा—इस लाट के समय में प्रेस बहुत कुछ स्वतन्त्र होगया और मैटकाफ़ ने उसे अधिक स्वतन्त्र कर दिया। "भारतवासियों की शिक्षा आँगल भाषा में हो और केवल आंगल विद्याएं पढ़ाई जायें" यह अन्तिम निश्चय नीतिकार मैकाले की दृढ़ सम्मति तथा विलियम बैंटिंक की सहायता से हुआ। भारतवर्ष के उन्नति के लिए यह नियम ठीक था, किंतु इस में अत्यन्त हानिकारक यह बात थी कि पश्चिमी विद्याओं को पढ़ाने का साधन भी आंगल भाषा रखा गया न कि प्रान्तिक भाषाएं या हिंदीभाषा। यदि इंग्लैंड में फ्रेंच भाषा में सब शिक्षा दी जावे, तब उसके जो हानिकारक परिणाम हो सकते हैं, वे सब यहाँ हो रहे हैं, साथ ही संस्कृत भाषा की उन्नति सर्वथा रुक गयी। अब आर्य समाज की कृपा से संस्कृत और एक समान देश भाषा का प्रचार हो रहा है।

७. शिमला—शिमले को भारतवर्ष की ग्रीष्मऋतु, की राजधानी बनाया गया और दार्जिलिङ्ग में सैनिटेरियम नियत किया।

८. लाल सागर—लाल सागर द्वारा योरुप तथा भारतवर्ष का सम्बंध जोड़ने का यत्न किया । योरुपियों को भारत में वास करने तथा यहां भूमि के मालिक होने का अधिकार दिया परंतु अब तक यहाँ आँगल वस्तियाँ नहीं हो सकीं । १५-४६

९. कम्पनी की दशा—१८३३ में कम्पनी को नवीन अधिकार मिलने का अवसर आया जिसमें व्यापार करने का अधिकार कंपनी से सर्वथा छीन लिया गया तब से भारत का राज्य सम्बन्धी कार्य्य ही उस व्यापारिक कम्पनी के अधिकार में रह

१०. देशी रजवाड़ों के साथ बर्ताव-(क) मैसूराधीश कृष्णा राजा वोदयार ने भोगों में लम्पट होकर राज का धन नाश कर दिया तथा पूजा पर अत्याचार किये । १८३० में मैसूर की पूजा ने विद्रोह किया । विद्रोह के शांत करने पर राजा को गद्दी से उतार दिया और मैसूर को आँगल राज्य में मिला लिया । निदान १८८१ में यह रियासत उस राजा के दत्तक पुत्र को वापिस दी गयी, तब से यह अति उत्तमता से शासित हो रही है । (ख) कुर्ग के राजा वीर राजेंद्र वोदयार ने भी स्व-
जा पर घोर अत्याचार किये यहां की पूजा की इच्छानुकूल
वैन्टिक ने-
और र
को १८३४ में आंगल राज्य में मिला लिया
करके बनारस में भेज दिया ।
के साथ सन्धि-रूसियों ने मध्य एशिया
किया और अफ़ग़ानिस्तान तक अपनी

सीमा बढ़ा ली वरिक अफ़ग़ानों के साथ आंगलों के विरुद्ध पत्र व्यवहार किया-इस भय को दूर करने के लिए महा लाट ने रणजीतसिंह के साथ फिर से एक नई संधि की।

४७. लौर्ड मैट्काफ़-१८३५ से १८३६ तक

स्थानापन्न लाट विलियम वैन्टिङ्क के चले जाने पर मैटकाफ़ को स्थानापन्न गवर्नर जनरल बनाया गया क्योंकि कलकत्ते की कौंसिल का यह मुख्य सभासद् था। मैटकाफ़ युवावस्था से ही भारतवर्ष में रहा था, अतः इसे इस देश का बहुत अनुभव था। भारतवर्ष का महालाट बनाया जाने की पूर्ण आशा थी किंतु इसके विरुद्ध दो बातें थीं—

(१) मैटकाफ़ छोटे छोटे पदों से इस पद तक पहुंचा था, इस प्रकार भारत में बढ़ने वालों को बहुत कम महा लाट बनाया जाता था-यह नीति कुछ प्रशंसनीय भी है।

(२) इसने अपने समय में प्रेस को अधिक स्वतंत्र कर दिया। इस स्वतंत्रता के भाव को देख कर आंगल राज्याधिकारी वर्ग तथा आँगल प्रजा चकित तथा क्रुद्ध हुई, अतः महालाट का पद तो क्या उसे मद्रास के गवर्नर का भी पद न दिया गया। बल्कि आगरे प्रांत का महा कमिश्नर बनाया गया। इस प्रकार

<u>मैटकाफ़ की निराशता</u>-मैटकाफ़ स्वतंत्रता का शिकार बना और निराश होने पर त्याग पत्र देकर इंगलैंड चला गया। यहाँ

उसे १८३६ में जैमिका द्वीप का गवर्नर और १८४२ में कैनेडा का गवर्नर जनरल बना दिया गया तथा लौर्ड की उपाधि दी गई । इस प्रकार लौर्ड मेटकाफ अपनी उदारता और भारतीय प्रजा को थोड़ी बहुत स्वतंत्रता देने के लिए प्रसिद्ध है और अब तक लोग बड़े सम्मान के साथ उसका नाम लेते हैं ।

४८. लौर्ड औक्लैंड १८३६ से १८४२ तक

जीवन—इसका असली नाम जार्ज ऐडम था (३० वर्षों की अवस्था में पिता की मृत्यु होने पर लौर्ड बन गया) । इस समय लोकसभा को सुधारने के लिए जो यत्न हो रहा था, उस में इसने बड़ा हिसा लिया । १८३४ में उसे समुद्रीय विभाग का सेनापति बनाया गया । आखिर इंग्लैंड में अपनी नीति, प्रबंध और उदारता से प्रसिद्ध औक्लैंड १८३६ में भारत का महालाट नियत होकर आया ।

भारत की दशा—जब यह भारतवर्ष में पहुँचा, तब सारे देशमें शांति का राज्य था, रणजीतसिंह ने भी अपनी जयपताका को शान्ति दे रक्खी थी, उस समय में संयुक्त प्रांत में भूमि विभाग किया जा रहा था और पहाड़ी इलाकों की असभ्य प्रजा को शांति से रहन सहन की विधियां सिखलाई जा रही थीं। कोप भी पूर्ण था । लौर्ड औक्लैण्ड भी चुप चाप, सुडौल शरीर, सब प्रकार की शानो शौकत को बुरी दृष्टि से देखनेवाला

और मनुष्य मात्र का कल्याण चाहने वाला था। परन्तु इस के समय में जो अफ़ग़ानिस्तान की दुर्घटना हुई उस से उस की फहराती हुई कीर्तिपताका पर बड़ा ही कलङ्क लगा और ऐसा होना भी चाहिये था,क्योंकि ग़लती से युद्ध किया गया था।

(१) एक नियम पास किया गया जिसको कि अंग्रेज़ों ने (Black Act) भयङ्कर नियम कहा है,वह यह था कि छोटे २ अपराधों के लिए अंग्रेज़ों के मुक़द्मे साधारण अदालत में फ़ैसला होंगे। इस से पहिले उन के मुक़द्मे हाई कोर्ट में जाते थे। पर यह परिवर्तन इस लिए किया गया कि भारत वासियों को आङ्गल न्यायालयों में पूर्ण विश्वास हो।

(२) औक्लेण्ड ने गवर्नमेन्ट स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के लिये अधिक छात्रवृत्तियां रख दीं।

(३) प्राइमरी विद्यालय–यद्यपि शिक्षा देना आँगल भाषा में ही इष्ट था तथापि सारे भारतवासियों को उक्त प्रकार की शिक्षा प्रदान करना कठिन होता, अतः ५ म श्रेणी तक उनको अपनी २ भाषा में ही शिक्षा देना स्वीकृत हुआ और बहुत से प्राइमरी स्कूल खोल दिये गये।

(४) योरुपीय वैद्यक–योरुपीय वैद्यक का प्रचार इस के समय में ही किया गया और इसी उद्देश्य से कलकत्ते में मेडिकल कालेज की नींव रखी गई। भय था कि कोई हिन्दू

इस महाविद्यालय में नहीं पढ़ेगा क्योंकि इस में मुर्दे अवश्य चीरे जाते थे जो कर्म हिन्दु धर्म के विरुद्ध था। परन्तु धीरे २ इसका प्रचार होने लगा और इसी प्रकार के कालेज मद्रास तथा बम्बई में भी खोले गये।

(५) अवध में अकाल–अवधमें १८३७ और १८३८ घोर अकाल पड़ा जिस में कम से कम आठ लाख आदमी भूख के कारण मर मिटे। दुष्काल की आपत्तियों से बचने के लिये गंगा से नहर निकालने की तजवीज़ की गई जो १८५४ में लौर्ड डलहौज़ी के समय में तैयार हुई।

(६) स्नानकर–१८४० में राज्य का सम्बन्ध जो मन्दिरों की जायदाद से था, तोड़ दिया गया। साथ ही यात्रियों से जो स्नानकर लिया जाता था वह हटा दिया गया। इस से वार्षिक ३० हज़ार पाउण्ड की आय थी।

औकलैण्ड और अवध–१८३७ में अवध के नवाब का देहान्त हुआ। उसकी माता ने एक लड़के (मुन्ना जान) को जिसे वह मृत नवाब का पुत्र बताती थी सिंहासन पर बैठा दिया। अंग्रेज़ों को पता लगा कि वास्तव में वह मृत नवाब का पुत्र नहीं, अतः अंग्रेज़ किसी अन्य सम्बन्धी को नवाब बनाना चाहते थे। अंग्रेज़ी रेज़ीडेंण्ट को बारदरीमें बुलाकर मुन्नाजान कहा कि तुम भी हमें राजा मानो। बस समय

ज्येष्ठ पुत्र होने के कारण जमानशाह ही गद्दी पर बैठा, परन्तु इन तीनों भाइयों में राज्य के लिये परस्पर युद्ध होते रहे। हमें ज्ञात है कि जमानशाह ने अपनी कमज़ोरी छिपाने के लिये रणजीतसिंह को लाहौर का राज्य दे दिया था। उसी रणजीतसिंह की शरण में जमानशाह अपने भाई शाहशुजा से पराजित तथा अंधा किया हुआ १८०० में आया। परंतु दैव शाहशुजा के अनुकूल न होने के कारण उसके भाई ने उसके विरुद्ध विद्रोह किया और १८०९ में शाहशुजा वहां से भागकर लुधियाने में अँग्रेजों की शरण आया। महमूदशाह का वज़ीर फ़तह ख़ाँ था। जैसे पेशवाओं ने शिवा जी की सन्तान पर ज़ोर पकड़ा था वैसे इक मन्त्री महमूद पर दबाव डालना चाहता था। वीर महमूद अपना दासत्व कब सह सकता था? मन्त्री को महमूद ने समझाया परन्तु जब वह न माना तो महमूद ने मन्त्री की आंखें निकलवालीं। इस पर दोस्त महम्मद ने अपने मृत भाई का बदला निकालना चाहा। कुछ समय में महमूद को मार डालने में वह कृतकार्य भी हुआ। १८२६ में दोस्तमुहम्मद ने क़ाबुल हस्तगत कर लिया। परन्तु अफ़ग़ानिस्तान की दशा [illegible] थी। कन्धार पर दुरानी वंश का, [illegible] का, और काश्मीर तथा पेशावर पर [illegible]र था। पर दोस्त मुहम्मद ने बुद्धि-

५०. अफ़ग़ानिस्तान के प्रथम युद्ध के कारण

१. शाहशुजा अफ़ग़ानिस्तान का राज्य प्राप्त करना चाहता था। १८३४ में यद्यपि उसने अंग्रेज़ों तथा सिक्खों की सहायता से आक्रमण किया था तथापि वह असफल हुआ था। परन्तु उस में अफ़ग़ानिस्तान के विजय की इच्छा प्रबल थी और एक ऐसा अवसर भी आया कि अंग्रेज़ों ने उस की प्रार्थना सुननी स्वीकार की।

२. रूस वालों ने अफ़ग़ानिस्तान पर अपना अधिकार जमाना चाहा। दोस्त मुहम्मद ने आंग्लों से रूस के विरुद्ध सहायता मांगी परन्तु उन्होंने सहायता देने से इन्कार किया। इस पर दोस्त मुहम्मद ने जिस कर रूसी दूत का अपने दरबार में आंग्ल दूत की अपेक्षा अधिक सम्मान किया ताकि अंग्रेज़ भयभीत हो इसकी सहायता करें। परंतु अंग्रेज़ इस पर क्रुद्ध होकर इस को हटाना और इस के स्थान पर कठपुतली की भांति शाहशुजा को बैठाना चाहते थे।

३. काश्मीर और पेशावर के इलाके जो शेर रणजीत सिंह के पास थे, दोस्त मुहम्मद वहें लेना चाहता था और इन इलाकों को लेने के लिये उसने अंग्रेज़ों से सहायता मांगी परन्तु इन्होंने इस में हस्ताक्षेप करने से इंकार किया। रणजीतसिंह दोस्त मुहम्मद का शत्रु था। क्योंकि अफ़ग़ानी सेना

बारम्बार पेशावर पर आक्रमण करती थी और सिक्ख सेना को आगे अफ़ग़ानी इलाक़े में नहीं बढ़ने देती थी। रणजीत-सिंह भी शुजा को शाह बनाने के यत्न में था, सारांश यह कि रूस के व्यर्थ भय, शुजा की प्रार्थनाओं और रणजीतसिंह की सम्मति से अफ़ग़ानों के साथ युद्ध उद्घोषित किया गया।

५१. संग्राम: १८३८से१८३९ तक

कन्धार:—जनरल कीन के सेना पतित्व में शाहशुजा के साथ अफ़ग़ानिस्तान की ओर १८३८ में सेना भेजी गई। क्योंकि रणजीतसिंह ने इसे अपने इलाक़े में से गुज़रने नहीं दिया, अतः इसे सिन्ध में से गुज़रना पड़ा। वहां से गुज़र कर सेना कन्धार पहुँची। जिसे जीत कर शाहशुजा को वहाँ का राजा बना दिया गया।

काबुल:—अब ग़ज़नी तथा काबुल की ओर सेना बढ़ी उन नगरों को भी जीत कर १८३६ में शाहशुजा को काबुल का राजा बना दिया गया और बेचारा दोस्त मुहम्मद उत्तर की ओर भाग निकला।

जलालाबाद:—दूसरी सेना दर्राख़ैबर में से गुज़र कर जलालाबाद पहुंची और उसे थोड़े ही समय में जीत लिया। इस प्रकार सारा अफ़ग़ानिस्थान अंग्रेज़ी सेना के हाथ में आगया।

शुजा को और मैकनौटन साहब को उसका रेज़ीडेन्ट नियत किया गया।

अंग्रेज़ों की भूलें:—(१) शाहशुजा को काबुल में जब अमीर बनाया गया तब बहुत थोड़े अफ़ग़ान सरदार दरबार में उपस्थित थे। इस घटना से प्रकट होता है कि शाहशुजा से अफ़ग़ानी प्रजा सन्तुष्ट न थी क्योंकि यदि दोस्त मुहम्मद के स्थान पर सारा अफ़ग़ानिस्तान शाहशुजा को राजा स्वीकार करता तो सारे सरदार अवश्य आते। दूसरा, शाहशुजा अत्यन्त घमण्डी था और उसे ३० वर्ष राज्य छोड़े हो गये थे। और तीसरा मिलनसारी से दोस्त मुहम्मद ने सारे सरदारों को अपना मित्र बना लिया था। इन सब बातों से अंग्रेज़ों को स्पष्टतया समझना चाहिये था कि शाहशुजा अफ़ग़ानिस्थान का राजा नहीं बन सकता, क्योंकि कोई भी पुरुष केवल तलवार के बल से ही राजा नहीं हो सकता और नाही राज्य स्थिर हो सकता है।

(२) दूसरी ग़लती अंग्रेज़ों ने यह की कि जब वे शाहशुजा को तख्त पर बैठा चुके तो वापिस न आये। और खर्च घटाने के लिये जो नई सेना हटाई गई वह बड़े २ अनुभवी अफ़सरों की थी।

इन भूलों का परिणाम आगे स्पष्ट होगा किन्तु उस समय

विजय से उन्मत्त हुए आंगलों को ये भूलें प्रतीत नहीं होती थीं अतः आकलैंड को अर्ल तथा कीन "लार्ड कीन आफ गज़नी" बना दिया गया। मेकनौटन और पौटिंजर को बैरोनेट की उपाधि मिली। १८४० में अंग्रेज़ों के सौभाग्य से दोस्त मुहम्मद ने परवान पर पराजित होकर अपने आपको अंग्रेज़ों के अधीन कर दिया। उसे लुधियाने में भेजा गया और उसके व्यय के लिए वार्षिक दो लाख रुपया स्वीकार किया गया।

(३) १८४३ में अंग्रेज़ों ने अफ़गानों को रुपया देना बंद कर दिया था, अतः वे अफ़गान असन्तुष्ट होकर उनके विरुद्ध गुप्त २ आन्दोलन करने लगे। १८४१ में जलालाबाद पर अफ़गानों ने आक्रमण किया। इस 'सेल' सेनापति ने बहुत दिनों तक बड़ी वीरता से बचाव रक्खा। अन्त में तंग आकर अफ़गान स्वयं ही लौट गए थे।

(४) इसी वर्ष काबुल में जो थोड़ी सी आंगल सेना बालहिसार नामी दुर्ग में रहा करती थी, वहां से शाहशुजा के कथनानुसार खुले मैदान में आपड़ी जहां कि कोई रक्षा का उपाय न था। इसी वर्ष "बर्नीज़" तथा अन्य आँगलों को जो शहर के मध्य में रहा करते थे अफ़गानों ने घेर कर मार

तो लार्ड आकलैंड को वापिस बुला लिया गया और इसके स्थान पर लार्ड एलिनबरा नियत किया गया। जो कि १८४२ से १८४४ तक वहां रहा।

लार्ड औकलैण्ड के समय में चीन का अफीम युद्ध हुआ। १८३४ में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का पूर्व में व्यापार करने का अधिकार सर्वथा ले लिया गया था। इस पर जिस अंग्रेज की इच्छा आई, वही भारत और चीन से व्यापार करने लगा. भारत की अफ़ीम को बिना किराया दिए ही आंग्ल व्यापारी चोरी २ चीन में ले जाते थे। चीन-राज्य प्रजाओं में अफ़ीम खाना बन्द करना चाहता था अतः बहुत सा कर अफ़ीम पर लगा रक्खा था यद्यपि चीन राज्य ऐसा करने से न्यायपर था तथापि इस बात को इङ्गलैंड वाले न समझ सके, अतः युद्ध आरम्भ हुआ। [illegible] के शासनकाल में इंग्लैंड और भारत से कुछ सेना भेजी गयी, कई स्थानों पर चीनियों की हार हुई, अन्ततः परिणाम यह हुआ कि हांगकांग का द्वीप अंग्रेज़ों को दे दिया गया और अन्य चार बन्दरगाह अंग्रेज़ों के व्यापार करने के लिए खोल दिए गए।

५२. लार्ड एलिनबरा तथा अफ़गान युद्ध।

युद्ध में हारने से अंग्रेजों को अपना रुतबा और अफ़गानों को दण्ड देने के लिये पुनः युद्ध आरम्भ कर

और पोलक से मिल कर राजधानी-काबुल-को जीत लिया और वहां बाला हिसारके दुर्गको बारूद से उड़ा दिया। फिर अकबरख़ां भी शिकस्त खाकर भाग गया। इस प्रकार शाहशुजा के पुत्र को गद्दी पर बिठा और स्वमान बचा कर सम्पूर्ण आंगल-सेना अफ़गानिस्तान से लौट आई।

युद्ध के परिणाम—(१) आंगल सेना के लौटते ही अकबर ख़ाँ ने शाहशुजा के पुत्र को सिंहासन से उतार दिया, परन्तु आंगलों ने इस की कुछ परवा न की और अपने क़ैदी दोस्त मुहम्मद को भी मुक्ति दी जो कि लौट कर अफ़गानिस्तान का बादशाह बना।

(२) ग़ज़नी और बालाहिसार का नाश करना आंगल सेना के योग्य न था।

(३) सोमनाथ के मन्दिर के दरवाज़े बड़ी धूम ‍धाम से उत्तर भारत के एक सिरे से दूसरे तक घुमाये गये।

(४) भारतवासियों को इस से बड़ी हानि हुई कि २० करोड़ रुपये का ऋण उन के सिर पर आ पड़ा और भारत के २० हज़ार वीरपुत्र परलोक सिधारे।

(५) अंग्रेज़ों की सैनिक प्रसिद्धि कम होगयी।

(६) अफ़ग़ानों का अंग्रेज़ों के साथ वैरभाव बहुत बढ़ गया यहाँ तक कि आज कल भी अपने प्रान्तों में वृटिशराज्य निवासियों को अफ़ग़ान लोग सफ़ेद वस्त्रों पर दाग़ के समान समझते हैं।

५३—सिन्ध का विजय।

सिन्ध को १७८६ ई० में बलोचिस्तान के कुछ बलोचियों ने स्वाधीन कर लिया था, तब से ये लोग दृढ़ दुर्गों में रहते हुए प्रजा पर सहस्र प्रकार के अत्याचार करते थे। जब आँगल लोग बल पकड़ने लगे तो बलोचों ने स्वरक्षार्थ कुछ उपाय किये, किंतु १८३२ में आंगलों ने इन अमीरों के साथ जिनमें हैदराबाद के अमीर बड़े थे व्यापार-संधि कर ली। फिर १८३८ में एक आंगल रेज़िडेंट भी अमीरों ने अपने राज्य में रखना मान लिया। अफ़ग़ानी युद्ध में ऊपर से तो कुछ सहायता वे सरकार को देते रहे परन्तु सिन्धदेश में ही आंगलों की शक्ति बढ़ती देख कर शासक अमीर गुप्त तय्यारियां करने लगे।

मयानी और हैदराबाद के संग्राम-१८४२ में लार्ड

एलिनबरा ने सरचार्ल्स नेपियर की अध्यक्षता में
२८०० सैनिक भेजे उन्होंने मयानी और हैदराबाद
के प्रसिद्ध संग्रामों में अमीरों को पराजित किया।
मीरपुर, अमरकोट आदि स्थानों को भी जीत लिया-
इस प्रकार शीघ्र ही सिन्धदेश आंगली शासन में आ
गया। सारा युद्ध अन्याय तथा निर्दयतायुक्त व्यवहार
किया जाता था क्योंकि अल्प अपराध के लिये ऐसा
भयंकर दण्ड अमीरों को देना उचित न था किन्तु
सिन्ध की प्रजा के लिये इस विजय से कोई भेद न
आया, बलोची भी विदेशी थे और आंगलभी विदेशी-
भेद इतना अवश्य हो गया कि बलोची अत्याचारी
और असभ्य थे-उन के अधीन देश उन्नति नहीं कर
सकता था-आंगलों के अधीन प्रजा अत्याचारों से
बच गयी है तथा उसे उन्नति के मार्ग पर चला दिया
गया है।

५४—ग्वालियर और एलिनबरा

दौलतराव सिन्धिया का पुत्र जंकोजी राव १८४३
र सन्तान मरा। उसकी विधवा रानी ताराबाई
...जीराव को दत्तक लिया, उसे आंगलों ने भी

मान लिया। पर उसके पुत्र का संरक्षक कौन हो इस पर रानी तथा आंगलों में विवाद उठ खड़ा हुआ। महारानी ने दादाखास जी को और एलिनबरा ने मामासाहब को संरक्षक चुना। गवर्नर की आज्ञा की उपेक्षा करते हुए महारानी ने 'खासजी' को संरक्षक रक्खा।

(२) गवालियर में देशी सेना अधिक थी—कहा जाता है कि उस सेना पर राज्य का ६ भाग व्यय होता था, तो भी सैनिकों को पूर्ण वेतन न मिल सकता था। अतः वे असन्तुष्ट रहते थे।

(३) पंजाब में उस समय खालसा सेना अति उत्साहित थी, और उस से फ़साद उठने का भय था। यदि किसी तरह गवालियर के सिपाही तथा वीर सिक्ख सैनिक मिल जाते तो आँगलों को महती विपत्ति का सामना करना पड़ता। उपरोक्त तीन कारणों से आँगलों ने सेना भेजदी। सर ह्यू गफ़ ने १८४४ में महाराजपुर पर और ग्रे ने पन्यार पर गवालियर की सेना को पराजित किया, तब महारानी ताराबाई चुप होगई। (i) उस को आंगलों ने पैन्शन दे कर राज्य कार्य्य से हटा दिया। (ii) एक संरक्षक सभा बना दी

(iii) जिस ने आंगल रैज़िडेन्ट के कथनानुसार यह
हुई देशी सेना की संख्या घटादी। ।।' कुछ आंगल सेना
भी गवालियर को शान्त रखने के लिये रखदी जिस
के व्यय के लिये गवालियर राज्य में से कुछ इलाका
अंग्रेज़ों ने लिया ।

८५. इंदौर—१८४३ में हरिराव हुल्कर मर गया ।
अभाग्यवश दूसरे वर्ष दत्तकपुत्र भी उसका अनुगामी हुआ,
हरिराव की माता ने संरक्षक का काम किया और
टूकाजीराव को राजगद्दी देदी । रैज़ीडेन्ट भी महा-
रानी के साथ सहमत हुआ, किन्तु लार्ड एलिन्बरा
असन्तुष्ट था। पर उधर सिन्ध और गवालियर के साथ
कठोर बर्ताव के कारण कम्पनी ने एलन्बरा को वापिस
बुला लिया—एलिन्बरा और कम्पनी का कई बातों
में परस्पर विरोध हो गया था। सिन्ध का अन्याय
युक्त विजय उन में से एक था, अतः १८४४ में ही इसे
वापिस आना पड़ा—इस के स्थान पर लार्ड हार्डिंग
बड़ा लाट बनाया गया।

लार्ड हार्डिंज १८४४ से ४८ तक

८६. जीवन:—१७८५ में लार्ड हार्डिंग पादरी

हेनरी हार्डिज के यहां पैदा हुआ था। बाल्यावस्था में यह बड़ा नाटा था—अतः इसे दरवाज़े पर लटका दिया करते थे, जिस से यह कुछ बड़ा भी हो गया। १८०४ में सेना में भर्ती हुआ प्रसिद्ध वाटर्लू और लिग्नी के युद्धों में शामिल हुआ—वहां इन का बांयां हाथ कट गया, अतएव पञ्जाब में इसका नाम टुण्डूलाट पड़ा। वाटर्लू के युद्ध की समाप्ति पर वेलिङ्गटन ने बहुत से पत्र हार्डिञ्ज की प्रशंसा में लिखे और १८१६ में जब सेना की देख भाल की तो वेलिङ्गटन ने, नैपोलियन की तलवार हार्डिञ्ज को पारितोषिक के स्वरूप में दी। १८२० में लार्ड हार्डिंज पार्लियामैन्ट में प्रविष्ट हुआ और भारत में आने से पूर्व तक पार्लियामैन्ट का सभासद् रहा। स्वदेश में १० वर्षों तक युद्ध-सचिव के पद पर इस ने यश प्राप्त किया और सेना विभाग में इसने कई एक ऐसी उन्नति यें कीं जो अब तक स्थिर हैं।

५७ लार्ड हार्डिञ्ज का भारत में कार्य्य।

(१) आते ही इस ने देखा कि पञ्जाब में बड़ी खलबली मची है अतः आंगल-भारत पर सिखों के

आक्रमणकी सम्भावना से बहुतसी सेना पंजाबकी सीमा
पर भेज दी । यह बड़ी बुद्धिमत्ता का कार्य था क्योंकि
सिक्ख ज्यों ही सतलुज के पार हुए, लार्ड हार्डिंग
दस दिनों में ही उनसे लड़ने को तय्यार हो गया ।

(२) अवध के नवाब ने अंग्लों से नियत व-
ज़ीर को हटा कर अपना वज़ीर नियत किया । लार्ड
हार्डिंग ने उस पर बड़ी फाट डाली और साथ ही
राज्य का प्रबन्ध ठीक करने को लिखा ।

(३) भारतवासियों की शिक्षा बढ़ाने का उस
ने यत्न किया । उस समय छोटे २ पाठशाला ग्रामों में
हो गये थे पर इस ने भारतवासियों को राज्य में
अधिक नौकरियां देने के कारण उस शिक्षा के प्राप्त
करने का उत्साह बढ़ाया और इस शुभ कार्य के लि-
ये बङ्गालियों ने उसका धन्यवाद किया ।

(४) लवणकर:—लवण पर कर घटा दिया ।
बङ्गाल में $3\frac{1}{4}$ रुपये १ मन पर कर लिया जाता था,
इसने तीन रुपये कर दिया । इस से एक लाख २०
हज़ार पाउण्ड का गवर्नमैन्ट को घाटा हुआ । परन्तु
लोगों के अधिक लवण खाने से थोड़े समय में ही

आमदनी बढ़ गई । इस पर १८४९ में १२ आने कर और कम कर दिया । १८८२ में २ रुपया मन तथा लार्ड कर्ज़न ने अन्त में १$\frac{१}{२}$ रु० मन कर लगाया।

(५) रेल:—योरूप में उस समय रेलें चल गई थीं। भारतवर्ष में भी रेल की तजवीज़ लार्ड हार्डिंज ने की। जिस प्रकार उसने कम्पनी द्वारा रेल चलाने की इच्छा प्रकट की थी उसके उत्तराधिकारी लार्ड डलहौज़ी ने वैसा ही किया।

(६) कोल्हापुर में कुछ विद्रोह होगया। विद्रोह के मिटने पर बालक राजा की बाल्यावस्था के गुज़रने तक अंग्रेज़ों के हाथ में ही राज्य कर दिया। देश के क़िले गिरा दिया, सेना हटा दी और विद्रोहियों को तीक्ष्ण दण्ड से दण्डित किया।

(७) आदित्यवार के दिन गवर्नमेंट के सब कार्य्यालयों में छुट्टी देनी प्रारम्भ की जिसका अनुकरण सारे देश में अब हो गया है।

(८) गंगा की नहर-गंगा की नहर खुदवाने में इसने बहुत शीघ्रता की। इस से अब ६ लाख एकड़

भूमि प्रतिवर्ष सींची जाती है और कम से कम १०० लाख हो जाता है।

(९) सती की रीति—यद्यपि विलियम बैंटिक ने सती होना बन्द कर दिया था, तथापि पंजाब और कई असभ्य प्रान्तों में सती की रीति प्रचलित ही थी, लार्ड हार्डिञ्ज ने सती होना तथा नरवध पूरे तौर पर बन्द कर दिया।

(१०) चाय का बोना आसाम में इस के समय में बहुत प्रचलित हुआ।

(११) चुंगी कर— देशी रजवाड़ों और देशी प्रान्तों में जो माल परस्पर आता जाता था उस पर चुंगी ली जाती थी, इस ने कर लेना बन्द कर दिया।

(१२) प्राचीन भवन—भारत के पुरातन भवनों की रक्षा के लिये इसने प्रबन्ध किया।

(१३) फ़ोटोग्राफ़ी—फ़ोटोग्राफ़ी इस के समय तक भारतवर्ष में प्रचलित न थी। इसने इसके प्रचार में यत्न किया।

(१४) कलकत्ते में प्रबन्धार्थ नागरिक सभा बनवाई।

(१५) भारतवर्ष में तार आरम्भ की और डाक खाने के प्रबन्ध का संशोधन किया।

(१६) सेना की कार्य क्षमता के इस वीर योद्धा और अध्यक्ष ने बढ़ा दिया। योरोपीय सिपाहियों की संख्या अधिक करदी, साथ ही सेना पर खर्च भी कम कर दिया। जब १८४८ में वह भारत में गया तो १८ लाख ८० हज़ार पाउण्ड की वार्षिक बचत थी।

(५८) सिक्खों के प्रथम युद्ध के कारण—१८४५ से १८४६ तक। १८३९ में रणजीतसिंह के मरने पर ९२ हज़ार पैदल, ३१ हज़ार घुड़ सवार, ५०० तोपें पंजाब में थीं। खड्गसिंह और शेरसिंह, रणजीतसिंह के यह दोनों पुत्र अत्यन्त कमज़ोर थे। १८४३ तक तीन राज पुत्र-खड्गसिंह, नौनिहालसिंह और शेरसिंह सिंहासनारूढ़ हुए और तीनों मारे गये। इस समय केवल राजपुत्र ही नहीं मारे जाते थे बल्कि सिक्ख सरदार परस्पर एक दूसरे का भी घात कर रहे थे। १८४३ में रानी जिन्दां का पुत्र दिलीपसिंह सिंहासना-

५९. संग्राम–सिक्खों की ओर प्रसिद्ध सरदार लालसिंह और तेजसिंह थे और अंग्रेज़ों का सेनापति सरह्यू गफ था। लार्ड हार्डिंज भी एक प्रसिद्ध योद्धा होने के कारण कदापि संग्राम से पृथक् नहीं रह सकता था। अतः वह स्वयं भी युद्ध में सम्मिलित हुआ।

मुदकी, फ़िरोज़शाह, अलीवाल और सुब्राऊँ पर चार संग्राम हुए। मुदकी पर अंग्रेज़ों के पास कुछ बारूद घट गया पर वे पराजित न हुए. यहां सिक्खों ने बड़ी वीरता का परिचय दिया। परन्तु थोड़ी सी आंग्ल सेना ने जिस साहस से संग्राम किये और सुब्राऊं के स्थान पर सिक्ख सेना को पराजित किया वह प्रशंसनीय है। सुब्राऊं के युद्ध में हार कर सिक्ख सेना नदी पार होना चाहती थी पर दुर्दैव वश जिस पुल से पार उतरना था उस पर एक बार ही अधिक भार हो जाने से वह पुल टूट गया और पुल पर उपस्थित सैनिकगण काल के वश हुए, हज़ारों ने नदी में कूद २ कर प्राण गवांये [illegible] बचे सैनिकों को किनारे पर चुन २ कर मार डाला।

रूढ़ हुआ और रानी उसकी संरक्षिका बनी। १५:५८
खालसा सेना किसी के वश में नहीं थी, शेर रणजीत-
सिंह ने इसे निरन्तर विजय में लगाये रखा था पर अब
परस्पर के झगड़ों से विजय का काम शिथिल था
इस कारण सेना भी असन्तुष्ट थी। रानी जिन्दां ने
विचार किया कि कदाचित् उसके पुत्र को भी पूर्व
राजपुत्रों की भाँति खालसा सेना मार डाले, अतः
सेना को कार्य में लगाना चाहिये। मूलता से इस सेना
को आंगल शासित प्रांत पर हमला करने के लिये
रानी ने उत्तेजित किया, इस पर यह १८४५ में सतलुज
को पार कर अंग्रेज़ी प्रान्त पर आ पड़ी।

खालसा सेना के जोश बढ़ने के कारण
यह भी थे कि (i) उसे कहा गया था कि जब तुम
अंग्रेज़ी प्रान्त पर आक्रमण करोगे तो अंग्रेज़ों के
देशी सिपाही तुम से आ मिलेंगे। पर ऐसा न हुआ।
(ii) अफ़ग़ानिस्तान में आंगलों के पराजित होने के
कारण सिक्खों का जोश बहुत बढ़ गया था [iii] सि-
क्ख सिपाही यह देख रहे थे कि हम अन्य सिपाहि-
यों से अधिक कवायद सीखे हुए हैं और वीरतर हैं।
अतः आंगलों को निःसन्देह पराजित कर सकते हैं।

५९. संग्राम—सिक्खों की ओर प्रसिद्ध सरदार लालसिंह और तेजसिंह थे और अंग्रेज़ों का सेनापति सरह्यू गफ़ था। लार्ड हार्डिंज भी एक प्रसिद्ध योद्धा होने के कारण कदापि संग्राम से पृथक् नहीं रह सकता था। अतः वह स्वयं भी युद्ध में सम्मिलित हुआ।

मुदकी, फ़िरोज़शाह, अलीवाल और सुब्राऊँ पर चार संग्राम हुए। मुदकी पर अंग्रेज़ों के पास कुछ बारूद घट गया पर वे पराजित न हुए, यहां सिक्खों ने बड़ी वीरता का परिचय दिया। परन्तु थोड़ी सी आंग्ल सेना ने जिस साहस से संग्राम किये और सुब्राऊं के स्थान पर सिक्ख सेना को पराजित किया वह प्रशंसनीय है। सुब्राऊं के युद्ध में हार कर सिक्ख सेना नदी पार होना चाहती थी पर दुर्दैव वश जिस पुल से पार उतरना था उस पर एक बार ही अधिक भार हो जाने से वह पुल टूट गया और पुल पर उपस्थित सैनिकगण काल के वश हुए, हज़ारों ने नदी में कूद २ कर प्राण गंवाये। इस भयङ्कर दशा से बचे सैनिकों को किनारे पर स्थित अंग्रेज़ी सेना ने चुन २ कर मार डाला। अन्ततः जब अंग्रेज़ी सेना

नदी पार हुई तो कोई सिक्ख सेना उनके सामने लड़ने को न मिली । अतः आँग्ल सेना बढ़ती हुई लाहौर तक जा पहुंची । दिलीपसिंह ने लार्ड हार्डिंग को लाहौर और गोविन्दगढ़ की कुञ्जियां दीं । फिर लाहौर में दर्बार हुआ जिसमें यह सन्धि हुई कि-

(१) रावी तथा सतलुज का मध्यवर्ती इलाका तथा १½ करोड़ रुपया अंग्रेज़ों को युद्ध का ख़र्च दिया जावे ।

(२) यदि यह सारी रकम न हो तो कश्मीर और हज़ारा का इलाका दिया जावे ।

(३) सिक्ख सेना बहुत कम करदी गई । १२ हज़ार घुड़ सवार और २५ हज़ार पैदल रखे गये और जो तोपें अंग्रेज़ों के विरुद्ध लड़ने में लगाई थीं वे अंग्रेज़ों को दी गईं ।

(४) राजा गुलाबसिंह जो जाति का राजपूत था और जो रणजीतसिंह के समय में कश्मीर का हाकिम था, उस से एक करोड़ रुपया लेकर उसे कश्मीर का स्वतन्त्र राजा बनाया गया ।

पश्चात् भारत के बड़े लाट हुए इसके सहपाठी थे । अपने दो बड़े भाइयों तथा पिता की मृत्यु हो जाने पर लेग्ज़, लार्ड डलहौज़ी बन गया और लार्ड सभा में ऐसी योग्यता दिखाई कि दोनों उदार तथा अनुदार दल उसकी प्रशंसा करने लगे । यद्यपि इसकी आयु ३५ वर्षों की थी और इसके विरुद्ध दल का राज्य था तथापि इसे बड़ा लाट बनाया गया । यहाँ रात दिन ऐसा कठोर काम करना पड़ा कि अति सुडौल होते हुए भी डलहौज़ी रोगग्रस्त होगया और भारत से जाने के ४ वर्ष पश्चात् ही इस महापुरुष की मृत्यु होगई, परन्तु इसका नाम आङ्गल इतिहास में अमर होगया है ।

कार्य्य—डलहौज़ी की अपूर्व शक्ति का भण्डार होते हुए यह आवश्यक था कि वह अपने शासनसमय में बड़े २ काम करता । सूत्रवत् उन बड़े २ कामों को यूं वर्णन कर सकते हैं कि रिवर भारत को उसने वर्तमानिक उन्नति करने वाले भारत में परिवर्तित कर दिया । शतशः जातियां, प्रान्तों, राज्यों में विभक्त, छलनी हुऐ भारत को एक जाति, एक देश और एक राज्य में लाकर आङ्गलों तथा भारतियों के लिये वह

पूर्ण हुवा। फिर रेल, तार, डाकखाना, समान शि
समान राष्ट्रिक तथा व्यापारिक घटनाओं से सम्
भारत को एकता की सुवर्णमयी बेड़ियों में ज
जकड़ दिया।

भारत में डलहौजी के काम के ३ भाग हैं।

(१) भिन्न इलाकों का विजय।

(२) भिन्न इलाकों का आङ्गल राज्य में मिलाना

(३) जातीय उन्नतियाँ।

६१. द्वितीय सिक्ख युद्ध

प्रथम युद्ध में यद्यपि सिक्ख हार गये थे तथा
स्वतन्त्रता का जीवन उनमें टूटा न था, पर आङ्गलों
लिये यह स्वतन्त्रता हानिकारक थी। सारे पञ्जा
में आङ्गलों को निकालने का जोश था। प्रजा आंगलों
के विरुद्ध थी और चूंकि इन्हों ने नये २ परिवर्तन
आरम्भ कर दिये थे इसलिये भी प्रजा विरुद्ध थी।
समय पाकर लोग बदला निकालने को तय्यार थे।
सिक्ख सरदारों को इस अशान्ति के दूर करने के
लिये आंगलों ने कहा परन्तु वे असमर्थ थे क्योंकि
भेना का बड़ा भाग आंगलों का था और फिर

आंगल ही पञ्जाब में शान्ति रखने के ज़िम्मेवार थे। खालसा सभा ने आंगलों को ही इस अशान्ति के दूर करने के लिये कहा। जब आंगलों ने विद्रोही सिक्खों को जीत लिया तब बजाय उसके कि जीते हुए स्थान लाहौर के अधीन करदेते, अँग्रेज़ों ने सारे इलाके अपने अधीन कर लिये और राजा दिलीपसिंह को क़ैद कर के इंगलैण्ड में भेज दिया

संग्राम-मुलतान का दीवान मूल राज लाहौर के सिक्खों से नाराज़ होकर अपनी दीवानी छोड़ना चाहता था। अंग्रेज़ों की सलाह से सरदार खानसिंह दीवान नियत किया गया। कुछ सेना के साथ कई अंग्रेज़ मुलतान में कर एकत्रित करने को नई विधी जारी करने और साथ ही मूलराज से किले की कुञ्जी लेकर नये दीवान को देने के लिए भेजे गये। दीवान मूलराज ने कुञ्जी दे दी, परन्तु वहां के सिक्ख सैनिकों में अपने प्यारे दीवान को पदच्युत होते देख अत्यन्त क्षोभ हुआ। इन अंग्रेज़ों को निकलते समय पहरे वालों ने मार डाला। मूल राज का इसमें कुछ भी दोष न था परन्तु दोष उसी पर मढ़ा गया। अतः सिक्ख तथा आंगल सेना मुल-

तान को फतह करने के लिये लाई गई । मूलराज को अपने सिपाहियों के साथ मिलना पड़ा । मुलतान बहुत सालों तक घिरा रहा, आखिर १८४८ में मूलराज के मामूं के साथ मिलकर अंग्रेज़ी सेना ने दुर्ग के बारूदखाने को उड़ा दिया । तब बारूद न होने के कारण मुलतानी सेना मुकाबिला न कर सकी । दुर्ग आंगलों के हाथ आगया । मुलतान में लूट मार हुई । दीवान मूलराज को पकड़ कर रंगून भेज रहे थे कि रास्ते में उसने हीरा चाट कर आत्मघात कर लिया ।

(२) पेशावर—लार्ड डलहौज़ी १८४८ में पञ्जाब में स्वयं आया और सिक्खों के बल को नष्ट कर के पञ्जाब को आंगल इलाके के साथ मिलाना चाहा परन्तु पेशावर पर सिक्खों और अफगानों ने अंग्रेज़ी सेना को पराजित किया ।

(३) रामनगर पर अनिश्चित युद्ध होने के कारण कुछ परिणाम न निकला ।

(४) चिलियांवाला–यहां पर चिलियांवाला का प्रसिद्ध युद्ध हुआ । यह युद्ध अत्यन्त घोर तथा

सिक्ख युद्धों में सब से भीषण प्रसिद्ध है। शेरसिंह ने यहां पर अद्भुत वीरता दिखाई यद्यपि इसमें कहते हैं कि सिक्खों को धोखा दिया गया अर्थात् बारूद के स्थान पर शत्रु के साथ मिले हुए देश हत्यारे सिक्खों ने सेना को कोयला दिया। सिक्खों के बहुत से वीर मारे गये, अंग्रेज़ भी नाम मात्र ही जीते। अतः इस घोर युद्ध की सूचना जब इंगलैण्ड में पहुंची तो भय उत्पन्न हुवा। लार्ड गफ़ को वापिस आने की आज्ञा मिली और उसके स्थान पर नैपियर को सेनापति बनाकर भेजा गया परन्तु पूर्व इसके कि नैपियर अपना पद भारत में आकर लेता, लौर्ड गफ़ ने अपना अपमान गुजरात के विजय से धो डाला था।

(५) १८४९ में गुजरात के स्थान पर जो युद्ध हुवा उसको तोपों का युद्ध कहते हैं क्योंकि इसमें विशेषतः तोपों के द्वारा ही सिक्खों को हराया गया था। सिक्खों ने बड़ी वीरता दिखाई पर कुछ लाभ न हुवा। शेरसिंह, चतरसिंह, तथा अन्य सरदारों ने अपने हथियार छोड़ दिये और दो मासों के भीतर ही जनरल गिलबर्ट ने सिक्खों की सारी सेना से हथियार ले लिये। अफ़ग़ान जो सिक्खों की सहाय-

(३) पक्की सड़कें, रेलें, तथा नहरें इसमें बनाई जाने
लगीं जिस से देश में विदेशी व्यापार बढ़ने लगा।
८ वर्षों के भीतर ही प्रजा के हृदय में ऐसा भय वा प्रे
भर दिया गया कि १८५७ में अंग्रेजों को निकालने
का जो बड़ा ग़दर हुआ उसमें पञ्जाब के लोग विल
कुल न मिले बल्कि उन्हों ने आङ्गलों को हार्दिक
सहायता दी।

६३. ब्रह्मा का दूसरा युद्ध १८५२।

(i) रंगून में ब्रह्मा वासियों ने आंगल व्यापारियों
के साथ बुरा व्यवहार किया (ii) और भारतीय राज्य
के दूत का भी अपमान किया था-इसपर डलहौज़ी
जैसा गरम स्वभाव वाला महाशय जिसने कि सिक्खों
जैसी वीर जाति को नीचा दिखाया हो कैसे चुप बैठ
सकता था—उसने युद्ध उद्घोषित कर दिया।

रंगून, मर्तबान, बसीन, प्रोम, पीगू—इन स्थानों
पर क्रमवार ब्रह्मावासी पराजित हुए। युद्ध के समय
में ही ब्रह्मा के राजा का देहान्त होगया तब नया राजा
हुआ, वह आंगलों के साथ सन्धि करना न चाहता
था। डलहौज़ी ने को इलाके फ़तह किये थे उन्हें

आंगल राज्य में मिलाकर उनके शासनार्थ एक चीफ कमिश्नर नियत करदिया—उस देश का नाम 'लोवर ब्रह्मा' रक्खा ।

६४. देशी रजवाड़ों से वर्त्ताव

देशी रजवाड़ों को आङ्गल इलाके में मिलाने के विषय में डलहौज़ी का मन था कि जब कि रियासत का राजा और उसका कोई वास्तविक पुत्र न हो और अपने जीते जी आंगलों की आज्ञा से कोई दत्तक पुत्र न कर लिया हो तो रियासत आंगल राज्य में मिला ली जावे । इस लाट का यह विश्वास था कि भारत की प्रजा के लिये आंगल राज्य बहूपकारी है । राजे, नवाब स्वेच्छाचारी होने से प्रजा पर अत्याचार करते हैं—इस कारण सारे भारतवर्ष पर आंगलों का राज्य होना चाहिये । यह परोपकार का भाव ऐसा दृढ़ हुवा कि दत्तक पुत्र को सर्वथा राज्य न देने की लाट ने ठान ली, हां! वह राज्य को निज जायदाद ले सकता था कारण कि राजा का यह कार्य्य नहीं कि प्रजा के शासनार्थ राजा स्वयं नियत करे । पर यह प्रजा का अप

काम है। क्योंकि डलहौज़ी के विचार में आकुल सुशासन कर रहे थे अतः सब ऐसी लावारस रियासतें आङ्गल राज्य में मालामी चाहियें। सतारा, झांसी नागपुर-उक्त कारण से आंगलों के हाथ में आये। उधर निज़ाम हैदराबाद ने आँगलों का बहुतसा रुपया ऋण देना था अतः वैल्ज़ली ने जो बरार का इलाका निज़ाम को १८०३ में दिया था अब १८५३ में सहायक सेना के व्ययार्थ आंगलों को यह बरार देश निज़ाम ने वापिस दे दिया। १८५६ में अवध मिला लिया गया क्योंकि वहाँ के नवाब ने आंगलों की इच्छानुसार सुशासन न किया था। बारबार बड़े लाटों ने कहा भी था परन्तु जब सुशासन न कर सका तब नवाब वाजदअलीशाह को १२ लाख वार्षिक पेन्शन देकर अवध, आंगल राज्य में मिला लिया गया।

१४. भारत का चित्र—इस प्रकार इलाके मिलाने नवा [illegible]) भारत का चित्र [illegible] पञ्जाब, सिन्ध,ब्रह्मा, [illegible]कर भारत [illegible] परिधि [illegible]ज्ञान, [illegible] बाद

सीमाएं मिलाकर विदेशी नीति का केन्द्र कलकत्ता
से इङ्गलैण्ड में कर दिया । अवध, बरार, सम्भलपुर,
झांसी, खानदेश को मिला कर भारत की अन्तरीय
नीति को ऐसा बनाया कि अब तक उसी का अनु-
करण किया जा रहा है ।

६६. जातीय उन्नति के साधन—(क) इतने
बृहत देश को बिना रेल के काबू करना असम्भव है-
तथा देश और विदेश का धन व्यवसाय में लग सके
इस कारण रेलों के बनाने में बड़ा यत्न किया गया
ल निर्माण का अधिकार कम्पनियों को दिया गया,
कि विदेश से व्यापार बढ़ सके. इंगलैण्ड का
करण करते हुए भारत में व्यापार निर्बाधित कर
। १८५३ में पहली रेल बनाई गई; ४००० मील
तार लगाई गई और २ हजार मील तक सड़कें
गई, चन्द बन्दरगाह और नहरें बनाई गईं-
का परिणाम यह हुआ कि देश का कच्चा माल
खूब जाने लगा और इंगलैण्ड के शिल्पी
यहाँ भरमार होने लगी ।
) डलहौजी के समय से पूर्व यहाँ टिकट
थे, पत्र भेजने में डाक महसूल दूरी के

अनुपात से लगता था। डलहौज़ी ने आध आने का टिकट सारे भारतवर्ष के लिये कर दिया। अब पैसे का कार्ड देश के एक सिरे से दूसरे सिरे तक जाता है। ८०००० मील तक डाक एक वर्ष में चालीस करोड़ पत्र ले जाती है।

इसी लाट के समय यह तार लगाया गया जिसने संसार में बड़े कौतुक कर दिखाए हैं। सत्य तो यह है कि तीन लाख सिपाहियों के द्वारा नहीं बल्कि रेल, तार और डाक द्वारा आंग्ल लोग भारत का राज कर रहे हैं। परन्तु यह स्मरणीय है कि भारत में व्यापार, व्यवसाय, जातीय एकता, किंवा-एक शब्द में सभ्यता का प्रचार न हो सकता यदि ये साधन आदमियों के पास न होते।

शिक्षा-(क) इस लाट ने विश्व-विद्यालय (युनिवर्सिटी) की स्कीम सरकार को भेजी प्रारम्भिक भाषाओं में कारबारी शिक्षा के देने के लिये १५,००० विद्यालय बनाए जिनकी संख्या बढ़ कर डेढ़ लाख से [illegible] है [illegible] जिनमें अब

बंगाल का लाट—(च) डलहौजी के समय तक भारत का लाट बंगाल का लाट भी होता था, नये २ प्रान्तों का शासन बड़े लाट के अधीन होने के कारण काम इतना बढ़ गया था कि दोनों पदों के काम एक पुरुष से नहीं हो सकते थे। १८५२ में बंगाल का एक छोटा लाट पृथक् नियत हुआ और बड़े लाट के पास सम्पूर्ण भारत की निगरानी करने का काम रह गया।

लार्ड कैनिङ् १८५६ से १८६२ तक

६७. आगमन—यह कैनिङ् आंगल देश के एक बादशाह जार्ज चतुर्थ के सुप्रसिद्ध महामन्त्री कैनिङ् का पुत्र था। इसे योग्य पिता का योग्य पुत्र कह सकते हैं क्योंकि बहुत नीतिज्ञ, दयालु, धीर, वीर था। जब यह इंग्लैण्ड से आने लगा तो इसने कहा था कि "मैं अपने समय में शान्ति चाहता हूं। यद्यपि भारतवर्ष के आकाश में किसी प्रकार के असन्तोष के बादल नहीं हैं तथापि सम्भव है कि एक बादल उठ खड़ा हो जो शनैः शनैः इतना बढ़ जावे कि हमको नष्ट कर सके"

इस वाक्य से स्पष्ट प्रतीत होता है कि इंग्लैण्डवासी पूर्व से ही भावी विद्रोह की प्रतीक्षा कर रहे थे। कैनिङ्ग के काल की ईरान तथा चीन की छोटी सी लड़ाइयां और भारत का महाविद्रोह प्रसिद्ध घटनाएं हैं।

६८. ईरानयुद्ध--ईरान के बादशाह ने अंग्रेजों से इस बात का बदला निकालना चाहा कि उन्हों ने १८४० में उसे हिरात फ़तह नहीं करने दिया था। तब से वह आंगलों का अपमान करता था। औटरैम के सेनापतित्व में कैनिङ्ग ने वहां एक सेना भेजी जिसने कई स्थानों पर ईरानियों को पराजित किया। तब हिरात और अफ़ग़ानिस्तान के साथ कुछ वास्ता न रखने का प्रण ईरानियों ने किया अत. युद्ध शीघ्र समाप्त हुआ।

६९. चीनीयुद्ध-चीन के महाराज ने भी आंग्लों का अपमान किया, अतः लार्ड एलगिन के साथ सेना भेजी गई जिसने चीन में बहुत विजय प्राप्त किए। तब चीन के महाराज ने सन्धि करके व्यापार के अभिलषित सर्वाधिकार योरुपीयों को [illegible]।

७०. महाविद्रोह के सर्वसाधारण कारण—

१—जब लार्ड डलहौज़ी भारत से गया तब सारी
जातियों में बहुत असन्तोष फैला हुआ था, क्योंकि
गवर्नमेन्ट ने प्रजा की इच्छा के विरुद्ध बहुत सी बातें
की थीं। स्थिर जातियों के लिए परिवर्तन अरुचि-
कारक होता है डलहौज़ी ने अपने आठ वर्षों के शासन
अधिक तथा घोर परिवर्तन किए। अतः प्रजा में
न्तोष फैलना आवश्यक ही था। अवध को अं
ी इलाके में मिलाने से अवध की प्रजा को [illegible]
गया था। भारतवासी डाकखाने, रेल, तार,
हस्पताल आदिकों को केवल हानि पहुंचाने
धन समझते थे। उनके विचार में रेल और
तों के काम थे उनका विश्वास था कि स्कूलों
से उनकी सन्तान ईसाई होजायगी या कम
तीय तौर पर हिन्दु न रहेगी।
अन्तिम पेशवा बाजीराव के दत्तक नाना
बाजीराव की पेन्शन् दी गई, इस पर
ठे ने क्रुद्ध होकर बदला [illegible]

३—मुग़ल बादशाह-बहादुर शाह को अपने परिवार सहित देहली के महलों से निकल जाने के लिए कहा गया था, इस पर प्रजा और भारतीय मुसलमान अप्रसन्न होगए थे।

४—लार्ड डलहौज़ी ने रजवाड़ों को अंग्रेज़ी इलाके में सम्मिलित करने का नया उपाय निकाला था। जब अवध जैसा समृद्ध पुराना राज्य रखने वाला देश मिलाया जा सकता था तो अन्य कौनसी रियासत अंग्रेज़ों के हाथ से छूट सकती थी?

५—उक्त चार राज्य सम्बन्धी कारणों के अतिरिक्त कुछ जातीय कारण भी सर्वसाधारण में असन्तोष उत्पन्न करने के लिये पर्याप्त थे। सती होने की रसम बन्द कर दी थी। विधवाविवाह को राजनियमानुसार कर दिया था, बहुस्त्री विवाह को रोका था। नरमेध और बलिदान की रीतियें बन्द करदी थीं।

६—प्रजा के मन में यह बात समा गई थी कि राज्य की ओर से हिन्दू और मुसल्मानों को किरानी बनाया जायगा।

७—मुसल्मान निम्न चार कारणों से अधिक

क्रोधित थे (i) उनके हाथों से देहली, अवध, करनाटक, बंगाल के राज्य छिन गये थे (ii) अब वे राज-कर्मचारी न बन सकने से भूखे मरते थे। (iii) राजकीय शिक्षा से शीघ्र शिक्षित नहीं हो सकते थे। हिन्दुगण

था। अतः उन्होंने ख़याल किया कि हम आंग्लों को निकाल सकते हैं। १८५७ में नई बन्दूकें सिपाहियों को दी गईं। उनके कारतूसों के प्रयोग में गौ और सूअर की चर्बी प्रयुक्त होती थी। इन दोनों पशुओं की चर्बी को हाथ लगाना दोनों हिन्दू और मुसलमान के लिये धर्मच्युत होना है। सारे देश में वनाग्नि समान यह कुसूचना फैल गई। सैनिक और उनके सम्बन्धी ईसाई बनने के विचार से भयभीत हो गये। पहिले भी किरानी बनाये जाने का ख्याल उनके मन में समाया हुआ था, अब अतः वे विद्रोह करने से अपने को रोक न सके।

महाविद्रोह की आग भड़क उठी।

१८५७ जनवरी में बैरकपुर की छावनी को बारक में आग लगाई गई। फ़रवरी में बरहामपुर के पैद सिपाहियों ने चर्बी वाले कारतूसों को लेने से इनका किया, जब वे समझाने से न समझे तो उन्हें सारे सिपाहियों के घेरे में बैरकपुर लाकर निःशस्त्र किए गया। मार्च में बैरकपुर के सिपाहियों ने ... उन्हें उनाल इर्स मे बलपूर्वक बन्द ...

चोरों ने विद्रोह किया, जेलख़ानों को तोड़ चोरों को छोड़ दिया, और फिर देहली की ओर बढ़े। नाना साहब धुन्धुपन्त ने बहुत से विद्रोहियों को अपने साथ मिला लिया-और कानपुर की आंग्ल सेना को घेर लिया। बचाव का कोई उपाय न देख कर आंग्लों ने अपने आपको इस शर्त पर उसके हवाले कर दिया कि उन्हें सही सलामत प्रयाग पहुंचा दिया जायगा। ४५० आंग्लों को किश्तियों पर चढ़ा दिया गया परन्तु जब वे मंझधार में पहुंचे तो नाना साहब के इशारे से गोलियां छोड़ी गईं, जिस पर केवल चार आंग्ल बचे। जो आंग्ल कानपुर या उस के आस पास मिले उन्हें कतल करके एक कूप में डाल दिया गया जो कूप अब तक प्रसिद्ध है। हैवलाक नामी जनरल इलाहाबाद में नगर की रक्षा कर रहा था, उसकी सहायता के लिये जनरल नील आया, दोनों ने मिल कर नाना साहब को कानपुर में परास्त किया। उधर देहली को पंजाब में एकत्रित सेना ने ८ जून से जा घेरा, उसकी विजय कठिन ही रही थी पर निकलसन ने कुछ सैनिकों के साथ दीवार पर चढ़ कर झण्डा गाड़ दिया, फिर तो बहुत से अंग्रेज़ शहर में

में कुछ जोश दिखाया गया पर औटरैम ने लखनऊ में तथा अन्य देश प्रान्तों में काम्बल ने यह जोश शान्त किया। अभी मध्यभारत के कुछ स्थानों पर जैसे कालपी, झांसी और ग्वालियर में विद्रोह था, अतः बम्बई से सरह्यू रोज़ सेना लेकर बढ़ा, कालपी और झांसी को जीत तान्तिया टोपी को हार दी।

ग्वालियर की सेना सहित जब तांतिया टोपी अंग्रेज़ों से लड़ रहा था तो महाराजा सिन्धिया अंग्रेज़ों के पास आगरा में भाग गया। ८ जून १८५८ में टोपी से ग्वालियर के अजित दुर्ग को जीत लिया गया। झांसी की रानी ने बड़ी वीरता से मर्दाना लिबास में अपने सैनिकों के साथ अंग्रेज़ों का सामना किया और उसी युद्ध में वह अमर हुई। तान्तिया टोपी भाग गया पर उसका सख्त पीछा किया गया, । सिन्दाम पकड़े जाने पर एप्रिल १८५९ में फांसी चढ़ाया गया। नाना साहब नेपाल में भाग गया और वहीं परलोक सिधारा। इस प्रकार विद्रोह शान्त हुआ, पर यह स्मरणीय है कि इसमें भारतीय प्रजा शामिल न हुई। असन्तुष्ट सेना या सिंहासन से उतारे हुए राजाओं या राजपुत्रों या उन सरदारों की तरफ़

...की वृद्धि

११-३२

घुस गए। विद्रोही कतल हुए या कुछ भाग निकले। बहादुर शाह हुमायूं के मकबरे में जा छिपा था-पर शीघ्र पकड़ा गया, उसके दो लड़कों को तोपों से उड़ा दिया गया और उसे क़ैद कर रङ्गून भेजा गया। देहली के विजय से विद्रोहियों का साहस टूट गया। अभी विद्रोहियों ने लखनऊ को घेरा हुआ था, पर सर हेनरी-लौरेन्स ने बड़ी वीरता से रैज़िडेन्सी residency को बचाया था, दुर्भाग्य से एक गोलेके फटने से सर हेनरी मारा गया, तब सम्भव था कि रैज़ीडेन्सी विद्रोहियों के हाथ में आती-पर हैवलौक, औटरैम और नील नामक तीन नायक सेनासहित लखनऊ के पास आ गये। जब यह भी शीघ्र कामयाब न हो सके तो इनकी सहायतार्थ-सर कौलन् काम्बल ... आया, तब विद्रोही लखनऊ से भाग गये। नाना ... के सेनानी तांतिया टोपी ने एक ओर आग ... हो थी कि दूसरी ओर भड़कादी। ग्वालियर ... सेना को बहका कर अपने अधीन कर लिया-गया ... के साथ वह कानपुर की ओर बढ़ा पर उपरोक्त ... ने उसे परास्त किया। सेना से प्रजा में भी ... फैलने लगा। लखनऊ, अवध तथा रुहेलखण्ड

...की भूमियां छीन ली गई थीं या लुटेरों, चोर, ... वृद्धि।

१५·७०

उचक्कों की तरफ से जो अशान्ति में अपना भला समझते हैं—यह विद्रोह किया गया।

राजे महाराजे तथा मध्यम दर्जे की प्रजा विद्रोहियों से न मिली, यह केवल सेना का ही विद्रोह था और वह भी केवल संयुक्तप्रान्त की पूजा नहीं उठी थी। अतः उसकी महिमा को बढ़ाना उचित नहीं। असन्तुष्टों के जोश का जो बुलबुला था शीघ्र बैठ गया,

राज्ञी का घोषणापत्र।

पहिली नवम्बर १८५८ के दिन भारत के बड़े ...रों में राज्ञी का घोषणापत्र पढ़ा गया जिस के ...नुसार (१) भारत का राज्य कम्पनी से राज्ञी ...हाथ में चला गया। (२) "देशी राजाओं का ..., प्रतिष्ठा और सम्मान को हम अपने स्वत्व, प्र... और सम्मान के बराबर समझेंगी। (३) ...पर भी उनके धर्मसम्बन्धी मत अथवा क्रिया ...किसी प्रकार का पक्षपात न होगा या कष्ट ...जायेगा, (४) हम ऐसी आज्ञा देती हैं ...ंच हो चाहे किसी भी जाति या धर्म की

हमारी प्रजाओं को उन की शिक्षा, बुद्धिमत्ता और प्रामाणिकता के कारण वे किसी पद का कार्य योग्य रीति पर सम्पादन करने के योग्य हैं। उन पर उन्हें किसी प्रकार के प्रतिबन्ध बिना और पक्षपात रहित हो कर नियत करना चाहिये। (५) इस समय हमारे अधीन जितने देश हैं उनका विस्तार करना हम नहीं चाहतीं। (६) भारतीयों की उन्नति में हमारा बल है, उन के सन्तोष में हमारी स्थिरता है और उनका आनन्द ही हमारा उत्तम बदला है"।

उक्त पत्र भारतीयों के लिये एक बहुमूल्य अधिकारपत्र और सुशासन का पट्टा है-इसी पर भारत के प्रबन्ध का आधार है-इसे 'भारतीय अधिकारों का महान् पत्र' कहा जाता है। कई एक संकुचित हृदय वाले अङ्गरेजों ने इसका मान कम करना चाहा है किन्तु लार्ड लिटन, लार्ड रिपन, लार्ड मार्ले, महाराज एडवर्ड सप्तम और राजराजेश्वर जार्ज पंचम ने बराबर इस अधिकारपत्र की शर्तों को प्रमाणित ठहराया है, अतः इस घोषणापत्र को कभी न भूलना चाहिये।

विद्रोह के राष्ट्रिक परिणाम।

१. कम्पनी के हाथ से राज्य लेकर पार्लियामेंट और इंगलैंड के राजा के अधीन कर दिया गया।

२. गवर्नर जनरल को ही राजा का प्रतिनिधि या वाइसराय बना दिया गया।

३. पार्लियामेंट और राजा की ओर से भारत-शासन का उत्तर दायित्व भारतसचिव तथा उसकी १५ सभ्यों की सभा पर रक्खा गया।

४. यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ा दी गई और देसियों की घटा दी गई।

५. भारतवर्ष के उच्च पदों पर नियत होने का अधिकार अंग्रेज़ों तथा भारतीयों दोनों को दिया गया और उन की योग्यता का प्रमाण करने के लिये इंगलैण्ड में एक परीक्षा रक्खी गयी।

६. यह नियत कर दिया गया कि भारत की आय का कुछ भाग भी भारतीय सीमा से बाहर युद्धों पर न लगाया जायगा, और वाइसराय कोई युद्ध

शुरू नहीं कर सकता जब तक पार्लियामैण्ट की स्वीकृति न लेवे।

कैनिंग प्रथम वाइसराय

लार्ड कैनिंग ने अपनी 'वाइसरायल्टी' में बहुत से विद्रोहियों को क्षमा देकर दयालु कैनिंग का नाम पाया। आगरा में १८५९ में उस ने एक दर्बार किया जिसमें उत्तर के राजों महाराजों को विद्रोह में वफादार होने के कारण पारितोषिक दिये।

४ क्रोड़ पाउण्ड विद्रोह को शान्त करने में व्यय हुए थे—राजकीय आय कम थी, अतः विलसन साहब को आय बढ़ाने के लिये बुलाया गया। बंगाल में रय्यतों को ज़िमींदार लोग बहुत सताते थे, अत्याचारों को बन्द करने के लिये १८५९ में ... ए। मद्रास, बाम्बे और कलकत्ता ... बनाए गए, अंग्रेजी राज्य की ... ाहियों की संख्या बहुत कम कर दी ... ों की बढ़ा दी गई=५: १ के स्थान

अध्याय १६।

आङ्गल राज्य की दृढ़ता।

लार्ड एलगिन-१८६२

१. जीवनी—यह महाशय कनाडा का बड़ा लाट रह चुका था और फिर चीन में प्रधान दूत के काम में कृतकृत्य हुआ था—इसे भारत में बड़ा लाट करके भेजा गया परन्तु दो मासों में ही उत्तर भारत की यात्रा में रोगी होकर इस असार संसार से चल बसा-धर्मशाला पहाड़ पर इसकी क़बर अबतक देखी जा सकती है। नये वाइसराय के आने तक मद्रास का लाट महालाट बना। इसी वर्ष अफ़ग़ानिस्तान का अमीर दोस्त महम्मद जो आङ्गलों का मित्र और सहायक था-मर गया, उसके एक पुत्र शेर अली ने अपने ज्येष्ठ भाई अफ़ज़ल ख़ान को क़ैद करके राज्य प्राप्त किया।

२. सर जानलॉरेंस की नियुक्ति के कारण (१) पश्चिमोत्तर सीमा के पहाड़ियों ने विद्रोह किया-यद्यपि

साधारण सेना से यह विद्रोह शान्त किया जा सकता था तथापि भय था कि अन्य पठान क़ौमें वहाबियों के साथ मिलकर भयानक परिणाम लावेंगी।

(२) इतने में भूटान देश के राजा ने आंगल इलाकों पर लूटमार की-राजा को इस कर्म के बुरे फलों को जिताने के लिये दूत गया किन्तु उसका बहुत अनादर हुआ—इस पर युद्ध होना आवश्यक था।

(३) उस समय भारतवर्ष में कुछ विद्रोही थे जिन्होंने वहाबियों को विद्रोह पर उत्तेजित किया हुआ था-इस कारण देश में अशान्ति देखकर पंजाब के रक्षक और भारतीय राज्य के ऊंच नीचों से अनुभवी सर जान लारैन्स को बड़ा लाट बना कर भेजा गया॥

३. सर जान लारैन्स, १८६४-६९

लारैन्स एक साधारणवंश में उत्पन्न हुआ था-उसका डिप्टी कमिश्नर से बड़े लाट की पदवी प्राप्त करने का दृष्टान्त विलक्षण है। साधारण कर्मचारी से पंजाब जैसे नवीन प्रान्त का शासन करने के लिए वह पहिला महा कमिश्नर बना। उस अवस्था में प्रसिद्ध

ाहिल आँगलों की हार हुई-तथापि फिर वे सुकृत-
ृत्य हुए-भूटानी राजने द्वार्स का इलाका भेंट किया
मोर लारैन्स ने उसे शान्ति तथा मित्रता रखने के
लिए कुछ वजीफ़ा (Subsidy) देना स्वीकार कर लिया
IV. अफ़ग़ानिस्तान में दोस्त मुहम्मद की मृत्यु पर
उसके पुत्र राजार्थ परस्पर लड़ते रहे-शेरअली ने
लारैन्स से सहायता मांगी-इसने हस्ताक्षेप करने से
इन्कार किया क्योंकि यह (masterly inactivity)·
यथायुक्त अकार्यता के पक्ष में था, अतः जब शेरअली
अमीर बन गया तो वह रूस की ओर अधिक झुका।

लार्ड मेयो १८६९-७२

४. साधारण जीविनी-आयरलैण्ड के अति पुराने और प्रसिद्ध अर्ल वंश में १८२२ में लार्ड मेयो उत्पन्न हुआ था-सुशिक्षा प्राप्त करके वह राष्ट्रकार्य्य में मग्न हुआ। २१ वर्षों तक १८४७-६८ पार्लियामेंट में रहा, तीन बार आयरलैण्ड का बड़ा हाकिम बना। अनुदार दल का प्रिय होते हुए वह भारत का बड़ा हाकिम बनाया गया। हृष्ट पुष्ट शरीर, नीति कुशल, उदार हृदय, प्रजा का हितैष्णु, कर्तव्य पालन करने

ग़दर को शांत करके 'भारतीय राज्य के रक्षक' का नाम पाया. इसी अन्तिम सेवा के बदले राज्य से बैरोनट की उपाधि मिली, आंगल देश की गुप्त सभा का सभासद हुआ; २००० पौंड वार्षिक पेंशन मिली, राज्य तथा विश्व विद्यालयों की ओर से कई उपाधियां भी दी गयीं। १८५९ से १८६४ तक वह इंगलैण्ड में रहा और आंगल इसे बहुत सम्मान से देखते रहे। आख़िर उसे बड़ा लाट बना दिया गया। यद्यपि वह बहुत पढ़ा लिखा न था, न विशेष बुद्धि वाला, न सुन्दर शरीर, न उच्च वंश, न उच्च पदों के मित्रों का गर्व कर सकता पर तथापि उस में मिलनसारी, दूरदर्शिता, सरलता, शुद्धाचार, अपूर्व धैर्य और साहस के गुण थे और इनके द्वारा ही वह ऐसे उच्च पद पर पहुंचा। लाहौर की अप्परमाल सड़क पर उसकी मूर्ति देखने से ये रहस्य स्पष्ट हो सकते हैं। (i) उसके समय में कोई विशेष घटना नहीं हुई, शान्ति पूर्वक प्रजा के हितार्थ उसने थोड़े से उपाय किये। (ii) पश्चिमीय सीमा के उद्दण्ड पहाड़ियों को दबाने के लिए दो बार सेना भेजी गयी (iii) भूटान में शान्ति पूर्वक निर्णय न होने पर युद्ध किया गया-पर्वतीय देश होने से यद्यपि पहिले

में यह लाट अद्वतीय था । मिलनसारी, शानोशौकत और आकर्षण करने वाली मोहिनी शक्ति में यह प्रसिद्ध था-उसे आदर्श महालाट कहना चाहिए। भारतवर्ष में किसान से लेकर राजे महाराजों तक सर्व प्रजा उसके उपकारों को मानती थी। भारत को इस ने संगठित किया और राज्य में उपयोगी संशोधन किए। परन्तु एक निर्दयी अफ़ग़ान ने उसे 'कालेपानी' के बड़े नगर 'पोर्ट बलेअर' में अवसर पा कर मार डाला (१८७२) जबकि यह दयालु लाट उन कैदियों की दशा सुधारने के लिए ही वहां द्वीप देखने गया हुआ था।

८. भारतीय रजवाड़े-आङ्गलों की नीति रजवाड़ों के साथ १८५७ से कुछ बदलने लगी थी क्योंकि विद्रोह में किसी राजा ने सिपाहियों को सहायता नहीं दी थी बल्कि सब आंगलों की सेवा करने पर तत्पर रहे थे। तब से ज्ञात होगया था कि राजे आँगलों के शत्रु नहीं, अतः उनकी रियासतें आंगल राज्य में नहीं मिलानी चाहिएं परन्तु वे तो रक्षामार्ग Safety valve हैं और साधारण प्रजा तथा आँगल महाराजा के मध्यस्तम्भों का काम देते हैं। १४ वर्षों के बीत

जाने पर भी राजाओं ने अनुभव नहीं किया था कि आंगल राज्य के साथ वे कुछ संगठित हैं परन्तु लार्ड मेयो ने यह विचार उनके हृदय पर अंकित कर दिया। उनको सदाचारी बनाने में महा लाट ने अपना बल लगाया-जो राजे भोगें में पड़ कर बुरा शासन करते थे जब वे समझाने से न समझे तो दोषियों को प्रबन्ध-कर्तृ सभा बना कर राजाओं को कुछ काल के लिए राज्य कार्य्य से पृथक् रखा। उस का यह मत था कि देसी रियासतोंको कभी आंगल राज्य में नहीं मिलाना चाहिए, साथ ही वह उन्हें सुशासित देखना चाहता था। सुशासित रजवाड़ों में कम हस्ताक्षेप और कुशासित रियासतों में अधिक हस्ताक्षेप परन्तु मिलाना किसी रियासत का भी नहीं-ये महा लाट के सिद्धांत थे। युवराजों को सुशिक्षित करने के लिए 'मेयो कालिज' अजमेर में बनाया गया जिसका अनुकरण करते हुए अन्य कई कालिज बने हैं।

६. भारतीय आय व्यय-मेयो ने देखा कि इसदेश का विजय करने, उसका शासन कार्य चलाने और उस में कुछ रेलें तथा सड़कें बनवाने में उस के समय तक १९.३ करोड़ रुपया उधार लिया जा चुका है,

कि बेचारे भारत निवासियों पर अधिक भार डालना उचित नहीं है कि आरम्भ के समय में जब कि कोई विशेष युद्ध न हुआ था, तब भी छः करोड़ रुपये का घाटा उधार लेकर पूरा किया गया था। यदि जातीय ऋण इस अनुपात से बढ़ने लगे तो उनकी गर्दनें टूट जावेंगी--अतः उस ने प्रान्तिक ठेके की विधि निकाली जिसे समझने के लिए उसके आने से पूर्व व्यय की दशा को जानना चाहिए।

सब प्रान्तों की आय भारतीय राज्य कोश में आ जाती थी, वर्ष के अन्त में नए वर्ष के लिए प्रत्येक प्रान्तिक राज्य अपने २ व्यय की सूची महा लाट के पास भेज देता था—उस की मांग की मात्रा को देख कर न कि उसकी वास्तविक आवश्यकता तथा अपनी शक्ति को जानकर व्यय का धन स्वीकार किया जाता था। क्योंकि प्रान्तिक लाट को यह चिन्ता न थी कि उसे स्वयम् व्यय के लिए आय निकालनी पड़ेगी, अतः प्रत्येक प्रान्तिक राजा जहाँ तक हो सकता अधिक व्यय-धन मांगता था। (ii) दूसरा, यदि कुछ राशि उस व्यय धन से बच जाती वह राजकोष में वापिस देनी पड़ती थी-मित व्ययता

से धन बचाने की आवश्यकता न थी-सम्पूर्ण स्वीकृत धन को वर्ष के अन्दर ख़र्च करने का यत्न रहता था । (iii) तीसरा, प्रान्तिक आय बढ़ाने में कोई उत्साह न था । यदि बढ़ जावे तब भी राज्य कोषमें जाती थी और उस का कुछ भाग भी प्रान्त को अधिक न मिलता था । उक्त दोषों को दूर करने का यत्न किया गया । प्रान्तों को पाँच वर्षों के लिए भौमिक लगान तथा अन्य करों का निश्चित भाग व्ययार्थ दिया गया-प्रान्तिक राज्य उस रक़म को यथेच्छा ख़र्च करें-इस से पूर्ण स्वतन्त्रता व्यय करने में दी गयी । चूंकि प्रान्तिक आय का बहुत सा भाग प्रान्तिक राज्य को मिलता था-इसलिए उसके बढ़ाने और उसके एकत्रित करने की सावधानी रखने में बड़ी उन्नति होती थी । व्यय स्वयम् थोड़ा करना था ताकि कुछ बचत होकर किसी कड़े समय में काम आवे ।

वस्तुतः इस विधि से बहुत लाभ हुआ-जहां बड़ा लाट तथा उसकी कौन्सल का कामकम हो गया और प्रान्तिक ईर्ष्या द्वेष नष्ट हो गए वहां आय व्यय बराबर नहीं बल्कि आय बढ़ गयी, यहां तक कि दो

और उनकी आर्थिक, धार्मिक, मानसिक, जातीय दशाएं कैसी हैं ? प्रथम जनगणना करा के मेयो ने राज्य कार्य को सुगम तथा भारतवासियों पर बड़ा उपकार किया।

७, जेलख़ानों की शोचनीय दशा को बहुत सुधारा।

८. म्यूनिसपल कमिटी—रीति को भारत में अधिक चलित कराना चाहता था, पञ्जाब में इन कमिटियों बनाने से उसे बड़ा हर्ष हुआ।

९. कृषि की उन्नति के लिये एक कृषि विभाग नाया—इस विभाग के द्वारा कृषकों को बताया जाता कि अन्य देशों में कृषि कैसे होती है- वे कैसे उत्तम या अधिक फसल पैदा कर सक्ते हैं। किन्तु अभी क प्रजा के हित के लिये इस विभाग में बड़े परि- र्तनों की ज़रूरत है। . . . में महारानी राज- . . . ड्यूक आफ एडनबरा . . . जिस प्रेम से सत्कार . . . य के लिये उदार भारत- . . . था। . . . १८७२ . . . पर . . . सुप्रसिद्ध

लार्ड नैपियर स्थानापन्न महा लाट रहा, इस के बाद इंगलैण्ड से लार्ड नार्थब्रुक महा लाट नियत होकर आया। इस के समय की चार बातें स्मरणीय हैं:—

[१] विहार का अकाल [२] आंगल राज्य कुमार का भारत में आना। [३] गायकवाड़ बड़ौदा को गद्दी से हटाना [४] रूस के साथ सम्बन्ध को दृढ़ करना।

I. १८७४ में वर्षा न होने के कारण अकाल पड़ा और ज्यों ज्यों समय बीतता गया अकाल घोर रूप धारण करता जाता था। लाट ने बहुत अच्छे प्रबन्ध द्वारा उस को दूर करने का यत्न किया। जिन ग़रीबों की खेतियां नहीं हुई थीं उनको तालाब, सड़कें, कूवें, और रेलें बनाने में लगा कर भोजन दिया। पन्द्रह लाख से अधिक मनुष्य इस प्रकार पलते थे। इन पर आठ करोड़ रुपया ख़र्च हुआ परन्तु ऐसा होते हुए भी लाखों नरनारी मरे।

II. १८७५ में आंगल राज कुमार जो फिर एडवर्ड सप्तम के नाम से राजराजेश्वर बने, भारतवर्ष में आये थे। जहां वे पधारे वहां वहां प्रजा अत्यन्त प्रसन्न हुई और राजे महाराजों ने उन का उचित सम्मान करने के लिये एक दूसरे से बढ़ कर मुक़ाबिला किया।

III. लार्ड मेयो ने यह नीति करदी थी कि देसी रजवाड़ों में अत्यन्त कुनीति तथा अत्याचार होने पर आंगल राज का हस्तक्षेप हो।

रजवाड़ों और आंगल राज्य में मेयो के समय अच्छे सम्बन्ध हो गये थे, परन्तु मलहार राव गायकवाड़ ने चिरकाल से अपनी रियासत को कुशासित किया था और आंगल रेज़ीडेंट के समझाने पर उसे विष खिलाने का यत्न किया। उस के आचरण- निरीक्षण के लिये जो न्यायालय स्थापित किया गया उसने राजा को राज्य करने के अयोग्य होने का फ़ैसला दिया। तब वह गद्दी से उतार दिया गया और उस के स्थान पर उस के वंश में से एक बालक गद्दी पर बिठाया गया।

मध्य एशिया में रूस दिन प्रति दिन बढ़ता जाता था और शेर अली अफ़ग़ानिस्तान के अमीर को आङ्गलों के विरुद्ध बहका रहा था। इङ्गलैंड और भारत वर्ष में रूस का भय अधिक बढ़ने लगा तब निर्हस्तक्षेप की नीति छोड़ दी गई, महालाट ने रूस पर दबाव डाल के अपने २ अधीन इलाकों की सीमाबन्दी करली।

सहायता सरकार ने की- रेलों और जहाज़ों द्वारा वहाँ अनाज पहुंचाया गया। यद्यपि दश करोड़ से अधिक रुपया राज्यकोष से ख़र्च किया तथापि पचास लाख से अधिक मनुष्य मरे।

अफ़ग़ानिस्तान की दूसरी लड़ाई- महाविद्रोह के पश्चात् बीस वर्षों तक भारतवर्ष में शान्ति रही थी, भूटान की छोटी सी लड़ाई के अतिरिक्त शान्ति भंग करने वाला कोई युद्ध न हुआ था। परन्तु १८७८ में अफ़ग़ानिस्तान का द्वितीय युद्ध आरम्भ हुआ। बलोचिस्तान के ख़ान की आज्ञा से अंग्रेज़ों ने कोइटा को अपनी छावनी बनाया। अफ़ग़ानिस्तान के अमीर शेर अली को भय हुआ कि अंगरेज़ कोइटे से उसके देश को जीतना चाहते हैं। पर उसका भय सर्वथा निर्मूल था, अफ़ग़ानिस्तान को आंग्ल अभी नहीं जीतना चाहते थे वरिक वे इसे स्वतन्त्र·बलिष्ट रियासत देखना चाहते थे, ताकि वह रूसियों को रोकने वाली हो।

II. अमीर ने भयभीत होकर रूसियों से सहायता मांगी, रूसी दूत का बड़ा आदर· किया और जब आंग्ल दूत अफ़ग़ानिस्तान में पहुंचा तो उसे

९. लार्ड लिटन १८७६ से १८८० तक

(१) इस लाट के समय राज्ञी विक्टोरिया राजराजेश्वरी बनी [२] दक्षिण में घोर अकाल पड़ा [३] अफ़ग़ानिस्तान की दूसरी और तीसरी युद्ध हुई ।

देहली दर्बार १८७७-बड़े समारोह से हुआ उसमें सारे भारतवर्ष के बड़े२ राज्याधिकारी, सरदार और राजे महाराजे सम्मिलित हुए । वहाँ प्रथम वार राज्ञी विक्टोरिया भारतवर्ष की महारानी विख्यात की गईं। यह पहिला ही अवसर था जब भारतवासी अपने आप को एक जाति अनुभव करने लगे और आँगल साम्राज्य का एक प्रधान भाग बन गये । भारतियों की वफ़ादारी बढ़ाने का यह महा साधन था ।

उत्तर में जब इस प्रकार आनन्द मनाया जा रहा था तो दक्षिण में अकाल भयानक रूप धारण करके प्रजा के हृदय को कम्पायमान और शोकग्रसित कर रहा था । दो वर्षों तक अनुकूल वृष्टि न होने के कारण लाखों मनुष्य भूखे मरने लगे । उचित प्रबन्ध करने के लिये लाट लिटन स्वयम् मद्रास गया । बेचारे भूखे मरते हुए दीन लोगों को थोड़ी बहुत

सहायता सरकार ने की- रेलों और जहाज़ों द्वारा यहाँ अनाज पहुंचाया गया। यद्यपि दश करोड़ से अधिक रुपया राज्यकोष से ख़र्च किया तथापि पचास —ख से अधिक मनुष्य मरे।

अफ़ग़ानिस्तान की दूसरी लड़ाई— महाविद्रोह पश्चात् बीस वर्षों तक भारतवर्ष में शान्ति रही ; भूटान की छोटी सी लड़ाई के अतिरिक्त शान्ति न करने वाला कोई युद्ध न हुआ था। परन्तु १८७८ अफ़ग़ानिस्तान का द्वितीय युद्ध आरम्भ हुआ। बेचिस्तान के ख़ान की आज्ञा से अंग्रेज़ों ने इटा के अपनी छावनी बनाया। अफ़ग़ानिस्तान अमीर शेर अली को भय हुआ कि अंगरेज़ क्वेटे से सके देश को जीतना चाहते हैं। पर उसका भय र्वथा निर्मूल था, अफ़ग़ानिस्तान को आंगल अभी हीं जीतना चाहते थे बल्कि वे इसे स्वतन्त्र बलिष्ठ त्यासत देखना चाहते थे, ताकि वह रूसियों को ोकने वाली हो।

II. अमीर ने भयभीत होकर रूसियों से सहा-ता माँगी, रूसी दूत का बड़ा आदर किया और ब आंगल दूत अफ़ग़ानिस्तान में पहुंचा तो उसे

९. लार्ड लिटन १८७६ से १८८० तक

(१) इस लाट के समय रानी विक्टोरिया राज-राजेश्वरी बनी [२] दक्षिण में घोर अकाल पड़ा [३] अफगानिस्तान की दूसरी और तीसरी युद्ध हुई।

देहली दर्बार १८७७-बड़े समारोह से हुआ उसमें सारे भारतवर्ष के बड़े२ राज्याधिकारी, सरदार और राजे महाराजे सम्मिलित हुए। वहाँ प्रथम वार रानी विक्टोरिया भारतवर्ष की महारानी विख्यात की गई। यह पहिला ही अवसर था जब भारतवासी अपने आप को एक जाति अनुभव करने लगे और आँगल साम्राज्य का एक प्रधान भाग बन गये। भारतियों की वफ़ादारी बढ़ाने का यह महा साधन था।

उत्तर में जब इस प्रकार आनन्द मनाया जा रहा था तो दक्षिण में अकाल भयानक रूप धारण करके प्रजा के हृदय को कम्पायमान और शोकग्रसित कर रहा था। दो वर्षों तक अनुकूल वृष्टि न होने के कारण लाखों मनुष्य भूखे मरने लगे। उचित प्रबन्ध करने के लिये लोर्ड लिटन स्वयम् मद्रास गया। बिचारे भूखे मरते हुए दीन लोगों को थोड़ी बहुत

सहायता सरकार ने की। रेलों और जहाज़ों द्वारा वहाँ अनाज पहुंचाया गया। यद्यपि दश करोड़ से अधिक रुपया राज्यकोष से ख़र्च किया तथापि पचास लाख से अधिक मनुष्य मरे।

अफ़ग़ानिस्तान की दूसरी लड़ाई– महाविद्रोह के पश्चात् बीस वर्षों तक भारतवर्ष में शान्ति रही थी, भूटान की छोटी सी लड़ाई के अतिरिक्त शान्ति भंग करने वाला कोई युद्ध न हुआ था। परन्तु १८७८ में अफ़ग़ानिस्तान का द्वितीय युद्ध आरम्भ हुआ। बलोचिस्तान के ख़ान की आज्ञा से अंग्रेज़ों ने कोइटा को अपनी छावनी बनाया। अफ़ग़ानिस्तान के अमीर शेर अली को भय हुआ कि अंगरेज़ कोइटे से उसके देश को जीतना चाहते हैं। पर उसका भय सर्वथा निर्मूल था, अफ़ग़ानिस्तान को आंगल अभी नहीं जीतना चाहते थे बल्कि वे उसे स्वतन्त्र बलिष्ट रियासत देखना चाहते थे, ताकि वह रूसियों को रोकने वाली हो।

II. अमीर ने भयभीत होकर रूसियों से सहायता मांगी, रूसी दूत का बड़ा आदर किया और जब आंगल दूत अफ़ग़ानिस्तान में पहुंचा तो उसे

आगे बढ़ने से रोक दिया । इस अपमान का दण्ड देने के लिये युद्ध उद्घोषित किया गया।

III. युद्ध—तीन ओर से आंगल सेना अफ़ग़ानिस्तान में बढ़ी । उसने जलालाबाद और कन्धार जीत लिये । फिर काबुल की ओर सेनायें बढ़ीं। रूस की सहायता न पाकर शेरअली बलख़ की ओर भाग गया और वहीं शोकातुर मरा । उसके पुत्र याक़ूबखाँ ने गण्डमक के स्थान पर मई १८८१ में सन्धि करली, उसे अफ़ग़ानिस्तान का अमीर इस शर्त पर बनाया गया कि एक आंगल रेज़ीडेन्ट को वह काबुल में रहने देगा । इस प्रकार दूसरा युद्ध समाप्त हुआ।

IV. अफ़ग़ानिस्तान का तीसरा युद्ध, कारण—काबुल में आंगल रेज़ीडेन्ट का रखना अफ़ग़ानों को अभीष्ट न था । प्रथम अफ़ग़ान युद्ध के अनुभव से ही लार्ड लिटन् को वहाँ कोई रेज़ीडेन्ट नहीं रखना चाहिये था । परन्तु रूसी प्रभाव को रोकने का अन्य साधन ज्ञात न था, इस लिये वहाँ रेज़ीडेन्ट नियत किया गया । उसके मारे जाने का जो भय था वह पूरा हुआ। कुछ उत्साही अफ़ग़ान सैनिकों ने रेज़ीडेन्सी घेर ली और दल समेत प्रत्येक मनुष्य

को वहां ही मार डाला। उसकी मृत्यु का बदला लेने के लिये तीसरा युद्ध किया गया। सेनापति रावर्टस् जिसे पीछे लार्ड की उपाधि मिली शीघ्र काबुल की ओर बढ़ा। उसके एक सहायक ने अफ़ग़ानों को अहमद खेल के घोर युद्ध में पराजित किया और फिर काबुल फ़तह कर लिया गया। याकूबख़ाँ गद्दी त्याग कर अंग्रेज़ों की पेन्शन पर लाहौर में रहने लगा। कुछ ही समय के पश्चात् याकूबख़ाँ के भाई-हिरात के हाकिम अयूबख़ाँ ने अंगरेज़ों की छोटी सी सेना को कन्धार के पास शिकस्त दी। सेनापति रावर्टस् काबुल से कन्धार की ओर बढ़ा और अयूब की सेना को पूर्ण रूप से पराजित किया। कहते हैं कि सारी उन्नीसवीं शताब्दी में ऐसी वीरता का युद्ध ऐशिया में और कहीं नहीं हुआ। इस विजय से विद्रोह शान्त हो गया। अब्दुर रहिमान् ख़ाँ को काबुल का बादशाह बनाया गया और मार्च १८८१ ई० बिना किसी रेज़ीडेंट को रखने के आंगलसेना वापिस लौट आई, फिर अब्दुर रहिमान् ने अफ़ग़ानिस्तान को सुशिक्षित किया और आंगलों का बड़ा मित्र बना रहा।

लार्ड रिपन १८८० से १८८५ तक

१८८० में अनुदार दल की पराजय होने से लार्ड लिटन् ने अपने दल के साथ लाट पद छोड़ दिया और उसके स्थान पर उदार दल की ओर से लार्ड रिपन महालाट होकर आया। यह भारतवासियों का सच्चा हितैषी था, अब तक राजा से प्रजा तक सब उसकी प्रशंसा और आदर करते हैं।

१०. लार्ड रिपन के कतिपय शुभ कार्य ये हैं:—

I. विलियम् वैन्टिङ्क ने जो मैसूर की रियासत आंगल इलाके में मिला ली थी, वह १८८१ में इस के हिन्दू राजवंश के एक बालक को दे दी गई।

II. देशी अखबारों की स्वतन्त्रता को रोकने वाले जो नियम बने थे उन्हें हटा दिया।

iii. माण्डलिक सभायें और म्युनिसिपल कमेटियां जहां नहीं थीं, वहां इसने बनवायीं और जहां पहिले पाई जाती थीं- उनके बहुत से अधिकार बढ़ा दिये। बड़े बड़े नगरों का प्रबन्ध प्रतिनिधियों के द्वारा भारतवासी स्वयं करने लगे और जो आय महसूलों से सरकार को होती है उसके खर्च

का अधिकार भी इन सभाओं को दिया। उक्त सभाओं को बहुत सी स्वतन्त्रता देकर लार्ड रिपन ने भारत-वासियों को स्वयं राज्य करने की विधि सिखलाई। इन नागरिक सभाओं ने हमारे पंचायती राज्य का स्थान लिया। पहिले पहल भारतवासी इन सभाओं के सभासद् होकर काम करने को तैयार नहीं थे क्योंकि यहां कोई वेतन नहीं मिलता था। धीरे धीरे वे इस कार्य्य को खूब करने लग गये हैं। इस महासंशोधन और मनुष्य के स्वाभाविक अधिकार को वापिस देने के लिये लार्ड रिपन धन्यवाद के योग्य हैं किन्तु अब तक ये कमेटियां अधिकतर राजकीय होने से बहुलाभकारी नहीं।

IV. लार्ड मेयो के पश्चात् भारतीय राज का कृषि विभाग तोड़ दिया गया था। आर्य्यावर्त्त कृषिप्रधान देश है—इस में कृषिविभाग की परम आवश्यकता है, ऐसा जान कर लार्ड रिपन ने उसे पुनः स्थापित कर दिया।

V. भारतवर्ष में कितनी शिक्षा प्रचलित है और वह कैसे उन्नत हो सकती है—इसके लिये एक, उप- की गई। उसके आदेशों के अनुसार

प्राइमरी शिक्षा का अधिक प्रचार किया गया, और विद्यालयों का प्रबन्ध म्युनिसिपल कमेटियों के अधीन कर दिया गया।

VI. बंगाल की प्रजा पर भूमिपतियों की ओ से अत्याचार बन्द नहीं हुये थे—इस महालाट कृषकों के हितार्थ नियम पास किये। इस कारण भी रिपन प्रजाप्रिय अधिक हो गया।

VII. भारतवर्ष में विदेश से आने वाले पदार्थों पर जो समुद्रतट पर कर [टैक्स] लिये जाते थे, उन्हें अपनी इच्छाविरुद्ध दूर कर दिया—इस से बाहर का माल अधिक आने लगा।

VIII मिश्रदेश को आंगलों के अधीन करने लिये भारतवर्ष से देशी सेना १८८२ में भेजी गई वीरता और स्वामिभक्ति से यह सेना लड़ी सारे संसार को ज्ञात हो गया कि भारतवासी नहीं हैं और अंग्रेजों के पास भारतवर्ष में अनेक मौजूद हैं किन्तु शोक है कि इस सेना का ीय भारत पर मुफ़्त में डाला गया।

महर्षि दयानन्द और आर्य्यसमाज।

दिवाली के दिन ३० अक्टूबर १८८३ को भारतीय 'लूथर' महर्षि दयानन्द का परलोकगमन हुआ—इस व्यक्ति ने भारत के इतिहास पर बड़ा प्रभाव डाला है, अतः इसका कुछ वर्णन आवश्यक है। गुजरात के मोरवी ग्राम में १८२४ ई० में इस महाव्यक्ति का जन्म हुआ। बाल्यावस्था में ही वैराग होने से यह घर से निकल गए—वनों, पर्वतों और नदियों के तटों पर योगियों तथा पण्डितों की तलाश में चिरकाल तक भ्रमण करते रहे-सहस्रों दुःखों को झेलते हुए अपना अभीष्ट ३६ वर्ष की आयु में पूरा करके ८१ वर्ष के वृद्ध स्वामी विरजानन्दजी के पास मथुरा में पुनः पढ़ने के लिए आये। तीन वर्षों में योगी दयानन्द ने बहुत सा विद्याध्ययन कर लिया और गुरु की आज्ञा से धर्मप्रचार में प्रवृत्त हुए। भारत के सैकड़ों नगरों और सहस्रों ग्रामों में भ्रमण करके भर भारो के धर्मामृत पिलाया, लोगों ने कई स्थानों पर उन्हें पत्थर मारे, तलवारों से प्राणघात करना चाहा और तीन बार गुप्तरूप विष दिये, पर महर्षि अपना जीवन परोपकार के अर्पण कर चुके थे, उन्होंने निर्भयता से भारत के अति

प्राचीन और ईश्वरोक्त वैदिक धर्म्म, नीति, रीति, भाषा और साहित्य का प्रचार किया और प्रचार के कामको दृढ़ करने के लिये कई स्थानों पर आर्य्य समाज बनाए। वह वेदविद्या में पारङ्गत, शान्ति, दया, दृढ़ता, सत्यता, संन्यास, देशहितैषिता, कर्तव्यपरायणता की मूर्ति थे। उनके काम पर अमेरिका के योगी डेविस ने यह लिखा है:—

यह आग सनातन आर्यधर्म्म को स्वाभाविक पवित्रदशा में लाने के लिये एक भट्टी में थी जिसे आर्य्यसमाज कहते हैं। यह आग भारतवर्ष के एक परमोपयोगी दयानन्द सरस्वती के हृदय में प्रकाशमान हुई थी। हिन्दू और मुसलमान जब प्रचण्ड अग्नि को बुझाने के लिये चारों ओर वेग से दौड़े, परन्तु यह आग ऐसे वेग से बढ़ती गई कि जिसका इसके प्रकाशक दयानन्द को ध्यान भी न था और ईसाइयों ने भी जिनके धर्म्म की आग और पवित्र दीपक पहिले पूर्व में ही प्रकाशित हुए थे, एशिया के इस नए प्रकाश के बुझाने में हिंदू और मुसलमानों का साथ दिया, परन्तु यह ईश्वरीय आग और भी भड़क उठी और सर्वत्र फैल गई। संपूर्ण दोषों पर

संपद नित्य की शुद्ध करने वाली भट्टी में जल कर भस्म हो जायगा, यहां तक कि रोग के स्थान में आरोग्यता, झूठे विश्वास की जगह तर्क, पाप के स्थान में पुण्य, अविद्या की जगह विज्ञान, द्वेष की जगह मित्रता, वैर की जगह समता, नरक के स्थान में स्वर्ग, दुःख के स्थान में सुख, भूत प्रेतों के स्थान में परमेश्वर और प्रकृति का राज्य हो जायगा। मैं इस अग्नि को माङ्गलिक समझता हूं। जब यह अग्नि सुन्दर पृथिवी को नवजीवन प्रदान करेगी तो सार्वत्रिक सुख, अभ्युदय और आनन्द का युग आरम्भ होगा।

परमात्मा करें कि महर्षि का काम पूर्ण हो, वैदिक धर्म का प्रचार संसार मात्र में होकर सर्वत्र सुख, अभ्युदय और आनन्द की वर्षा हो।

आर्[illegible]माज का मन्तव्य और कर्तव्य।

[illegible] चिदानन्द स्वरूप, निराकार सर्व[illegible]ायकारी, दयालु, अजन्मा, निर्वि[illegible]द, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्व[illegible]मर, अ[illegible] नित्य, पवित्र और [illegible] है-उसकी [illegible] करनी उचित है-मूर्ति[illegible], अवत[illegible], नदियों, निम भूतों [illegible] पूजा [illegible] करनी चाहिये।

अहिंसा और सदाचार ही परम धर्म है-मांस मदिरा पीना निकृष्ट से निकृष्ट होना पाप है । सब मादक पदार्थ हेय हैं । बहु स्त्री विवाह तथा अल्पायुविवाह समाज के नाशक हैं-ये कदापि न करने चाहियें ।

सर्वधर्मावलम्बियों को उदारचित्तता से आर्य बनाना चाहिये, किन्तु सा समुद्र पार जाने से धर्म नष्ट नहीं होता वरन देश देशांतर में सदाचार तथा राज्य की वृद्धि के लिये आर्यों को जाना चाहिये।

वेदान्ती होकर संसारत्याग करना पाप है-संसार में रह कर उसे सुखदायक बनाना चाहिये । आधुनिक तथा प्राचीन शैलियों पर शिक्षालय खोल कर मनुष्य मात्र को विद्वान् करना चाहिये । स्त्रियों के अधिकार पुरुषों के समान हैं वे शूद्रा नहीं-वे देवियां वेदाधिकारिणी और पूज्या हैं। सार्वभौम राज्य मनुष्य के लिये परम हितकर है और प्रत्येक देश में प्रजातन्त्र राज्य होना चाहिये ।

सर्व देशों की भाषा एक होनी चाहिये और संस्कृत देवभाषा को जीवित जाग्रत् करना चाहिये, इसके लिये प्रथम आर्य्यभाषा का प्रचार करना चाहिये । भारत के प्राचीन इतिहास की खोज

करके सब हिन्दुओं को पूर्वजों के कारनामों के संगठित करना चाहिये । किसी से द्वेष नहीं करना-सब को प्रेम से आर्य्य बनाना चाहिये-चण्डाल तक को आर्य्य जन बनने का अधिकार है।

सारांश यह कि आर्य्यसमाज मनुष्य मात्र को राष्ट्रिक, सामाजिक, धार्मिक, मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक तौर पर पूर्ण करने वाली एक संशोधक समाज है। वह असत्य का विध्वंस और सत्य का विजय चाहता है। भारतीयों को जाग्रत् करने में इसने बहुत काम किया है पर अभी सच्चे प्रचारकों की कमी से इसने यथोचित काम नहीं किया। इसके संचालक उच्च धार्मिक स्थिति को त्याग कर सांसारिक पुरुषों की भान्ति व्यवहार में लिप्त होने लगे हैं-अतः भय है कि आर्य्यसमाज का काम शीघ्र शिथिल हो जावेगा। दूसरी ओर यह भय निर्मूल है-आर्य्यसमाज एक ईश्वरोक्त धर्म का प्रचार करता है-ऐसे नित्य धर्म का लोप कैसे हो सकता है? फिर उसकी नींव महर्षि के रक्त से सींची हुई है--ऐसे आत्म-त्याग का फल सहस्त्रों वर्षों तक अमर रहेगा-इसे कोई मानुषी शक्ति क्षति नहीं पहुंचा सकती ।

२२. लार्ड डफरिन १८८४ से १८८८ तक इन के समय में ये स्मरणीय बातें हुई:—

१. अफ़गानिस्तान के अमीर के साथ मुलाकात करने के लिये रावलपिंडी में बड़े समारोह से दरबार किया गया.

(२) ब्रह्मा का तीसरा युद्ध १८८५ में—

ब्रह्मा के दूसरे युद्ध के पश्चात् ब्रह्मा के राजा ने जो सन्धि की थी- उस पर वह स्थिर न रहा था। (ii) उसके राज्य में अराजकता फैल रही थी, जहां तहां लुटेरे प्रजा को दुःख दे रहे थे। (iii) कुछ आंगल व्यापारियों को भी लूटा गया था, जिन को ब्रह्मा राज्य की ओर से कुछ बदला न मिला। (iv.) सरकार का जो दूत उन व्यापारियों के लिये कहने गया था, उसके साथ भी बुरा बर्ताव किया गया।

(v) यहाँ तक ही नहीं बल्कि तात्कालिक ब्रह्मा का राजा थेबो दक्षिण ब्रह्मा पर आक्रमण करना चाहता था—इस लिये युद्ध होना आवश्यक हुआ और थोड़ी सी आंगल सेना ब्रह्मा को फ़तह करने के लिये भेजी गई। प्रजा अथवा सेना की ओर से कोई

मुक़ाबिला नहीं हुआ। भागते हुए राजा को पकड़ कर प्रथम रङ्गून भेजा गया, फिर बम्बई प्रान्त के रत्नगिरी स्थान में पेन्शन देकर रखा गया। पहिले पहल अपर ब्रह्मा के डाकुओं को दबाने में बहुत मुश्किल पेश आई परन्तु लार्ड डफ़रिन स्वयम् ब्रह्मा में गया और पूर्णतया प्रबन्ध कर दिया। १८६२ ई. से दक्षिण ब्रह्मा में चीफ़ कमिश्नर रहता था किन्तु १८९७ई. से उत्तर और दक्षिण ब्रह्मा मिला कर लाट के अधीन कर दिये गये-दोनों की राजधानी रंगून है। भारतवर्ष के सब सूबों से ब्रह्मा रक़बे में बड़ा है, परन्तु इस की जनसंख्या एक करोड़ से भी कम है।

(३) महाविद्रोह के समय गवालियर के अधीश महाराजा सेन्धिया से सुप्रद्धि अजीत पहाड़ी दुर्ग अंग्रेज़ों ने ले लिया था। महालाट ने तात्कालिक महाराजा को सुशासन करते देख दुर्ग लौटा दिया और उसके बदले झांसी नगर ले लिया-महाराजा दुर्ग मिल जाने से अतिप्रसन्न हुआ।

[४] मध्य ऐशिया में अफ़ग़ानिस्तान तक सारा इलाक़ा रूस ने फ़तह कर लिया था और अब हिरात

उत्तम सेवाओं के लिये महाराणी ने उन्हें अर्ल की उपाधि दी।

(७) १८८५ में भारतवासियों के अधिकार की रक्षा के लिये 'इंडियन नैशनल कांग्रेस' का प्रथम अधिवेशन हुआ। इसमें सब प्रान्तों और जातियों के लोग मिलकर सरकार को राज्य-त्रुटियाँ हटाने की सामूहिक तौर पर प्रार्थना करते हैं। तब से भारतवर्ष में जातीय भाव बहुत बढ़ा है और बहुत से अधिकार सरकार की ओर से कांग्रेस की प्रार्थनाओं के द्वारा मिले हैं।

१२. लार्डलैन्स डाउन १८८८ से १८९३ तक—भारतवर्ष में सर्वथा शान्ति होने के कारण कम ख़र्चा और उन्नति की ओर ही ध्यान दिया गया। प्रसिद्ध घटनायें ये हैं—

(१) बड़े रजवाड़ों और सरकार के मध्य में सम्बन्ध अत्यन्त गूढ़ कर दिये।

पटयाला, नाभा, अलवर, उदयपुर, जोधपुर, जयपुर, काश्मीर, ग्वालियर, भूपाल, हैदराबाद और मैसूर की रियासतों में सफ़र करके परस्पर

ापार तथा व्यवसाय की वृद्धि के लिये भी
प्रकार के यत्न किये गये। १८११८४० एकड़ भूमि
सींचने के लिये लैन्सडाउन के समय में नहरें
ीं और ३९६९ मील तक नयी रेलें चलीं।

(५) अकाल के बन्द करने और अकाल पड़ने
प्रजा के पालन करने के लिये जो रीति थी उसे
धिक फलदायक बना दिया। प्रजा की स्वास्थ्य
ा के लिये भी कुछ साधन निकाले। इसी के समय
पहिले पहिल आगरा, लखनऊ, कानपुर, प्रयाग
र बनारस में पानी के नलके लगाये गये, जिससे
वत्र निर्मल जल लोगों को मिलता है। चेचक को
कने के लिये टीका लगाने का सुप्रबन्ध कर दिया
ौर ज्वर रोकने के लिये सस्ती कुनीन बटवाने
ा प्रबन्ध किया।

(६) बालक और बालिकाओं की शिक्षा बढ़ाने
ा भी बड़ा यत्न किया। ८०२२ प्राइमरी शिक्षणालय,
॥ विद्यालय, २१ कालेज, इस लाट के समय में
े। कन्यापाठशालाओं में भी अच्छी वृद्धि हुई।
१ कन्याओं ने इसके समय में बी० ए० और एक ने

मित्रता तथा विश्वास बढ़ाया गया। अंत में, से कई रियासतों ने अंग्रेज़ी राज्य की सहायता के लिये अपने ख़र्च पर अधिक सेना रखी जिसका नाम राज-सेवक सेना है।

(२) क्वेटा में दरबार किया जिसमें ख़ांकिलात और बलोचिस्तान के अन्य सरदारों को निमन्त्रित किया गया। वहां उन्हें अंग्रेज़ी राज्य के लाभ बता कर सभ्य होने की प्रेरणा की गई। आगरे में भी एक दरबार किया गया जिसमें राजपूताने के बहुत से राजे सम्मिलित हुए।

(३) १८९१ में मनुष्यगणना की गई। पहिली और दूसरी मनुष्यगणनाओं में जो दोष रह गये थे उन्हें दूर करने की कोशिश की गई, किन्तु अन्य देशों के मुक़ाबले में हमारी गणना रिपोर्टों में बड़ी कमियां हैं।

(४) कृषिविभाग के कार्य को बहुत अधिक बढ़ा दिया जिससे प्रजा को अधिक लाभ हो सका- कर एकत्रित करने और उसका हिसाब किताब रखने में देशी अधिकारी बहुत बढ़ा दिये। रेलों, नहरों,

व्यापार तथा व्यवसाय की वृद्धि के लिये भी कई प्रकार के यत्न किये गये। १८७७८५० एकड़ भूमि के सींचने के लिये सिंहासन के समय में नहरें बनीं और ३८६८ मील तक नयी रेलें चलीं।

(५) अकाल के बन्द करने और अकाल पड़ने पर प्रजा के पालन करने के लिये जो रीति थी उसे अधिक फलदायक बना दिया। प्रजा की स्वास्थ्य रक्षा के लिये भी कुछ साधन निकाले। इसी के समय में पहिले पहिल आगरा, लखनऊ, कानपुर, प्रयाग और बनारस में पानी के नलके लगाये गये, जिससे पवित्र निर्मल जल लोगों को मिलता है। चेचक को रोकने के लिये टीका लगाने का सुप्रबन्ध कर दिया और ज्वर रोकने के लिये सस्ती कुनीन बटवाने का प्रबन्ध किया।

(६ बालक और बालिकाओं की शिक्षा बढ़ाने
[illegible] ८३२२ प्राइमरी शिक्षालय,
[illegible] लाट के समय में
[illegible] भी अच्छी वृद्धि हुई।
[illegible] में बी॰ ए॰ और एक म

एम० ए० पास किया। शिल्पशिक्षा के प्रचार में भी यत्न हुआ। विश्वविद्यालयों में भारतवासी अधिक भाग लेवें—इस उद्देश्य से ग्रेजुएट्स को कतिपय फैलोज़ चुनने का अधिकार कलकत्ता, बम्बई और मद्रास में दिया गया।

(७) सारे देश में लैन्स डाउन के समय तक कोई महा पुस्तकालय नहीं था। इसने कलकत्ते की इम्पीरियल लाइब्रेरी (राजपुस्तकालय) बनायी जिसने आज तक बहुत उन्नति की है।

(८) गोरक्षणासभायें देश में बहुत सी इसके समय में बनीं और उन्होंने ऐसा ज़ोर पकड़ा कि सब हिन्दुओं को उत्तेजित करने वाली हो गईं। सरकार के पास गोवध बन्द करने के लिये एक वृहत प्रार्थना पत्र भेजा गया। मुसलमानों ने विरोध किया, बंगाल और युक्त प्रान्तों के कई स्थानों पर बलवे हुए और बम्बई में भयानक बलवा हुआ—तीन दिन रात तक मुसलमान और हिन्दू शहर में परस्पर लड़ते और लूटते रहे। इन बलवों को बलपूर्वक बन्द किया गया, प्रार्थना अस्वीकार की गई। इस तरह ओं का अभीष्ट पूर्ण ना

(९) भारतवर्ष में जो नियामक सभायें थीं—वे सरकार को केवल नियम बनाने में सहायता देती थीं। आय व्यय का व्यौरा उनके सामने नहीं आता था और यदि आता भी था तो समालोचना करने का अधिकार न था और नाहीं सरकार से प्रजा के हित के लिये प्रश्न पूछने की आज्ञा थी। उनके सभासद् राज्य की ओर से नियत किये जाते थे। इस लिये नियामक सभाओं में स्वतन्त्रता का भाव नहीं पाया जाता था। लार्ड लैन्स डाउन ने समालोचना करने तथा प्रश्न पूछने का अधिकार सभासदों को दिया। कई सभासदों के चुनने का अधिकार भी प्रजा को दिया गया।

(१०) चांदी बहुत सस्ती हो रही थी, इसके कारण राज्य की आय में बहुत घाटा था। व्यापारियों को विदेश से व्यापार करने में अधिक हानि थी और योरोपीय राजकर्मचारी तथा व्यापारियों को भी इसमें हानि हो रही थी, इस लिये १८९३ में टकसालें प्रजा के लिये बन्द करदी गईं और सोने ... सिक्का चलाने का [illegible]

(११) भारतवर्ष की पूर्वोत्तरसीमा पर मनिपुर की रियासत में एक शोकजनक घटना हुई कि वहां के राजा को हटा कर उसका कोई सम्बन्धी राजा बन बैठा था, आसाम का चीफ़ कमिश्नर कतिपय कर्मचारियों समेत नवीन राजा को समझाने गया, परन्तु वहां उसे राजा ने मार डाला । उसका बदला लेने के लिये मनिपुर को फ़तह किया गया, राजा को पकड़ कर काला पानी भेजा गया, पर इस इलाके को अंग्रेज़ इलाके में न मिलाया वरिक राजवंश के एक बालक को गद्दी पर बिठाया गया जिसने एक अङ्गरेज़ संरक्षक के द्वारा राज्य करना था ।

१३. लार्ड एलगिन १८९४ से १८९८ तक ।

यह उस लार्ड एलगिन का पुत्र था जो भारतवर्ष के महालाट १८६२ में रह चुके थे । इसके समय में भारतवर्ष में अधिक विक्षोभ रहा जैसा कि निम्न लिखित घटनाओं से विदित होगा ।

(१) प्रथम वर्ष ही सवा दो करोड़ रुपये आय से अधिक ख़र्च हुए । इस घाटे को पूर्ण करने के लिये विदेश से आने वाले पदार्थों पर लार्ड रिपन ने

जो टैक्स हटा दिये थे वह फिर पाँच प्रति शतक की दर से लगाये गये और उन पदार्थों में कपड़े भी शामिल थे। चांदी के सस्ता होने से जहाँ राजकीय आय में घाटा हुआ, वहां व्यापार में अत्यन्त शिथिलता और अस्थिरता आने लगी। पूर्व की अपेक्षा चांदी की कीमत केवल आधी रह गई। परन्तु १८९५ से रुपये का मूल्य कुछ बढ़ने लगा।

(२) इसके समयमें अकाल की कोई सीमा न रही। १८९५ में वर्षा के न होने से फ़सल कम हुई। १८९६ और ९७ में युक्तप्रान्त, विहार और मध्यभारत में बहुत भयानक अकाल पड़ा। ४७ लाख भारतवासियों को गवर्नमैन्टकी ओर से इन वर्षों में भोजन मिलतारहा।

(३) १८९६ में भारतवर्ष पर प्लेग रूपी भयंकर आपत्ति आई जिस को सैंकड़ों वर्षों तक भारतवासी नहीं भूल सकते। इस भयानक घातक रोग से अब तक भारत वर्ष का छुटकारा नहीं हुआ। बम्बई में प्लेग के पहिली बार आने पर (१८९६ में) नगरवासी नगर छोड़ गये और इस से व्यापार में बहुत हानि हुई। दो वर्ष बाद इस राक्षसी ने कलकत्ते पर आ-

क्रमण किया । इस प्रकार सारे देश में फैल गई । स-रकार ने प्लेग के नाश करने की कोशिश बम्बई में की थी—अज्ञानी लोगों ने उसे न समझ कर बलवे किये और समाचारपत्रों में उस के विरुद्ध लिखा । इस पर गवर्नमेन्ट ने बहुत दण्ड न दिया, जिस का परिणाम भारतवर्ष में प्लेग का फैल जाना हुआ ।

(४) अकाल और प्लेग के साथ ही पूर्वोत्तर भारत में भयंकर भूकम्प आया । यद्यपि उस में प्राणियों का नाश कम हुआ तथापि सहस्रों मकानों के गिरने और रेलों के टूटने से बहुत हानि हुई ।

(५) राज्य की आय पहिले ही थोड़ी थी, अब कतिपय युद्धों से खर्च और भी बढ़ गया था । चित्राल रियासत का अधिपति अंग्रेज़ों के पास था, चित्राल में रहने वाले आंगल एजन्ट को विद्रोहियों ने आ घेरा और जब आंगल सेना चित्राल में भेजी गयी तो विद्रोह और भी अधिक बढ़ गया । वज़ीरे, स्वाती, मुहम्मन्द लोग उठ खड़े हुये और मालाकन्द तथा च-कोतरे के अंग्रेज़ी इलाक़ों को आ घेरा ।

अंग्रेज़ों की ओर से बहुत बड़ी तयारी हुई, ४० हज़ार से भी अधिक सेना लेकर विलियम लाकहर्ट

इस विद्रोहिंर को शान्त करने के लिये गया। इसं
ड़ाई का नाम तिरह युद्ध है। इस में बहुत
तथा बहुत सा धन व्यर्थ गया। परन्तु विद्रोहिये
पूर्ण दण्ड मिल गया। तिरह युद्ध का कारण
यह था कि यूनानियें को तुर्कों ने जीता था।
पर सीमा प्रदेश के मुसलमानों ने समझा कि इस
ग्रेज़ों को भी देश से निकाल सकते हैं। का
और मौलवियें ने उकसाया—सारा सीमाप्रदेश
यार लेकर अंग्रेजों से लड़ने पर तैयार होगया
फरीदी फ़ौज को आंगरेज़ों की ओरसे सीमा के

ये और स्थान स्थान पर आक्र
नार के धावे करने लगे—इस लिये
ारण आवश्यकता हुई।
) लाई ुवं भारतवर्ष में व
महाक ् सेनायें थीं—प्रदेश
ाबेम ा। बहाल का महा
ाकी ं का सामसाच अधि
रव में दिक्त नहीं था। ह
उम ा के चार अ दिद
इ

बनाया गया किन्तु सारी सेना को एक महासेनापति के अधीन कर दिया गया।

(७) १८९७ में ब्रह्मा में चीफ़ कमिश्नर के स्थान पर 'लाट' शासक नियत किया गया और उस की सहायतार्थ एक नियामक सभा बना दी गई। उसी वर्ष पञ्जाब को भी नियामक सभा दी गई। जब देश अकाल, प्लेग, भूकम्प, विप्लव, और तिरह युद्धों से पीड़ित था, उस समय (१८९७) में राजराजेश्वरी विक्टोरिया के साठ वर्षों तक राज्य करने के हर्ष में डायामण्ड जुबली की गई। अपनी दयालु महारानी के लिये ऐसी अवस्था में जो परिमित हर्ष हो सका किया गया।

१४. लार्ड कर्ज़न १८९९ से १९०५ तक

भारत वर्ष का महालाट बनाते समय कर्ज़न महाशय को महारानी ने लार्ड की उपाधि दी। यह उस समय विदेशी विभाग का उपमन्त्री था। भारत वर्ष और एशिया के सम्बन्ध में इसे विशेष ज्ञान था। भारत की अवस्था जानने के लिये यह बारबार भ्रमण आचुका था। यह बहुत ही बुद्धिमान्, प्रबल वक्ता,

उत्साही नवयुवक था। इन गुणों के कारण ही इस ने पार्लियामेन्ट में बहुत उन्नति की। १८८६ में पहिले पहिल आंगल लोकसभा का सभ्य बना। १८९१–९२ में भारतवर्ष का उपमन्त्री रहा और उस सभा का प्रिय होने के कारण ही भारतवर्ष का महालाट नियत किया गया।

(२) भारत की बड़ी दीन अवस्था थी, दुष्काल और प्लेग ने उसे घेर रक्खा था। यहां तक कि १८९१ से १९०१ तक महाशय डिग्वी के कथनानुसार भारतवर्ष में अकाल तथा अकालजन्य रोगों से दिन और रात्रि के प्रत्येक मिनिट में दो आदमी मर जाते थे। १७९३ से १९०० तक संसार में जितने युद्ध हुए उन में पचास लाख मनुष्य मरे पर १८९१ से १९०० तक केवल भारत वर्ष में अकाल से ही एक करोड़ नब्बे लाख मनुष्य काल के कलेवा हुए। इसी प्रकार प्लेग से भी बहुत मनुष्य मरे। इन के अतिरिक्त यद्यपि तिराह और चित्राल की लड़ाइयां समाप्त हो चुकी थीं, तथापि भारतवर्ष की सीमा के बाहर बहुत सी अंग्रेजी सेनायें उपस्थित थीं। ऐसी अवस्थाओं में आये हुए लार्ड कर्ज़न ने राज्य के प्रत्येक मद की छानबीन की

और कई उत्तम कार्य्य किये। परन्तु स्वेच्छाचारी होने के कारण प्रजा का अप्रिय होगया।

१. सीमा प्रदेश में आंगल सेना थी, उसे शनैः शनैः हटा कर वहां के निवासियों को ही सेनामें रक्षार्थ रख दिया। इस विलक्षण विधि से आँगलों का अनावश्यक हस्ताक्षेप दूर हो गया और उन जातियों को भी स्वतन्त्रता मिल गयी। फिर सीमा पर बृहत्सेना नियत की गई ताकि वे जातियां विद्रोह न करें और भारत में हथियार और बारूद आदि न आसकें। इस नीति का फल यह हुआ कि लार्ड कर्ज़न के सात वर्षों में सीमा पर केवल १९०१ में ही महसूद वज़ीरियों ने विद्रोह किया।

२. पश्चिमोत्तर के सीमा प्रदेश को पूर्णतया काबू करने के लिये लार्ड कर्ज़न ने एक नवीन उपाय निकाला। इस लिये सिन्धु के पार के इलाके को पंजाब से पृथक् करके एक नया प्रांत बनाया गया जिस का नाम पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत रक्खा गया। तभी से नवीन प्रांत में अधिक उन्नति होने लगी और सीमा पर भी शांति रही।

१. तिब्बत के साथ लार्ड कर्जन ने जो सलूक किया उसे देख कर कर्जन को अन्यों के अधिकारों के लताड़ने वाला कहा गया है। १८८३ में तिब्बतराज ने सिक्कम पर हमला किया था। यह इलाका अंग्रेजों के आधिपत्य में होने के कारण अंग्रेजी सेना ने सिक्कम वालों को सहायता दी थी, तिब्बती हार गये और भारतीय प्रजा को तिब्बत में व्यापार करने के कुछ अधिकार मिले थे परन्तु इसके बाद उन प्रतिज्ञाओं को पूरा नहीं किया गया। तिब्बत चीन के आधिपत्य में था परन्तु दलाईलामा इस आधिपत्य से बचना चाहता था। उसने रूस के साथ पत्रव्यवहार १९०१ से किया। इस से अंग्रेजों को अवसर मिला कि वे तिब्बत के साथ बात चीत करें। दलाई लामा को जो पत्र लिखे गये उन्हें उसने बिना खोले वापिस कर दिया। एकबार फिर उस से बातचीत करने के लिये उसे प्रेरणा की गई, पर वह इस पर तय्यार न हुआ। तब १९०४ में कर्नल यङ्ग हस्बैण्ड के सेनापतित्व में सेना भेजी गई। चम्बी घाटी से गुजर कर तिब्बतियों को पराजित कर यङ्गसीजङ्ग स्थान को स्वाधीन किया और राजधानी ल्हासा तक सेना पहुंच गई।

इस वीरता से भयभीत हो कर दलाई लामा भाग गया । तिब्बत वालों ने अंग्रेजों के साथ सन्धि करली जिस में पांच हजार लाख रुपये का हर्जाना अंग्रेजों को दिया गया । दलाई लामा को राज्यगद्दी से उतार कर ताशीलामा को सिंहासनारूढ़ किया गया । (iii) पुंतग, गड़तोप और यगसी के नगरों में आंगल व्यापारियों को कोठियां खोलने की आज्ञा दी गई । IV- तिब्बतियों ने यह भी स्वीकार किया कि आंगलों की आज्ञा बिना अन्य किसी राज्य से पत्रव्यवहार नहीं करेंगे, इस प्रकार रूस के प्रभाव को तिब्बत से हटाया गया ।

४. १९०० में देशी सिपाहियों की सेना नेटाल में बूअर्ज़ के साथ लड़ने को भेजी गई जिसने अफ्रीका में बड़ी वीरता दिखाई । इस घटना से लार्ड कर्ज़न ने यह सिद्ध किया कि आंगल साम्राज्य का भारतवर्ष एक बड़ा उपयोगी भाग है ।

१९०१, २२ जनवरी के दिन दयालु और प्रजा की हितकारिणी विक्टोरिया महारानी इस संसार से चल बसी— सारे देश को बड़ा शोक हुआ । कई नगरों में

उस के स्मारक चिन्ह बनाये गये। कलकत्ते में एक वृहद् भवन की नींव रक्खी गयी। उसके उत्तराधिकारी शान्तिप्रचारक एडवर्ड सप्तम का राज्याभिषेक का दर्बार १९०३ में देहली में अत्यन्त समारोह से किया गया। उसमें राजराजेश्वर की ओर से जो शब्द भारत प्रजा के लिये कहे गये थे बहुत ही सन्तोषजनक थे।

जातीय उन्नति।

१. लार्ड कर्ज़न ने लवण-कर कम कर दिया।

२. कर लगने वाली आय की सीमा ५०० रु० से एक हज़ार कर दी। यद्यपि अकाल से पीड़ित भारतवासियों के पालन करने में बहुत सा रुपया ख़र्च किया और १३२००००० पाउण्ड कर भी छोड़ दिया तो भी लार्ड कर्ज़न के समय राज्य की आय छः सौ पचासी लाख पाउण्ड से आठ सौ तीन लाख पाउण्ड हो गयी और पहले पिछले पांच सालों में तीस लाख पाउण्ड की वार्षिक बचत हुई (३) इसने सोने के पाउण्ड देश में चलाये। (४) और रुपयों की टकसाल से जो बचत सरकार को होती थी उसका एक फण्ड बना दिया जिस में ८५०००००० पाउण्ड उसके जाते समय तक हो गये।

(५) कृषि की उन्नति के लिये इस वाइसराय ने बहुत कुछ यत्न किया। पंजाब कृषकों की भूमि साहुकारों के हाथों में आती जाती थी। भूमि सुगमता से रहन रखने से कृषकों की बहुत हानि हो रही थी। एक नियम बनाया गया जिस में भूमि का रहन रखना और बेंचना कठिन कर दिया गया।

(६) १९०४ में कृषकों को कम सूद पर रुपया देने के लिए कृषिबैंक खोले गये। जिन से देश को अनिर्वचनीय लाभ होने की आशा है *। (७) व्यापार और व्यवसाय की वृद्धि के लिये महालाट ने बङ्गाल की कोइले की खानें, ब्रह्मा के तेल के कुएँ, आसाम के चाय की खेतियां देखीं। (८) मजदूरों की रक्षा के लिये कुछ नियम बनाये। (९) सब से बढ़कर व्यापार और व्यापार का नया विभाग बना कर एक महामन्त्री नियत किया। (१०) देश की उन्नति के लिये बहुत सी उपसभायें बनायी गयीं। (११) कृषि और शिक्षा की उन्नति के लिये उपसभायें, प्लेग तथा दुष्काल के हटाने की उपसभाएँ, रेलों और नहरों की उन्नति की उपसभाएँ। (१२) विश्वविद्यालयों का प्रबन्ध

* देखो लेखक का अर्थशास्त्र अध्याय १०।

कर्ज़न के विचार में ठीक न था, उन में पुस्तकालय और पदार्थविद्याभवन न थे— इस कारण उन्हें प्रान्तिक सरकार के अधीन कर दिया और एक नया शिक्षाविभाग बनाकर उस का महामन्त्री म० बटलर को बनाया— इस नियम से प्रजा अति क्रुद्ध हुई क्योंकि शिक्षा कम गई है और निज जातीय पाठशाला बहुत कम हो गये हैं।

(१३) पुराने ऐतिहासिक भवनों की मरम्मत कराई और उन की रक्षा का पक्का प्रबन्ध कर दिया— यह बहुत उपयोगी कार्य्य था।

(१४) आङ्गल सेना की कार्य्यक्षमता, नवीन हथियारों के देने, अधिक आङ्गल अफसरों के रखने, तोपखाने की वृद्धि करने और पैरों में बिजली के लैम्प तथा पंखे लगवाने से बहुत बढ़ाई परन्तु [illegible]ारत में ऐसे अनुचित व्यय बढ़ाने के कारण [illegible] और भारतवर्ष दोनों में इस पर आक्षेप [illegible] गये।

(१५) भारतीय प्रबन्धकर्तृसभा का एक सभासद सेना का [illegible] ाट की ओर से (भारत

यहां भी पैदा हो गये— जिन्होंने स्वदेशी का
र और विदेशी माल के त्याग का दृढ़ प्रचार
। इन राजविरोधिनी घटनाओं को कहे
ां से महालाट ने दूर करना चाहा जैसे १९०७ में
लय में अपराध साबित करने के बिना ही ११
ो महाशयों को देश निकाला दे दिया गया।

वेश नियम बहुत कड़े बना दिये।
सभाएँ अधिकतर बन्द कर दीं।

गुप्तसभाओं और षड्यन्त्रों को बलपूर्वक दूर
किन्तु अब तक यही बातें देश में हो रही हैं।

इन दुर्घटनाओं के होते हुए भी मिन्टो–मार्ले ने
वन के काम छोड़ न दिये बल्कि—

(i) इंगलैण्ड में भारतसचिव की सभा में कई
वन किये। १९०७ में दो भारतीयों को उस सभा में
किया गया तब से आंग्ल राजनीति में यह
रिवर्त्तन है कि उच्च २ पदों पर भारतियों को
किया जा रहा है। फिर १९०८ में महालाट
ार्यकारिणी सभा में एक सभ्य भारतवासी ही
हुआ—अब तक म० सिंहा और सर अली-

म इस पदवी को सुशोभित कर चुके हैं। बंगाल,
ं, मद्रास और विहार की कार्य्य कारिणी सभाओं
ी एक मन्त्री देशी है।

(ii) सर्वोत्तम संशोधन यह था कि एक प्रान्त की
ामक सभा के सभ्यों की संख्या बढ़ा दी गई
इन में प्रजा की ओर से चुने हुए सभ्यों की
या सरकार से चुने हुए महाशयों से अधिक रखी
। भारत की विशेष अवस्था से बाधित होकर
लमानों को अपनी संख्या के अनुमान से अधिक
र भेजने का अधिकार दिया गया— अन्य किसी
में धर्म के आधार पर वोट नहीं दिये जाते--
देश में हिन्दु मुसलमानों के रिश्ते ऐसे खींचे
हैं कि राष्ट्र में भी वे एक नहीं हो सकते—
हिन्दु और मुसलमान पृथक् २ प्रतिनिधि चुनते
ौर मुसलमानों को यथोचित संख्या से अधिक
निधि भेजने का अधिकार है। इस दोष के हटने
हमारे प्रतिनिधियों के अधिक स्वतन्त्र होने पर
नियामक सभाओं से बहुत लाभ होगा।

१९०७ में अफ़ग़ानिस्तान का अमीर भारतवर्ष में
करने आया। हरजगह उसे 'बादशाह' पुकारकर